राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

गौरवशाली भारत

दिल्ली से प्रकाशित

R.N.I. NO. DELHIN/2011/38334 वर्ष: 11 अंक: 217 पृष्ठ : 08, नई दिल्ली, शुक्रवार, 18 फरवरी 2022 मूल्य: 1.50/-

खास ख़बर

गुपकर घोषणापत्र गठबंधन की बैठक श्रीनगर में 26 फरवरी को होगी

श्रीनगर। गुपकर घोषणापत्र गठबंधन (पीएजीडी) की बैठक 26 फरवरी को होगी जिसमें परिसीमन आयोग के मसौदा प्रस्ताव समेत जम्मू कश्मीर की मौजूदा स्थिति पर चर्चा की जाएगी।बीते हफ्ते पीडीपी प्रमुख महबूबा मुफ्ती ने कहा था कि पीएजीडी की बैठक 23 फरवरी को होगी। पांच दलों के गठबंधन के प्रवक्ता एमवाई तारिगामी ने यहां बृहस्पतिवार को कहा,' श्रीनगर में पीएजीडी की बैठक 26 फरवरी को होगी जिसमें जम्मू कश्मीर की मौजूदा स्थिति पर चर्चा की जाएगी। भाजपा को छोड़कर सभी मुख्यधारा की पार्टियों ने परिसीमन आयोग के मसौदा प्रस्ताव को यह कहते हुए खारिज कर दिया है कि आयोग ने कवायद के लिए खुद निर्धारित किए मानदंडों का पालन नहीं किया है।

कटरा क्षेत्र में 3.5 तीव्रता का भूकंप का झटका महसूस किया गया

जम्मू। जम्मू कश्मीर के कटरा क्षेत्र में बृहस्पतिवार तड़के भूकंप का हल्का झटका महसूस किया गया। इसका केंद्र कटरा में था। राष्ट्रीय भूकंप विज्ञान केंद्र ने बताया कि भूकंप की तीव्रता 3.5 थी और यह सुबह तीन बजकर दो मिनट पर आया। उसने कहा कि भूकंप पांच किलोमीटर की गहराई में था। अधिकारी ने बताया कि जान-माल के नुकसान की अबतक कोई खबर नहीं है।

झारखंड के पतरातू बांध में नौ प्रजातियों के 680 प्रवासी पक्षी देखे गए

रामगढ़। झारखंड के रामगढ़ जिले में लोकप्रिय पर्यटन स्थल पतरातू बांध में दुर्लभ और लुप्तप्राय प्रजातियों सहित नौ प्रजातियों के कुल 680 प्रवासी पक्षी देखे गए। उन्होंने कहा कि एशियाई जलीय पक्षी गणना, 2022 के तहत पक्षियों की गिनती की गई। यह गणना 12 फरवरी को समाप्त हुई। यह गणना अंतरराष्ट्रीय जलीय पक्षी गणना का हिस्सा थी और वन्यजीव संरक्षण सोसायटी के सहयोग से राज्य वन, पर्यावरण एवं वन्यजीव विभाग द्वारा आयोजित की गई थी।

जरा हट के... बग्गा

अपनी गलतियां स्वीकारने के बजाय नेहरू पर दोषारोपण कर रही है भाजपा सरकार

चंडीगढ़

पूर्व प्रधानमंत्री एवं कांग्रेस नेता मनमोहन सिंह ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार पर तीखा हमला करते हुए बृहस्पतिवार को कहा कि भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) पिछले सात साल से अधिक समय से सत्ता में हैं, लेकिन लोगों की समस्याओं के लिए वह अब भी देश को पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू को दोषी ठहरा रही है। सिंह ने किसान आंदोलन, विदेश नीति, महंगाई और बेरोजगारी समेत कई मामलों को लेकर केंद्र सरकार पर निशाना साधते हुए कहा कि कांग्रेस ने राजनीतिक लाभ के लिए कभी देश को नहीं बांटा या ना ही सच छिपाया।

पंजाब विधानसभा चुनाव के लिए 20 फरवरी को होने वाले मतदान से पहले सिंह ने पंजाबी भाषा में एक वीडियो संदेश में कहा, एक ओर देश महंगाई और बेरोजगारी की समस्या से जूझ रहा है, तो दूसरी ओर पिछले साढ़े सात साल से सत्ता पर काबिज मौजूदा सरकार अपनी गलतियां स्वीकार करने और सुधार करने के बजाय, लोगों की समस्याओं के लिए अब भी देश के पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू को दोषी ठहरा रही है। कांग्रेस ने यहां इस वीडियो संदेश को दिखाया। कुछ दिन पहले प्रधानमंत्री की सुरक्षा के नाम पर (पंजाब के) मुख्यमंत्री चरणजीत सिंह चन्नी और राज्य के लोगों को बदनाम करने की कोशिश की गई। उन्होंने कहा, किसान आंदोलन के दौरान भी पंजाब और पंजाबियत को बदनाम करने का प्रयास किया गया।

मनमोहन सिंह से ऐसी आशा नहीं थी : सीतारमण

अर्थव्यवस्था को लेकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की आलोचना करने पर पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह पर पलटवार करते हुए वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने कहा कि उन्हें भारत को सबसे कमजोर बनाने और देश में भीषण महंगाई के लिए याद किया जाता है। सीतारमण ने कहा, मैं आपका (मनमोहन) बहुत सम्मान करती हूं। मुझे आपसे यह आशा नहीं थी। उन्होंने यह जानना चाहा कि वह कहीं पंजाब विधानसभा चुनावों को ध्यान में रखते हुए तो ऐसा नहीं कर रहे हैं।

अब चन्नी के 'भइये' पर सियासत

पीएम मोदी ने किया पलटवार, प्रियंका ने किया चन्नी का बचाव

नई दिल्ली/ लुधियाना

पंजाब विधानसभा चुनाव से पहले सीएम चरणजीत सिंह चन्नी यूपी-बिहार के भइये वाले बयान पर घिर गए है। चन्नी अब विपक्ष के निशाने पर आ गए हैं। पीएम नरेंद्र मोदी ने भी इस टिप्पणी की निंदा की है। पीएम मोदी ने पंजाब के अबोहर में जनसभा को संबोधित करते हुए कहा है कि क्या सीएम चन्नी संत रविदास को भी निकाल देंगे? क्योंकि वह बनारस के थे। वहीं गुरु गोबिंद सिंह पटना के थे। सीएम के बयान के बाद राज्य के कई शहरों में धरने-प्रदर्शन तेज हो गए हैं। लुधियाना में पिछले दो दिन से पूर्वांचल समाज के लोग चन्नी के पुतले फूंक रहे हैं।

मंगलवार को रुपनगर में प्रियंका गांधी पार्टी प्रत्याशी के लिए प्रचार करने पहुंची थी। यहां रोड शो के दौरान प्रियंका की मौजूदगी में चन्नी ने कहा था कि 'ऐ जेहड़े यूपी दे, बिहार दे अते दिल्ली दे भइये आके इत्थे राज करना चांहदे ने, इत्थे वड़ण नहीं देणो'। चन्नी के इस बयान पर प्रियंका गांधी ने तालियां बजाई थी। इसी कारण वह भी विरोधियों के निशाने पर आ गई थी। हालांकि चरणजीत सिंह चन्नी ने कहा कि प्रवासियों से हमारा नाखून और मास का रिश्ता है। केजरीवाल और भाजपा वाले लोगों को गुमराह कर रहे है। मैंने जो बात अरविंद केजरीवाल और दुर्गेश पाठक को लेकर कही थी जिसे गलत ढंग से पेश किया गया है।

मोदी ने कहा कि इस तरह की विभाजनकारी सोच को एक पल के लिए भी पंजाब में राज करने का अधिकार नहीं है। यहां जो भी सरकार बने वह देश के लिए प्रतिबद्ध हो। जो लोग भारत को राष्ट्र ही नहीं मानते हम उनके भरोसे पंजाब नहीं सौंप सकते। कांग्रेस पंजाब को अस्थिरता की तरफ ले जाने का प्रयास कर रही है। जिनकी दिल्ली में सरकार है वह सिखों को डगर डगर पर अपमानित करते हैं। दिल्ली में एक भी सिख को मंत्री नहीं बनाया।

रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कहा कि पंजाब के सीएम चरणजीत सिंह चन्नी कहते हैं कि पंजाब में भइये नहीं आएंगे। उन्होंने पूछा कि क्या गुरुनानक देव जी ने यही संदश दिया था। कांग्रेस बांटकर सत्ता हासिल करना चाहती है।

बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने कहा कि चन्नी को इसकी कोई जानकारी नहीं है कि बिहार के लोगों ने पंजाब की कितनी सेवा की है। यह सब बकवास है। मैं चकित हूं कि लोग ऐसी चीजें कैसे कह सकते हैं। क्या उन्हें (चन्नी) यह पता नहीं है कि बिहार के कितने लोग वहां (पंजाब में) रहते हैं और उन्होंने उस क्षेत्र की कितनी सेवा की है।

चन्नी ने दी सफाई

मंगलवार को रूपनगर में प्रियंका गांधी पार्टी प्रत्याशी के लिए प्रचार करने पहुंची थी। यहां रोड शो के दौरान प्रियंका की मौजूदगी में चन्नी ने कहा था कि 'ऐ जेहड़े यूपी दे, बिहार दे अते दिल्ली दे भइये आके इत्थे राज करना चांहदे ने, इत्थे वड़ण नहीं देणो'। चन्नी के इस बयान पर प्रियंका गांधी ने तालियां बजाई थी। इसी कारण वह भी विरोधियों के निशाने पर आ गई थी। हालांकि चरणजीत सिंह चन्नी ने कहा कि प्रवासियों से हमारा नाखून और मास का रिश्ता है। केजरीवाल और भाजपा वाले लोगों को गुमराह कर रहे है। मैंने जो बात अरविंद केजरीवाल और दुर्गेश पाठक को लेकर कही थी जिसे गलत ढंग से पेश किया गया है। कुछ लोग जानबूझकर उनके बयान को तोड़-मरोड़कर पेश कर रहे हैं। जिसका गलत मतलब निकालकर गुमराह किया जा रहा है।

लखीमपुर हिंसा: आशीष मिश्रा की जमानत का मामला एससी पहुंचा

नई दिल्ली। उच्चतम न्यायालय में एक याचिका दायर करके केंद्रीय मंत्री अजय मिश्रा के बेटे आशीष मिश्रा की जमानत रद्द करने का अनुरोध किया गया है, जिसे लखीमपुर खीरी हिंसा के सिलसिले में गिरफ्तार किया गया था। उक्त घटना में चार किसानों सहित आठ लोगों की मौत हो गई थी। इलाहाबाद उच्च न्यायालय की लखनऊपीठ के गत 10 फरवरी के आदेश को रद्द करने के अनुरोध वाली एक पत्र अर्जी पर दर्ज स्वतः संज्ञान मामले में अधिवक्ताओं शिव कुमार त्रिपाठी और सी एस पांडा द्वारा एक प्रार्थनापत्र दाखिल किया गया है।

उन्होंने न्यायमूर्ति (सेवानिवृत्त) राकेश जैन के नेतृत्व वाले विशेष जांच दल (एसआईटी) और अभियोजन पक्ष और उत्तर प्रदेश पुलिस से यह सवाल करने का अनुरोध किया गया है कि चीजों में देरी क्यों की जा रही है। साथ ही इसमें यह भी निर्देश देने का अनुरोध किया गया है कि आरोपपत्र वाली रिपोर्ट की एक प्रति प्रस्तुत की जाए।अर्जी में कहा गया है कि जमानत आदेश में स्पष्ट त्रुटि है क्योंकि उच्च न्यायालय ने एक निष्कर्ष पर पहुंचने के लिए हो सकता है शब्द का उपयोग किया और कहा कि हो सकता है कि उक्त अपराध चालक द्वारा खुद को बचाने के लिए गति बढ़ाने के चलते हुआ हो। इसमें कहा गया है, उच्च न्यायालय के न्यायाधीश ने जो फैसला दिया है वह कानून के लिहाज से टिकाऊ नहीं है क्योंकि उन्होंने इस पर ठीक तरह से विचार नहीं किया और प्रत्यक्ष साक्ष्य के समर्थन के बिना हो सकता है का सहारा लिया। इलाहाबाद उच्च न्यायालय की लखनऊ पीठ ने गत 10 फरवरी को आशीष मिश्र को जमानत दे दी थी जो पिछले चार महीने से हिरासत में था। पिछले साल 3 अक्टूबर को, लखीमपुर खीरी में हिंसा के दौरान आठ लोगों की मौत हो गई थी। उक्त घटना उस समय हुई थी जब किसान उत्तर प्रदेश के उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य के इलाके के दौरे का विरोध कर रहे थे।

एबीजी शिपयार्ड के मामले पर प्रधानमंत्री और वित्त मंत्री चुप क्यों हैं: कांग्रेस

एजेंसी ■ नई दिल्ली

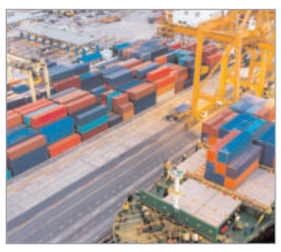

कांग्रेस ने बैंकों के 22,842 करोड़ रुपए से अधिक की कथित धोखाधड़ी मामले में एबीजी शिपयार्ड लिमिटेड के खिलाफ मामला दर्ज होने की पृष्टभूमि में बृहस्पतिवार को सरकार पर निशाना साधा और सवाल किया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी एवं वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण इस मामले पर चुप क्यों हैं। पार्टी प्रवक्ता गौरव वल्लभ ने संवाददाताओं से कहा, मोदी सरकार में 22,842 करोड़ रुपए की धोखाधड़ी बैंकों से की गई। पांच साल के बाद सीबीआई ने आखिरकार प्राथमिकी दर्ज की। उन्होंने दावा किया, एबीजी शिपायर्ड का मालिक ऋषि अग्रवाल हमेशा से वाइब्रेंट गुजरात सम्मेलन में बतौर निवेशक शामिल होता था और 2013 में गुजरात के तत्कालीन मुख्यमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ आधिकारिक शिष्टमंडल में दक्षिण कोरिया भी गया था। उन्होंने आरोप लगाया कि अदालत ने अग्रवाल से 13975 करोड़ रुपए वसूली किए जाने का आदेश दिया, लेकिन सरकार ने कोई कदम नहीं उठाया। उनके मुताबिक, इसके बाद 31 मार्च, 2016 को ऋषि अग्रवाल ने खुलासा किया था।

यूक्रेन: भारतीयों की निकासी की अभी कोई योजना नहीं

एजेंसी ■ नई दिल्ली

विदेश मंत्रालय ने बृहस्पतिवार को कहा कि भारत की यूक्रेन से अपने नागरिकों की निकासी की अभी कोई योजना नहीं है और उसका ध्यान नागरिकों की सुरक्षा सुनिश्चित करने पर है। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता अरिंदम बागची ने साप्ताहिक प्रेस वार्ता में कहा कि हम सतत राजनयिक प्रयासों के जरिए दीर्घकालिक शांति एवं स्थिरता के लिए स्थिति के शांतिपूर्ण समाधान के पक्षधर हैं।

उन्होंने कहा कि कीव में भारतीय दूतावास वहां भारतीय छात्रों के सम्पर्क में है और जमीनी स्थिति पर करीबी नजर रखे हुए हैं। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता ने कहा, हमारा पूरा ध्यान भारतीय नागरिकों, भारतीय छात्रों पर है तथा अन्य बातों को छोड़कर हमें इनकी सुरक्षा सुनिश्चित करने की जरूरत है।

विदेश मंत्रालय ने बृहस्पतिवार को कहा कि भारत की यूक्रेन से अपने नागरिकों की निकासी की अभी कोई योजना नहीं है और उसका ध्यान नागरिकों की सुरक्षा सुनिश्चित करने पर है।

उन्होंने कहा कि अभी वहां से निकासी की कोई योजना नहीं है और किसी विशेष उड़ान की व्यवस्था नहीं की गई है। यूक्रेन की सीमा पर स्थिति के बारे में एक सवाल के जवाब में उन्होंने कहा कि यूक्रेन-रूस सीमा पर वास्तव में क्या हो रहा है, इसके बारे में हम ठोस कुछ नहीं कह सकते और जहां तक स्थिति की गंभीरता का सवाल है, यह स्पष्ट है कि जब भी हम कोई परामर्श जारी करते हैं तो एक आकलन के बाद ही करते हैं। एक अन्य सवाल के जवाब में बागची ने कहा कि भारत और यूक्रेन के बीच एयर बबल व्यवस्था के तहत सीमित उड़ान हैं और उड़ान एवं यात्रियों की संख्या से संबंधित सीमाओं एवं रोक को हटा लिया गया है। उन्होंने कहा, भारतीय विमानवाहकों को भारत और यूक्रेन के बीच उड़ान के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है।

कर्नाटक: मंत्री के इस्तीफे की मांग पर अड़े कांग्रेस विधायक

एजेंसी ■ बेंगलुरु

कर्नाटक के ग्रामीण विकास एवं पंचायत राज मंत्री के. एस. ईश्वरप्पा को बर्खास्त करने और राष्ट्रीय ध्वज पर उनके बयान के लिए देशद्रोह का मामला दर्ज करने की मांग कर रहे कांग्रेस विधायकों ने बृहस्पतिवार को विधानसभा और विधान परिषद में रात गुजारी।

कांग्रेस सदस्यों द्वारा जारी विरोध दिन में दोनों सदनों में भी दिखा। कर्नाटक विधानसभा और विधानपरिषद में बृहस्पतिवार को लगातार दूसरे दिन हंगामा जारी रहा।सदन की कार्यवाही दिनभर के लिए स्थगित होने के बाद भी कांग्रेस सदस्य वहीं रुके रहे। विधानसभा अध्यक्ष विश्वेश्वर हेगड़े कागेरी और पूर्व मुख्यमंत्री येदियुरप्पा ने बाद में विधानसभा परिसर में नेता प्रतिपक्ष और कांग्रेस विधायक दल के नेता सिद्धारमैया से मुलाकात कर बातचीत की। इससे पहले, विधानसभा के बाहर पत्रकारों को संबोधित करते हुए, सिद्धारमैया ने भाजपा और संघ परिवार पर राष्ट्रीय ध्वज का अनादर करने का आरोप लगाया और कहा कि कांग्रेस ने इस मुद्दे को तार्किक अंत तक ले जाने के लिए रातभर विरोध प्रदर्शन करने का फैसला किया है। हालांकि ईश्वरप्पा ने कहा कि वह इस्तीफा नहीं देंगे। उनके किसी भी कारण से इस्तीफा देने का सवाल ही नहीं उठता।

शादी की रस्म के दौरान कुएं में गिरने से 13 लड़कियों-महिलाओं की मौत

■ कुशीनगर

उत्तर प्रदेश के कुशीनगर जिले के नेबुआ नौरंगिया क्षेत्र में शादी की रस्म के दौरान कुएं में गिरने से 13 लड़कियों एवं महिलाओं की मौत हो गई। पुलिस ने इसकी जानकारी दी।

राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने इस घटना पर दुख व्यक्त किया है।

कुशीनगर के जिलाधिकारी एस. राजलिंगम ने बृहस्पतिवार को बताया कि नेबुआ नौरंगिया थाना क्षेत्र के नौरंगिया टोला में बुधवार रात करीब 10 बजे परमेश्वर कुशवाहा नामक व्यक्ति के घर में शादी के लिए हल्दी की रस्म हो रही थी। उन्होंने बताया कि इसके तहत कुछ महिलाएं और लड़कियां कुएं के ऊपर लगी स्लैब पर बैठकर रस्म मटकोरबा अदा कर रही थीं। इस दौरान स्लैब टूट गया और उस पर बैठे सभी लोग कुए में जा गिरे। उन्होंने बताया कि इस घटना में कुल 13 लोगों की मौत हुई है, जिनकी पहचान पूजा (19), शशि कला (15), शकुंतला (35), ममता देवी (35), मीरा (25), पूजा (20), परी (एक), ज्योति (15), राधिका (16), सुंदरी (15), आरती (10), पप्पी (20) और मनु (18) शामिल है।

जिलाधिकारी ने बताया कि इस हादसे में करीब 10 अन्य लोग जख्मी भी हुए हैं जिन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया है। उन्होंने कहा कि मृतकों के परिजनों को चार-चार लाख रुपए की सहायता दी जाएगी।

व्यस्त बाजार में तृणमूल कांग्रेस नेता की चाकू घोंपकर हत्या

एजेंसी ■ कोलकाता

पश्चिम बंगाल में दक्षिण 24 परगना जिले के एक बाजार में बृहस्पतिवार की सुबह तृणमूल कांग्रेस के एक नेता की चाकू घोंपकर हत्या कर दी गई। इसके बाद स्थानीय लोगों ने हमलावरों को पकड़ लिया और उनमें से एक की जमकर पिटाई की जिससे उसकी मौत हो गई।पुलिस ने बताया कि नूर सलाम बेग (45) की कोलकाता से 30 किलोमीटर दूर सरिशा हाट इलाके में तीन व्यक्तियों ने चाकू घोंपकर हत्या कर दी। पुलिस ने बताया कि वारदात सुबह आठ बजे की है और उस वक्त बेग अपनी बाइक खड़ी कर रहे थे। पुलिस के अनुसार हत्या के बाद वहां मौजूद लोगों ने दो हमलावरों को पकड़ लिया और उनकी जमकर पिटाई की। उन्होंने बताया कि उनमें से एक की मौके पर ही मौत हो गई जबकि दूसरे को पुलिस ने बचा लिया।पुलिस ने बताया कि उसे डायमंड हार्बर अस्पताल में भर्ती कराया गया है और होश में आने के बाद उससे पूछताछ की जाएगी। बेग के परिवार ने आरोप लगाया कि भूमि विवाद के चलते उनकी हत्या की गई है, लेकिन तृणमूल कांग्रेस के स्थानीय नेताओं ने दावा किया कि हमले के पीछे भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) का हाथ है क्योंकि वह एक प्रभावशाली नेता थे।

कोलकाता निकाय चुनाव

बागियों को तृणमूल की चेतावनी, 48 घंटे में उम्मीदवारी वापस लें या निष्कासन

■ कोलकाता

तृणमूल कांग्रेस ने बृहस्पतिवार को अपने बागी नेताओं को 48 घंटे के भीतर उम्मीदवारी वापस न लेने पर निष्कासन का सामना करने की चेतावनी दी। इन नेताओं ने निकाय चुनाव का टिकट नहीं मिलने पर निर्दलीय उम्मीदवार के रूप में पर्चा दाखिल किया है। पश्चिम बंगाल के 108 नगर निकायों में 27 फरवरी को मतदान होना है। झाड़ग्राम में संवाददाताओं से बातचीत में तृणमूल महासचिव पार्थ चटर्जी ने कहा, हमारे बार-बार याद दिलाने के बावजूद जिलों में हमारी पार्टी के कुछ नेताओं ने नगर निकाय चुनावों में अपना नामांकन वापस नहीं लिया है। वे अपने इलाकों में वोट मांग रहे हैं। लोगों की महत्वाकांक्षाएं हो सकती हैं, लेकिन पार्टी के अनुशासन की कीमत पर नहीं। चटर्जी ने कहा, हम ऐसे नेताओं को 48 घंटे के भीतर चुनावी दौड़ से हटने की घोषणा करने का अल्टीमेटम दे रहे हैं। ऐसा नहीं करने पर उन्हें संबंधित जिला समितियों से निष्कासित कर दिया जाएगा।

पार्टी सूत्रों ने बताया कि तृणमूल कुछ जिलों में कुछ नेताओं के खिलाफ पहले ही निलंबन और निष्कासन की कार्वाई कर चुकी है।सप्ताह की शुरुआत में वरिष्ठ तृणमूल नेता फिरहाद हकीम ने भी ऐसा ही बयान जारी कर निर्दलीय के रूप में नामांकन दाखिल करने वाले नेताओं से चुनाव मैदान से हटने का आग्रह किया था।दूसरी ओर, उम्मीदवारों ने दावा किया है कि प्रत्याशियों की आधिकारिक सूची में जगह बनाने में नाकाम रहने के बाद लोग उनसे निर्दलीय के रूप में नामांकन दाखिल करने के लिए कह रहे थे और जनता की भावनाओं को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है।

इंग्लिश बाजार, ओल्ड माल्दा, बेलुरघाट, कूचबिहार, बर्दवान, बारासात, सोनारपुर-राजपुर, बोंगांव और खरदा नगर पालिकाओं में तृणमूल के कुछ बागी उम्मीदवार चुनाव लड़ रहे हैं।बीते साल दिसंबर में पश्चिम बंगाल में सत्तारूढ़ तृणमूल कांग्रेस ने 144 सदस्यीय कोलकाता नगर निगम की 132 सीटों पर जीत दर्ज कर लगातार तीसरी बार उस पर कब्जा जमाया था।

पार्टी ने बिधाननगर, सिलीगुड़ी, चंद्रनगर और आसनसोल नगर पालिकाओं के चुनावों में क्लीन स्वीप भी किया था।

हिजाब विवाद केवल आठ शिक्षण संस्थानों तक सीमित : कर्नाटक सरकार

■ बेंगलुरु

कर्नाटक सरकार ने बृहस्पतिवार को कहा कि हिजाब विवाद राज्य के कुल 75,000 संस्थानों में से केवल आठ हाई स्कूलों और प्री-यूनिवर्सिटी कॉलेजों में है। इसके साथ ही सरकार ने इस मुद्दे के समाधान का भरोसा जताया। उच्च न्यायालय ने हिजाब विवाद को लेकर दाखिल याचिकाओं के लंबित रहने तक के लिए पिछले हफ्ते अंतरिम आदेश जारी किया था और विद्यार्थियों के भगवा गमछा, हिजाब या किसी तरह का धार्मिक निशान कक्षा में ले जाने पर रोक लगा दी थी।बहरहाल, यह विवाद थमने का नाम नहीं ले रहा है क्योंकि कुछ छात्राएं बृहस्पतिवार को हिजाब और बुर्का के साथ कक्षाओं में जाने की अनुमति दिए जाने की मांग पर अड़ी रहीं। कर्नाटक के प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा मंत्री बी. सी. नागेश ने यहां संवाददाताओं से कहा कि यहसमस्यौ केवल कुछ हाई स्कूल और प्री-यूनिवर्सिटी कॉलेज तक ही सीमित है। उन्होंने कहा,'75,000 स्कूल एवं कॉलेज में से आठ कॉलेज में समस्या कायम है। हम इसका समाधान करेंगे। हमें खुशी है कि सभी विद्यार्थियों ने हमारे आदेश का पालन किया है।बल्लारी में सरला देवी कॉलेज में तनाव पैदा हो गया जब अभिभावकों और विद्यार्थियों ने संस्थान के सामने धरना प्रदर्शन किया।

जर्मन शब्दकोश ने 'यहूदी' की परिभाषा में बदलाव किया

बर्लिन। जर्मनी के प्रमुख मानक शब्दकोश ने जर्मन भाषा में % जू (यहूदी) या जूड की परिभाषा में बदलाव किया है। इससे पहले शब्दकोश ने इसे अद्यतन किया था जिस पर देश के यहूदी समुदाय ने कड़ी आपत्ति जताई थी। यह कदम बड़ी संख्या में यहूदियों के कत्लेआम करने के आठ दशक बाद भी मुद्दे से संबंधित संवेदनशीलता को दर्शाता है।

ड्यूडन शब्दकोश ने हाल में अपने ऑनलाइन संस्करण में स्पष्टीकरण जोड़ा था जिसमें कहा गया था, नेशनल सोशलिस्ट की ओर से उपयोग की जाने वाली भाषा की वजह से जू (यहूदी) शब्द को कभी कभी भेदभावकारी माना जाता है। इन मामलों में, यहूदी लोग, यहूदी सह नागरिक या यहूदी अस्था के लोग जैसे निरूपण आमतौर पर चुने जाते हैं।÷

इस स्पष्टीकरण से देश के यहूदी समूहों और व्यक्तियों ने आपत्ति जताई थी और जोर दिया था कि यहूदी के तौर पर पहचान बताना या यहूदी कहा जाना उनके लिए भेदभावकारी नहीं है, जो ड्यूडेन की परिभाषा के विपरीत है। जर्मनी में सेंट्रल काउंसिल ऑफ जूइस के प्रमुख जोसेफ एस. ने पिछले हफ्ते कहा था कि जू या यहूदी शब्द उनके लिए भेदभावकारी नहीं है।

कोविड-19 से बढ़ सकता है मानसिक स्वास्थ्य की समस्याओं का खतरा: अध्ययन

वाशिंगटन। अमेरिका में हुए एक अध्ययन में दावा किया गया है कि कोरोना वायरस से संक्रमित होने के एक साल बाद तक घबराहट, अवसाद और सोने में दिक्कत जैसी मानसिक समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है।

''दि बीएमजे'' में बुधवार को प्रकाशित अध्ययन में कहा गया कि कोविड-19 से पीड़ित होकर ठीक हो चुके लोगों को मानसिक स्वास्थ्य को प्राथमिकता देनी चाहिए। महामारी की शुरुआत से लेकर अब तक दुनिया में 40 करोड़ 30 लाख और अमेरिका में सात करोड़ 70 लाख से अधिक लोग संक्रमित हो चुके हैं।

अध्ययन के वरिष्ठ लेखक, वाशिंगटन विश्वविद्यालय के जियाद अल अली ने आंकड़ों का हवाला देते हुए कहा, ÷कोविड-19 संक्रमण ने दुनिया में मानसिक स्वास्थ्य से जुड़ी समस्याओं के 1,48,00,000 नए मामले पैदा किये और महामारी के कारण अमेरिका में ऐसे 28 लाख से ज्यादा मामले सामने आए।

अनुसंधानकर्ताओं ने अमेरिका के पूर्व सैनिक कल्याण मंत्रालय के राष्ट्रीय स्वास्थ्य डेटाबेस के आंकड़ों का इस्तेमाल किया और मार्च 2020 और जनवरी 2021 के बीच पीसीआर जांच में संक्रमित पाए जाने के कम से कम 30 दिन बाद लोगों में मानसिक स्वास्थ्य के खतरे का अनुमान लगाया।

साउथ कोरियाई तटीय काउंटी में जंगल की आग से जूझ रहे अग्निशामक दल के लोग

सियोल। दक्षिण कोरिया के तटीय काउंटी योंगदेओक में गुरुवार को जंगल की आग बुझाने के लिए लगभग 40 अग्निशमन हेलीकॉप्टरों और 1,100 से अधिक कर्मियों ने अभियान फिर से शुरू कर दिया क्योंकि आग पर लगातार दूसरे दिन भी काबू नहीं पाया जा सका है।

योनहाप समाचार एजेंसी की रिपोर्ट के अनुसार, मंगलवार को सियोल से लगभग 350 किलोमीटर दक्षिण-पूर्व में योंगदेओक में एक पहाड़ पर आग लग गई थी।

अग्निशामकों और स्थानीय अधिकारियों के अनुसार, इसे बुझा दिया गया था, लेकिन रात में यह फिर भड़क गई और पिछले दिन आस-पास के रिहायशी इलाकों में फैल गई।

माना जाता है कि आग ने 100 हेक्टेयर से अधिक भूमि को क्षतिग्रस्त कर दिया, जिससे आस-पास के गांवों में 1,000 निवासियों को निकालने के लिए मजबूर होना पड़ा। किसी के हताहत होने की सूचना नहीं है।

यूक्रेन सीमा से सेना हटाने का रूस का दावा गलत : अमेरिका

वाशिंगटन। अमेरिका का कहना है कि रूस का यह दावा गलत है कि वह यूक्रेन सीमा ने अपनी सेना को हटा रहा है। अमेरिका का कहना है कि वहां गत कुछ दिनों में 7,000 सैनिक और पहुंचे हैं। बीबीसी की रिपोर्ट के मुताबिक एक वरिष्ठ अमेरिकी अधिकारी ने कहा है कि रूस किसी भी समय गलत बहाने से यूक्रेन पर हमला कर सकता है। रूस ने यह कहा है कि वह सैन्य अभ्यास पूरा होने के बाद यूक्रेन की सीमा से अपने सैनिकों को वापस बुला रहा है लेकिन अमेरिका का कहना है कि रूस के इस दावे का कोई सबूत नहीं है।

अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडेन और जर्मनी के चांसलर ओलेफ शोल्ज ने बुधवार को फोन पर बात की और इस बात पर राजी हुए कि रूस को सच में सेना हटानी चाहिए।

रूस के रक्षा मंत्रालय ने कुछ तस्वीरें जारी की थीं, जिनमें सेना और उपकरणों को सैन्य अभ्यास के बाद स्थायी सैन्य अड्डे की ओर वापस लौटते देखा जा सकता था। रूस ने बार बार इस बात से इनकार किया है कि वह यूक्रेन पर हमला करना चाहता है जबकि वहां की सीमा पर उसके एक लाख से भी अधिक सैनिक जुटे हुए हैं।

रूस के इस दावे के बावजूद अमेरिका का कहना है कि यूक्रेन की सीमा पर लगातार सैनिकों का जमावड़ा बढ़ रहा है और कई सैनिक तो बुधवार को भी वहां पहुंचे हैं।

दो तिहाई अमेरिकियों का कहना है कि अमेरिका गलत दिशा में आगे बढ़ रहा है: सर्वेक्षण

वॉशिंगटन । दो-तिहाई अमेरिकियों का कहना है कि अमेरिका गलत रास्ते पर है। यह जानकारी एक नए सर्वेक्षण से पता चली है।

समाचार एजेंसी सिन्हुआ की रिपोर्ट के अनुसार, बुधवार को प्रकाशित एक नए पोलिटिको-मॉर्निंग कंसल्ट सर्वेक्षण में केवल 34 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि देश सही दिशा में जा रहा है।

तैंतालीस प्रतिशत अमेरिकियों का कहना है कि वे अमेरिकी राष्ट्रपति के रूप में जो बाइडेन को दृढ़ता से स्वीकार या कुछ हद तक स्वीकृत करते हैं, जबकि लगभग 53 प्रतिशत ने नोट किया कि वे इसे कुछ हद तक अस्वीकार करते हैं।

केवल 39 प्रतिशत अमेरिकियों का कहना है कि वे कोविड -19 महामारी से निपटने के लिए बाइडेन को मंजूरी देते हैं, जबकि 41 प्रतिशत इसे खराब रेटिंग देते हैं, 16 प्रतिशत ने इसे उचित कहा।

देश में राज्यों की बढ़ती संख्या, जिन्होंने दुनिया के सबसे अधिक कोरोनावायरस संक्रमण और मौतों की सूचना दी है, ने ओमाइक्रोन वेरिएंट द्वारा संचालित वृद्धि के बाद दैनिक नए मामलों में गिरावट के बीच कोविड -19 प्रतिबंधों में ढील दी है।

सेंटर फॉर डिजीज कंट्रोल एंड प्रिवेंशन के निदेशक रोशेल वालेंस्की ने बुधवार को एक वर्चुअल ब्रीफिंग में कहा कि ओमाइक्रोन के मामले घट रहे हैं, और हम जिस प्रक्षेपवक्र पर हैं, उसके बारे में हम सभी आशावादी हैं।

हम वह सब करने के लिए सतर्क रहना चाहते हैं जो हम कर सकते हैं ताकि यह प्रक्षेपवक्र जारी रहे।

अफगान लड़कियों को निश्चित रूप से वापस से स्कूल जाना शुरु करना चाहिए : करजई

काबुल। अफगानिस्तान के पूर्व राष्ट्रपति हामिद करजई ने कहा है कि देश की प्रत्येक लड़की को स्कूलों में लौटना चाहिए, क्योंकि यह युद्धग्रस्त राष्ट्र की भलाई के लिए अति आवश्यक है।

टोलो न्यूज की रिपोर्ट के अनुसार पूर्व नेता ने कहा कि लड़कियों की स्कूल और महिलाओं की उनके कार्यस्थल पर वापसी अफगानिस्तान की मांग है।

अगस्त 2021 में तालिबान के अफगानिस्तान पर अधिकार करने के बाद से लड़कियां और महिलाएं शैक्षणिक संस्थानों और कार्यालयों से बाहर हो गई हैं।

मौजूदा तालिबान सरकार की मान्यता के संबंध में करजई ने कहा कि मार्ग प्रशस्त करने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर कुछ प्रारंभिक कदम उठाए जाने की जरूरत है।

अंतर्राष्ट्रीय समुदाय द्वारा मान्यता के मुद्दे पर, मेरा प्रस्ताव शुरू से ही यही रहा है कि हम अफगान लोगों को पहले अपने घर को व्यवस्थित करने की जरूरत है।

अमेरिका ने कोरिया से गंभीर कूटनीति में शामिल होने का आग्रह किया

वाशिंगटन। अमेरिकी विदेश मंत्री वेंडी शेरमेन ने उत्तर कोरिया से गंभीर कूटनीति में शामिल होने का आग्रह किया है। योनहाप समाचार एजेंसी ने विभाग का हवाला देते हुए मंगलवार को आयोजित जापानी उप विदेश मंत्री ताकेओ मोरी के साथ टेलीफोन पर बातचीत की।

इसने एक प्रेस विज्ञप्ति में कहा, दोनों अधिकारियों ने कोरियाई प्रायद्वीप के पूर्ण परमाणु मुक्त की दिशा में प्रगति करने में अमेरिका-जापान सहयोग जारी रखने के महत्व की पुष्टि की।

उत्तर कोरिया को उसके आधिकारिक नाम, डेमोक्रेटिक पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ कोरिया का जिक्र करते हुए उप सचिव शेरमेन ने कहा, बिना किसी शर्त के डीपीआरके से मिलने के लिए अमेरिकी तैयारियों पर प्रकाश डाला और डीपीआरके को गंभीर और निरंतर कूटनीति में शामिल होने का आह्वान किया।

उत्तर कोरिया के हालिया मिसाइल परीक्षणों की श्रृंखला के बाद अमेरिका और उसके सहयोगियों के बीच नवीनतम उच्च स्तरीय बातचीत हुई।

प्योंगयांग ने अकेले जनवरी में मिसाइल प्रक्षेपण के सात दौर का मंचन किया, जो एक महीने में किए गए मिसाइल परीक्षणों की सबसे बड़ी संख्या है।

दक्षिण कोरिया के विदेश मंत्री चुंग यूई-योंग, अमेरिकी विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकन और जापानी विदेश मंत्री योशिमासा हयाशी ने पिछले हफ्ते हवाई में त्रिपक्षीय वार्ता की, जिसके तुरंत बाद उनके शीर्ष परमाणु दूतों ने हवाई में भी, साथ जुड़ने के तरीकों पर उत्तर कोरिया के साथ तीन-तरफा चर्चा की।

शेरमेन ने अपने जापानी समकक्ष और दक्षिण कोरियाई समकक्ष नोह क्यू-डुक के साथ द्विपक्षीय और त्रिपक्षीय टेलीफोन वार्ता भी की थी, जब उत्तर कोरिया ने 30 जनवरी को एक मध्यवर्ती दूरी की बैलिस्टिक मिसाइल दागी थी, जो उत्तर कोरिया द्वारा 2017 के अंत से लॉन्च की गई सबसे लंबी दूरी की बैलिस्टिक मिसाइल थी।

विभाग ने कहा कि शेरमेन और उनके जापानी समकक्ष ने उत्तर कोरियाई मिसाइल प्रक्षेपण की अस्थिर प्रकृति पर चर्चा की।

विदेश विभाग के अनुसार, अमेरिका और जापानी अधिकारियों ने उत्तर कोरिया के मुद्दे और हिंद-प्रशांत क्षेत्र में अन्य साझा प्राथमिकताओं को संबोधित करने में अमेरिका, जापान और दक्षिण कोरिया के बीच त्रिपक्षीय सहयोग के महत्व पर भी प्रकाश डाला।

उत्तर कोरिया ने नवंबर 2017 से परमाणु और लंबी दूरी की बैलिस्टिक मिसाइल परीक्षण पर लगाए गए स्थगन को बनाए रखा है।

इसने अमेरिका के साथ बातचीत में लंबे समय तक गतिरोध के बीच सभी अस्थायी रूप से निलंबित गतिविधियों को फिर से शुरू करने पर विचार करने की धमकी दी है।

देश ने 2019 के अंत से अमेरिका के साथ परमाणुमुक्त वार्ता से परहेज किया है। यह हाल के अमेरिकी प्रस्तावों के प्रति भी अनुत्तरदायी है।

ब्रिटेन में दूसरा तूफान, स्टॉर्म यूनिस

लंदन। दक्षिणी स्कॉटलैंड और ब्रिटेन में पहला तूफान स्टॉर्म डडली के बाद अब दूसरा तूफान स्टॉर्म यूनिस शुक्रवार को इस क्षेत्र से टकराएगा, जिसके कारण इन शहरों में भारी तबाही होने की आशंका है। मौसम विभाग ने गुरुवार को यह जानकारी दी। विभाग ने लोगों को सतर्क रहने की चेतावनी भी जारी की है। बीबीसी के अनुसार, उत्तरी इंग्लैंड और उत्तरी आयरलैंड, स्कॉटलैंड सहित अन्य हिस्सों में भारी बारिश और तेज हवाएं जारी हैं। हालिया, तूफान स्टॉर्म डडली से यह क्षेत्र अत्यधिक प्रभावित हैं इसलिए यहां पर पेड़ों, रेलवे लाइनों और बिजली लाइनों को बंद करके, तूफान से बचने के लिए हर संभव प्रयास किए गए हैं। मौसम विभाग की ओर से स्टॉर्म यूनिस दूसरा तूफान की चेतावनी के बाद उत्तर पूर्व के इंग्लैंड, कुम्ब्रिया, उत्तरी यॉर्कशायर और लंकाशायर में बिजली की सप्लाई बंद कर दी गयी और साथ ही स्कॉटलैंड में सभी ट्रेनों को रद्द कर दिया गया।

बीबीसी ने बताया कि स्टॉर्म यूनिस 70 मील प्रति घंटे की तूफानी गति के साथ आगे बढ़ेगा और इसकी रफ्तार इंग्लैंड और वेल्स में 100 मील प्रति घंटे तक हो जाएगी।

ब्रिटेन व संरा ने की मिंस्क समझौते को लागू करने की अपील

लंदर। ब्रिटेन के प्रधानमंत्री बोरिस जॉनसन और संयुक्त राष्ट्र (संरा) के महासचिव एंटोनियो गुटेरेस के बीच यूक्रेन और रूस के बीच जारी तनाव पर बातचीत के बाद दोनों नेताओं ने मिंस्क समझौते को लागू किये जाने की जरूरत पर बल दिया है।

इस संबंध में ब्रिटेन के प्रधानमंत्री कार्यालय की ओर से बुधवार को जारी बयान में कहा गया कि दोनों नेताओं ने विवाद के संबंध में दोनों देशों की जिम्मेदारी को दोहराते हुए कि संयुक्त राष्ट्र के चार्टर के तहत वें अपनी जिम्मेदारियों को पूरा करें और संयुक्त राष्ट्र के सदस्य देशों की संप्रभुता और भौगोलिक अखंडता का सम्मान करे। इस बयान में ब्रिटेन के प्रधानमंत्री और संयुक्त राष्ट्र के महासचिव ने मिंस्क समझौते को लागू किये जाने के लिए सभी पक्षों से पूरी ईमानदारी से काम किये जाने की जरूरत को रेखांकित किया है। डोनबास क्षेत्र और यूक्रेनी सरकार तथा इससे अलग हुए डोनेत्स्क व लुहांस्क पीपुल्स रिपब्लिक के बीच विवाद 2014 से चला आ रहा है। इस विवाद के राजनीतिक समाधान के लिए नोरमेंडी समूह के देशों रूस, जर्मनी, यूक्रेन और फ्रांस ने फरवरी 2015 में मिंस्क समझौता किया था। इस समझौते का अनुपालन नहीं होने से छुटपुट विवाद या झड़प जारी है।

इस संबंध में रूस, यूक्रेन पर समझौते का क्रियांवयन नहीं करने का और इसी कारण से विवाद के सुलाझाने में बातचीत में देरी होने का आरोप लगाता रहा है।

संकट के बीच यूक्रेन ने मनाया एकता दिवस

कीव। यूक्रेन ने देश में संकट के बीच लोगों को एकजुट करने के लिए राष्ट्रीय एकता दिवस मनाया।

समाचार एजेंसी सिन्हुआ की रिपोर्ट के अनुसार, बुधवार को राष्ट्र के नाम एक टेलीविजन संबोधन में, राष्ट्रपति वलोडिमिर जेलेंस्की ने कहा कि यूक्रेनियन अलग हैं, लेकिन वे सभी शांति, खुशी और अपने प्रियजनों के साथ रहने की इच्छा से एकजुट हैं।

जेलेंस्की ने कहा, हम सभी एक इच्छा से एकजुट हैं, शांति से, खुशी से, एक परिवार के रूप में, बच्चों के साथ, माता-पिता के साथ और हमें इस सब पर पूरा अधिकार है। क्योंकि हम घर पर हैं, हम अपने देश यूक्रेन में हैं। इस बीच, प्रधान मंत्री डेनिस शमीहाल ने कहा कि यूक्रेनियन दोस्तों और दुश्मनों को दिखाना चाहते हैं कि यूक्रेन कठिन समय में भी हम एक-साथ है।

श्यामल ने अपने आधिकारिक टेलीग्राम चैनल पर लिखा, यूक्रेनी ने अपने मतभेदों को खारिज कर दिया है और संभावित खतरों का सामना करने के लिए एकजुट हो रहे हैं। एक सफल भविष्य के लिए। हम जानते हैं कि यह कैसे करना है और हमारी एकता हमारा सबसे अच्छा हथियार है।

समारोह में, यूक्रेनी के उत्साही लोगों ने कीव में ओलंपिक स्टेडियम में 200 मीटर लंबा राष्ट्रीय ध्वज फहराया।

लोगों की एकता दिखाने के लिए देश भर के सरकारी भवनों, निजी घरों और कारों पर नीले-पीले झंडे लहराए गए।

समारोह में कई स्कूलों और किंडरगार्टन में बच्चों को पारंपरिक यूक्रेनी कपड़े पहनने के लिए कहा गया था।

इसके अलावा, इंफ्रास्ट्रक्चर मंत्रालय ने यूक्रेन के पश्चिमी शहर राखीव से पूर्वी शहर मारियुपोल तक ट्रेन ऑफ यूनिटी की शुरुआत की, जिसने देश भर के विभिन्न क्षेत्रों में झंडा फहराया।

यूरोपीय संघ के देशों के राजदूतों ने एकता दिवस को चिह्नित करने के लिए कीव में स्मरण की दीवार पर फूल बिछाए, यूक्रेन के लिए अपना समर्थन दिखाया और उन सभी को श्रद्धांजलि अर्पित की जो 2014 से पूर्वी यूक्रेन में संघर्ष में मारे गए थे।

कुछ पश्चिमी मीडिया ने दावा किया था कि रूस 16 फरवरी को यूक्रेन पर आक्रमण कर सकता है।

मास्को, जिसने सीमा के पास 1,00,000 से अधिक सैनिकों को जमा किया है, ने बार-बार यूक्रेन पर आक्रमण करने की किसी भी योजना से इनकार किया है।

इससे पहले बुधवार को रक्षा मंत्री ओलेक्सी रेजनिकोव ने कहा कि यूक्रेन की सीमाओं पर स्थिति स्थिर बनी हुई है।

चिली ने प्रवासी संकट के कारण आपातकाल की घोषणा की

सैंटियागो। चिली के राष्ट्रपति सेबेस्टियन पिनेरा ने सीमा पर अनियमित प्रवास को नियंत्रित करने के लिए सशस्त्र बलों को स्पेशल पावर प्रदान करते हुए चार उत्तरी प्रांतों में आपातकाल की संवैधानिक स्थिति घोषित कर दी है।

समाचार एजेंसी सिन्हुआ की रिपोर्ट के अनुसार, दो सप्ताह के नवीनीकरण की संभावना के साथ 15 दिनों तक चलने वाले इस उपाय में बोलीविया और पेरू के साथ चिली की उत्तरी सीमा की रक्षा के लिए 672 सैन्य कर्मियों और 100 पुलिस अधिकारियों की तैनाती शामिल है।

सरकार के अनुसार, अनधिकृत क्रॉसिंग के माध्यम से और प्रवासियों के भारी वृद्धि के बीच दक्षिण अमेरिकी देश मुख्य रूप से एरिका, परिनाकोटा, तामारुगल और एल लोआ प्रांतों में प्रवासी और सुरक्षा संकट का सामना कर रहा है। राष्ट्रपति ने एक प्रेस बयान में बताया कि पुलिस और सेना गश्त और जांच करेगी, नए अवलोकन पोस्ट स्थापित करेगी, ड्रोन और मानव रहित विमान तैनात करेगी, निगरानी और स्थानांतरण के लिए हेलीकॉप्टरों का उपयोग करेगी, साथ ही नाइट विजन कैमरे, थर्मल कैमरे और उपग्रह संचार उपकरण भी लगाएगी। वर्तमान में, अनधिकृत क्रॉसिंग के माध्यम से देश में प्रवेश करने के बाद, आधिकारिक प्रस्ताव के इंतजार में दर्जनों लोग सीमावर्ती शहरों में फंसे हुए हैं। चिली ने हाल ही में एक प्रवासन कानून पेश किया जो देश में प्रवासी प्रवाह का आदेश देना चाहता है। पिनेरा के अनुसार, जिन्होंने कहा कि वह स्थिति को हल करने के लिए अर्जेंटीना, बोलीविया और पेरू के पड़ोसी देशों के साथ बातचीत कर रहे हैं।

अगर पत्नी जिद पर अड़े तो पति करें पिटाई, ताकि वो अनुशासित रहे सके : मलेशिया की महिला मंत्री

कुआलालंपुर। मलेशिया की एक महिला मंत्री ने घरेलू हिंसा को बढ़ावा देने वाला बयान दिया है। उनके बयान से विवाद हो गया है। मंत्री ने कहा कि यदि पत्नी जिद पर अड़ी रहती है और अभद्र व्यवहार करती है तो पति को उसकी पिटाई करनी चाहिए। जिससे पत्नी अनुशासित रह सके। इससे पहले भी सिती ने पति के मारने पर महिलाओं को उन्हें माफ करने को कहा था

महिलाओं को पीटने की वकालत करने वाली ये महिला मलेशिया की महिला, परिवार और सामुदायिक विकास की उपमंत्री सिती जैला मोहम्मद युसॉफ हैं। उन्होंने इंस्टाग्राम पर दो मिनट का एक वीडियो पोस्ट किया है, जिसे उन्होंने मदर टिप्स का नाम दिया है। वीडियो में उपमंत्री ने पतियों को पत्नियों को मारने की सलाह दी है। सिती जैला मोहम्मद ने कहा कि वे अपनी पत्नियों के साथ बात करके उन्हें अनुशासित करें। अगर उनकी पत्नी सलाह मानने से इनकार करती है तो उनके साथ तीन दिन तक ना सोए। वे अलग सोने के बाद भी अपना व्यवहार नहीं बदलती है तो पति सख्ती दिखाएं। वे अपनी पत्नियों की पिटाई करें। वहीं महिला मंत्री ने पतियों को ज्यादा कठोर सख्ती ना दिखाने को कहा है। जिससे पत्नी को पता चल सके कि उनके पति कितने सख्त हैं और क्या बदलाव चाहते हैं?

पत्नियों को बताए पति के दिल जीतने के गुर

मलेशिया की ये मंत्री यहीं नहीं रुकी। उन्होंने महिलाओं को पतियों का दिल जीतने की सलाह भी दे डाली। सिती जैला युसॉफ ने कहा कि अगर महिलाएं अपने पति का दिल जीतना चाहती हैं तो उनकी अनुमति मिलने पर ही उनसे कुछ कहें। उन्होंने महिलाओं से कहा कि अपने पतियों से तभी बात करें जब वे शांत हों। खाना खा चुके हों और प्रार्थना कर चुके हों और आराम कर रहे हों। जब आप बोलना चाहती हैं तो पहले उनसे अनुमति लें। उनके इस बयान से लोग नाराज हैं।

मार्च में अधिकांश कोविड-19 प्रतिबंध हटा देगा ऑस्ट्रिया

वियना। ऑस्ट्रिया ने हाल के दिनों में उच्च संक्रमण संख्या के बावजूद, 5 मार्च से अपने अधिकांश कोविड -19 प्रतिबंधों को हटाने की योजना की घोषणा की है।

समाचार एजेंसी सिन्हुआ की रिपोर्ट के अनुसार, ऑस्ट्रियाई सरकार ने पहले ही इस महीने की शुरूआत में कोरोनोवायरस प्रतिबंधों में ढील दी थी, यह कहते हुए कि देश के अस्पतालों में स्थिति स्थिर हो गई है, क्योंकि ओमिक्रॉन वेरिएंट अपेक्षाकृत कम घातक है।

ऑस्ट्रियाई चांसलर कार्ल नेहमर ने बुधवार को एक संवाददाता सम्मेलन में कहा कि 5 मार्च तक टीकाकरण, वायरस से ठीक होने या एक निगेटिव परीक्षा परिणाम, साथ ही साथ अन्य प्रतिबंधों जैसी प्रवेश आवश्यकताओं को समाप्त कर दिया जाएगा।

रेस्तरां और बार के लिए जल्दी बंद होने का नियम भी हटा दिया जाएगा, और नाइट क्लबों को फिर से खोलने की अनुमति दी जाएगी। हालांकि, अस्पतालों और नर्सिंग होम जैसे उच्च जोखिम वाले क्षेत्रों में मास्क पहनना अनिवार्य रहेगा।

नेहमर ने ऑस्ट्रियाई प्रसारक ओआरएफ को बताया,कि हम अभी तक महामारी से उबर नहीं पाए हैं, लेकिन स्थिति में सुधार हो रहा है।

ऑस्ट्रिया में दैनिक संक्रमण हाल के सप्ताहों में लगभग 30,000 तक रहा है।

हालांकि, प्रतिबंधों में ढील के बावजूद, ऑस्ट्रिया के स्वास्थ्य अधिकारियों ने बुधवार को कहा कि वे फरवरी की शुरूआत में शुरू किए गए वैक्सीन जनादेश को चालू रखेंगे। स्वास्थ्य मंत्री वोल्फगैंग म्यूकस्टीन ने कहा कि टीकाकरण महामारी से बाहर निकलने का हमारा तरीका है।

वर्ष 2050 तक समुद्र के जलस्तर में हो सकती है वृद्धि : रिपोर्ट

वाशिंगटन । अमेरिकी तटीय इलाकों में समुद्र का स्तर वर्ष 2050 तक औसतन मौजूदा स्तर से 10 से 12 इंच (25 से 30 सेंटीमीटर) ऊपर बढ़ जाएगा। यह जानकारी एक रिपोर्ट में दी गई है।

एक अंतर-एजेंसी टास्क फोर्स की रिपोर्ट के अनुसार, समुद्र के स्तर में वृद्धि के कारण अगले 30 वर्षों में तटीय बाढ़ में काफी वृद्धि होगी। टास्क फोर्स में नासा, राष्ट्रीय महासागरीय और वायुमंडलीय प्रशासन और अन्य संघीय एजेंसियां शामिल हैं।

समाचार एजेंसी सिन्हुआ ने रिपोर्ट के हवाले से कहा कि अगले 30 वर्षों में समुद्र की ऊंचाई में वृद्धि पिछले 100 वर्षों में देखी गई कुल वृद्धि के बराबर हो सकती है।

टास्क फोर्स ने अपने निकट-अवधि के समुद्र के स्तर में वृद्धि के अनुमानों को विकसित किया है, जो इस बात की बेहतर समझ पर आधारित है कि कैसे प्रक्रियाएं जो बढ़ते समुद्रों में योगदान करती हैं, जैसे कि ग्लेशियरों और बर्फ की चादरों के पिघलने के साथ-साथ समुद्र, भूमि और बर्फ के बीच समुद्र की ऊंचाई को लेकर बातचीत प्रभावित होगी।

नासा के प्रशासक बिल नेल्सन ने कहा, यह रिपोर्ट पिछले अध्ययनों का समर्थन करती है और पुष्टि करती है कि हम लंबे समय से क्या जानते हैं, समुद्र का स्तर खतरनाक दर से बढ़ रहा है, जिससे दुनिया भर के समुदायों खतरे में हैं।

उन्होंने कहा, विज्ञान निर्विवाद है और जलवायु संकट को कम करने के लिए तत्काल कार्रवाई की आवश्यकता है, जो अच्छी तरह से चल रहा है।

अदालत के आदेश का पालन नहीं करने संबंधी अवमानना याचिका पर केंद्र के अधिकारियों को नोटिस

नई दिल्ली। दिल्ली उच्च न्यायालय ने अपने एक आदेश का कथित रूप से पालन नहीं करने के लिए दायर अवमानना याचिका पर केंद्र सरकार के अधिकारियों को नोटिस जारी किया है। अदालत ने कुछ सफल अभ्यर्थियों को विधि एवं न्याय मंत्रालय में संयुक्त सचिव एवं विधि सलाहकार के पद पर छह सप्ताह के भीतर करने नियुक्त करने का निर्देश दिया था।

न्यायमूर्ति नजमी वजीरी ने कहा कि जुलाई 2021 में अदालत की एक खंडपीठ के आदेश का पालन अधिकारियों द्वारा सुनिश्चित किया जाना था। अदालत ने कार्मिक, लोक शिकायत और पेंशन मंत्रालय, कानून मंत्रालय के अधिकारियों के साथ ही संघ लोक सेवा आयोग से चार सप्ताह में अनुपालन हलफनामा या जवाब देने को कहा।

यह अवमानना याचिका आशुतोष मिश्रा ने दायर की है। वह उन पांच सफल उम्मीदवारों में से एक हैं जिन्हें अदालत की खंडपीठ ने कानून और न्याय मंत्रालय में संयुक्त सचिव और कानूनी सलाहकार के पद पर नियुक्त करने का निर्देश दिया था।

याचिकाकर्ता ने अवमानना याचिका में आरोप लगाया है कि प्रतिवादी अधिकारी उच्च न्यायालय द्वारा पारित बाध्यकारी आदेश की जानबूझकर अवहेलना कर रहे हैं। याचिकाकर्ता ने दलील दी कि उन्हें उच्च वेतन और आगे करियर में प्रगति के मामले में अपूरणीय क्षति हो रही है। मामले में अगली सुनवाई 24 मई को होगी।

कोविड मृत्यु गणना से अधिक नहीं : सरकार

नई दिल्ली। केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय ने शुक्रवार को कहा कि देश में कोविड मृत्यु गणना से अधिक नहीं हैं और इसके निर्धारण के लिए पारदर्शी प्रणाली अपनायी जाती है।

मंत्रालय ने मीडिया में आ रही इस आशय की खबरों का खंडन करते हुए यहां कहा कि आधिकारिक गणना से अधिक कोविड मृत्यु दर का दावा करने वाली मीडिया रिपोर्ट गलत और पूरी तरह आधारहीन हैं। ये तथ्यों पर आधारित नहीं हैं और ये मात्र अटकलें हैं।

मंत्रालय ने कहा है कि देश में कोविड मौतों सहित सभी मौतों की रिपोर्ट करने की एक मजबूत प्रणाली है जिसे ग्राम पंचायत स्तर से लेकर जिला स्तर और राज्य स्तर तक शासन के विभिन्न स्तरों पर नियमित रूप से संचालित किया जाता है। देश में कोविड मृत्यु के निर्धारण के लिए विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा निर्धारित प्रक्रिया अपनायी जाती है। केंद्र सरकार ने राज्यों से आग्रह किया है कि यदि क्षेत्र स्तर पर कुछ मौतों की सूचना समय पर नहीं दी जा सकी है तो उन्हें बाद में सूचित किया जा सकता है।

देश में कोविड मृत्यु दर के विश्लेषण के मामले में यह ध्यान दिया जाता है कि प्रत्येक कोविड मृतक व्यक्ति के परिजनों को वित्तीय मदद दी जाए। इस पूरी प्रक्रिया की उच्चतम न्यायालय निगरानी कर रहा है, इसलिए देश में कोविड मौतों की कम रिपोर्टिंग की संभावना काफी कम है।

विदेश मंत्री जयशंकर 18 से 23 फरवरी तक जर्मनी एवं फ्रांस की यात्रा पर जायेंगे

नई दिल्ली। विदेश मंत्री एस जयशंकर शुक्रवार से 18 से 23 फरवरी तक छह दिवसीय यात्रा पर जर्मनी और फ्रांस जायेंगे। विदेश मंत्रालय ने बृहस्पतिवार को यह जानकारी दी।

विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता अरिंदम बागची ने संवाददाताओं को बताया कि जर्मनी में विदेश मंत्री जयशंकर म्यूनिख सुरक्षा सम्मेलन में हिस्सा लेंगे। इसके अलावा वे जर्मनी के अपने समकक्ष के साथ द्विपक्षीय बैठक भी करेंगे।

उन्होंने बताया कि जर्मनी की यात्रा के बाद जयशंकर फ्रांस की राजधानी पेरिस जायेंगे जहां वे हिन्द प्रशांत पर यूरोपीय संघ मंत्रिस्तरीय फोरम में हिस्सा लेंगे।

बागची ने बताया कि जयशंकर फ्रांस के अपने समकक्ष ज्यां यवेस ला द्रियां के साथ द्विपक्षीय वार्ता करेंगे।

विश्वविद्यालयों को तकनीकी कोर्स संचालित करने को लेकर कोई आंशिक मंजूरी नहीं दी जायेगी : एआईसीटीई

नई दिल्ली।अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद (एआईसीटीई) ने विश्वविद्यालयों को तकनीकी पाठ्यक्रम संचालित करने के संबंध में कोई आंशिक मंजूरी नहीं देने का फैसला किया है। अधिकारियों ने बृहस्पतिवार को यह जानकारी दी।

एआईसीटीई के सदस्य सचिव राजीव कुमार ने कहा, '' तकनीकी शिक्षा कार्यक्रम संचालित करने वाले सभी संबद्ध संस्थानों को एआईसीटीई से पूर्व अनुमति लेना जरूरी है। हालांकि, ऐसा पाया गया कि कुछ केंद्रीय, राज्य और निजी विश्वविद्यालय कुछ चुनिंदा कोर्स एवं कार्यक्रमों के लिये एआईसीटीई से आंशिक मंजूरी ले रहे हैं जिससे पक्षकारों के बीच भ्रम की स्थिति पैदा होती है।''

उन्होंने कहा इसलिये एआईसीटीई ने निर्णय किया है कि विश्वविद्यालयों को तकनीकी कोर्स के संबंध में कोई आंशिक मंजूरी नहीं दी जायेगी ताकि पक्षकारों के बीच भ्रम की स्थिति न हो। उन्होंने बताया कि उच्चतम न्यायालय ने व्यवस्था दी थी कि विश्वविद्यालयों को तकनीकी शिक्षा में नये विभाग या कोर्स की शुरूआत करने के लिये पूर्व अनुमति प्राप्त करने की जरूरत नहीं होती है। कुमार ने कहा कि विश्वविद्यालयों की हालांकि यह जवाबदेही होती है कि वे एआईसीटीई के स्थापित मानकों एवं नियमों का पालन करें।

अधिकरणों में रिक्तियां : न्यायालय ने तत्काल सुनवाई का अनुरोध करने वालों को धैर्य रखने को कहा

नई दिल्ली। उच्चतम न्यायालय ने देश भर के विभिन्न अधिकरणों में खाली पड़े पदों को भरने से संबंधित याचिकाओं पर तत्काल सुनवाई का अनुरोध करने वाले वादियों को धैर्य रखने की बृहस्पतिवार को सलाह दी।

प्रधान न्यायाधीश एन. वी. रमण, न्यायमूर्ति ए. एस. बोपन्ना और न्यायमूर्ति हिमा कोहली की पीठ ने कहा कि वह इस मुद्दे से जुड़ी याचिकाओं पर 23 फरवरी को विचार करेगी। पीठ ने यह जिक्र किया उसने अटॉर्नी जनरल के. के. वेणुगोपाल को इसमें सहायता के लिए तैयार रहने को कहा है।

जब एक वकील ने अपनी याचिका की जल्द सुनवाई किए जाने पर जोर दिया तो प्रधान न्यायाधीश ने कहा, 'जनहित याचिका के मामलों में भी, आप बहुत हंगामा करते हैं। क्या हम सरकार को आज बुला सकते हैं और उसे जेल भेज सकते हैं। कृपया कुछ धैर्य रखें, हम इस मामले को देख रहे हैं।'

पीठ ने कहा, ''हम मामले को देख रहे हैं। कल हमने अटॉर्नी जनरल को बुलाया था और हम इस पर 23 फरवरी को सुनवाई करेंगे।''

आयकर अपीलीय अधिकरण (आईटीएटी) में खाली पदों और इसके सदस्यों से संबंधित कुछ याचिकाओं का तत्काल सुनवाई के लिए बृहस्पतिवार को उल्लेख किया गया।

इससे पहले बुधवार को, उच्चतम न्यायालय ने एक अन्य मामले की सुनवाई करते हुए अधिकरणों में रिक्त पदों को भरने में 'बिना सोचे' की गई कार्रवाई पर अफसोस जताया और कहा कि नौकरशाही इस मुद्दे को 'हल्के' में ले रही है।

प्रधान न्यायाधीश रमण की अध्यक्षता वाली पीठ देश भर के विभिन्न अधिकरणों में बड़ी संख्या में रिक्तियों के मुद्दे पर गौर कर रही है। पीठ ने कहा था कि शुरू में कुछ नियुक्तियों के बाद, कोई ठोस कार्रवाई नहीं हुयी।

पीठ ने कहा था कि एनसीएलटी (नेशनल कंपनी लॉ ट्रिब्यूनल) के सदस्यों के लिए समय बढ़ाने की खातिर याचिकाएं मिल रही हैं। पीठ ने कहा कि शुरू में कुछ नियुक्तियों के बाद कुछ नहीं हुआ। पीठ ने कहा कि उसे सदस्यों के भविष्य के बारे में पता नहीं है और कई सदस्य सेवानिवृत्त हो रहे हैं। पीठ ने कहा कि नौकरशाही इस विषय को हल्के में ले रही है।

अटॉर्नी जनरल के. के. वेणुगोपाल रिक्तियों से संबंधित मामलों का निस्तारण करने में पीठ की सहायता कर रहे हैं। उन्होंने रिक्तियों की सूची और उन्हें भरने के लिए उठाए गए कदमों की जानकारी देने का प्रयास किया था।

दिल्ली के गांवों में पानी भरने से किसान खेती करने में असमर्थः अल्का गुर्जर

नई दिल्ली। भाजपा की राष्ट्रीय मंत्री एवं प्रदेश सह-प्रभारी डा. अलका गुर्जर ने कहा कि किसानों एवं अन्नदाताओं के बारे में जिसने नहीं सोचा उसे सत्ता में रहने का कोई हक नहीं है। वह मुख्यमंत्री आवास के नजदीक पिछले आठ दिनों से चल रहे भाजपा किसान मोर्चा व किसानों के धरने को संबोधित कर रही थीं। उन्होंने कहा कि यह जनता का आंदोलन है और किसानों की मांगे पूरी होने तक जारी रहेगा।

दिल्ली के देहात वाले इलाकों में जल-जमाव की समस्या

उन्होंने कहा कि दिल्ली देहात में जल जमाव आज के समय की बड़ी समस्या है। खेतों में पिछले कई वर्षों से पानी भरा हुआ है। इस कारण किसान अपनी जमीन पर खेती करने में असमर्थ हैं। उन्होंने कहा कि आप ने किसानों को मुफ्त बिजली देने की बात की थी, लेकिन उनसे व्यवसायिक दर से बिल वसूला जा रहा है।

> अलका गुर्जर ने कहा कि दिल्ली के प्रदूषण के लिए पराली को जिम्मेदार ठहराने वाली आप सरकार समस्या के समाधान को लेकर गंभीर नहीं है। इस सरकार का जनता के मुद्दों और समस्याओं से कोई लेना-देना नहीं है।

पराली को लेकर आप सरकार गंभीर नहीं

अलका गुर्जर ने कहा कि दिल्ली के प्रदूषण के लिए पराली को जिम्मेदार ठहराने वाली आप सरकार समस्या के समाधान को लेकर गंभीर नहीं है। इस सरकार का जनता के मुद्दों और समस्याओं से कोई लेना-देना नहीं है।

तुरंत हो जलजमाव की समस्या

प्रदेश किसान मोर्चा के अध्यक्ष विनोद सहरावत ने कहा कि 35 गांवों एवं अनधिकृत कालोनियों में जल जमाव की समस्या दूर करने के लिए पानी निकासी की तुरंत व्यवस्था की जानी चाहिए। जल जमाव से किसानों को हुए नुकसान के लिए मुआवजा मिलना चाहिए।

दिल्ली में बम मिलने के बाद रेलवे स्टेशन, बस अड्डा और बाजारों के साथ बार्डर पर सुरक्षा व्यवस्था कड़ी

नई दिल्ली। पुरानी सीमापुरी के घर में आइईडी मिलने के बाद बृहस्पतिवार को राजधानी में सुरक्षा व्यवस्था कड़ी कर दी गई। खासतौर पर यमुनापार इलाके में विशेष सतर्कता देखी गई। सभी बार्डर पर पुलिस कर्मी आने-जाने वाले वाहनों की निगरानी करते दिखाई दिए। संदिग्ध वाहनों को रोक कर उनकी जांच की गई। आनंद विहार रेलवे

स्टेशन, शाहदरा रेलवे स्टेशन और आनंद विहार बस अड्डा परिसर में चेकिंग अभियान चलाया गया, यात्रियों के सामान की तलाशी ली गई। प्रमुख बाजारों में भी गश्त बढ़ा दी गई। लोगों से अपील की गई कि वह किसी लावारिस वस्तु, बैग को हाथ न लगाएं। ऐसी वस्तु दिखने पर पुलिस को सूचना दें।

पुलिस ने ज्यादा भीड़ भाड़ वाले शाहदरा छोटा बाजार, कृष्णा नगर, लाल क्वार्टर, लक्ष्मी नगर, बाबरपुर, सीलमपुर समेत कई बाजारों में गश्त बढ़ा दी। अनाउंसमेंट सिस्टम के माध्यम से लोगों से लावारिस सामान को हाथ न लगाने की अपील की। आनंद विहार बस अड्डा पर भी पुलिस सतर्कता बरतती हुई नजर आई।

आनंद विहार रेलवे स्टेशन और शाहदरा रेलवे स्टेशन पर आरपीएफ ने जीआरपी के साथ मिलकर जांच की। ट्रेनों में चेकिंग अभियान चलाया गया, यात्रियों के बैग व सूटकेस की जांच की गई। स्टेशन परिसरों में लगे कूड़ेदानों तक को जांचा गया। इसके अलावा कड़कड़डूमा कोर्ट परिसर की भी सुरक्षा बढ़ा दी गई है। इसी तरह नई दिल्ली और निजामुद्दीन रेलवे स्टेशन पर भी सुरक्षा कर दी गई है। सभी यात्रियों की तलाशी की जा रही है।

आप का पलटवार: कुमार विश्वास के आरोपों पर राघव चड्ढा ने कहा -2017 से पहले कुछ क्यों नहीं कहा

नई दिल्ली।

कुमार विश्वास के अरविंद केजरीवाल के बारे में खुलासे पर आम आदमी पार्टी ने सफाई दी है। पार्टी के पंजाब सह प्रभारी राघव चड्ढा ने कहा कि प्रोपेगंडा से साजिश रची जा रही है। उन्होंने कहा कि 2017 से पहले कुमार विश्वास ने कुछ क्यों नहीं कहा। फर्जी वीडियो से बदनाम करने की साजिश की जा रही है। केजरीवाल को बदनाम करने की साजिश रची जा रही हे। बेईमान ताकतों को डर लग रहा है। पंजाब की जनता आप के साथ है। पंजाब में माहौल बिगाड़ने का प्रयास किया जा रहा है। मैं इन बेईमान ताकतों से कहना चाहता हूं कि पंजाब के लोग इस दुष्प्रचार में नहीं फंसेंगे। पंजाब के लोग जानते हैं कि ईमानदार अरविंद केजरीवाल और आप को रोकने के लिए बेईमान ताकतें सिर्फ साजिश करना चाहती हैं।

दरअसल कुमार विश्वास ने खुलासा किया था कि अरविंद केजरीवाल का सपना किसी भी तरह से पंजाब की सत्ता पर काबिज होने का है। कुमार विश्वास ने कहा था, %अरविंद केजरीवाल ने मुझसे कहा था कि मुझे पंजाब का सीएम बनना है या फिर खालिस्तान का प्रधानमंत्री बन जाऊंगा।

इससे पहले अबोहर में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी इस मामले में अरविंद केजरीवाल को घेरा था। मोदी ने कहा कि इनके इरादे कहीं ज्यादा खतरनाक हैं। जिसने ये भेद खोला वे इनके पुराने विश्वस्त साथी रहे हैं। कवि और चिंतक होने के नाते देश भर में उनके कवि सम्मेलनों को सुनने के लिए देश भर में युवा पीढ़ी उनका इंतजार करती है। ऐसे इंसान ने कल कह दिया और जो आरोप लगाया है वो बहुत खतरनाक है। उन्होंने कहा कि दर्द ज्यादा हुआ होगा तो ही ये खुलासा किया है। ये लोग पंजाब को तोड़ने का सपना पाले हुए हैं। ये लोग सत्ता के लिए अलगाववादियों से भी हाथ मिलाने को तैयार हैं। सत्ता पाने के लिए इन लोगों को अगर देश भी तोड़ना पड़े, तो ये लोग उसके लिए भी तैयार हैं। इनका एजेंडा और देश के दुश्मनों का एजेंडा, पाकिस्तान का एजेंडा अलग है ही नहीं।

भारत जलवायु वित्त, प्रौद्योगिकी हस्तांतरण में स्पष्ट रुख की उम्मीद कर रहा:सरकार

नई दिल्ली। भारत जलवायु वित्त और प्रौद्योगिकी हस्तांतरण के संदर्भ में स्पष्ट रुख की उम्मीद कर रहा है। पर्यावरण सचिव लीना नंदन ने बृहस्पतिवार को यह बात कही। उन्होंने कहा कि यह निवेश और देश में प्रौद्योगिकी लाने के लिए सबसे उपयुक्त समय है।

पर्यावरण सचिव ने द एनर्जी एंड रिसोर्सेज इंस्टीट्यूट (टेरी) द्वारा आयोजित विश्व सतत विकास सम्मेलन 2022 के दूसरे दिन मुख्य भाषण देते हुए कहा कि भारत जलवायु कार्रवाई पर जो कुछ वादा कर रहा है, उसे पूरा कर रहा है और इसी तरह की प्रतिबद्धता की विश्व से भी उम्मीद है।

उन्होंने कहा, ''सीओपी-26 के शीघ्र बाद हम आगे बढ़े, अपने लक्ष्यों को निर्धारित किया और बजटीय घोषणाओं के रूप में अपने लक्ष्यों की रूपरेखा तैयार की। इसलिए मुझे लगता है कि विश्व को उन सभी विभिन्न आयाम पर गौर करना होगा जो हम जलवायु परवर्तन वार्ता को आगे बढ़ने के लिए उम्मीद करते हैं। यह ऊर्जा के स्रोत के उपयोग में परिवर्तन, इलेक्ट्रिक वाहनों, हरित हाइड्रोजन, सौर ऊर्जा उत्पादन पर जोर देने की ओर बढ़ने के संदर्भ में है। ''

उन्होंने कहा, ''हम इस तरह से अपने लक्ष्यों को हासिल करेंगे जो हमने गैर-जीवाश्म ईंधन के सदंर्भ में कहा है। ''

सीओपी-26 प्रमुख एवं ब्रिटेन के मंत्री आलोक शर्मा ने कहा, ''(ग्लोबल वार्मिंग को)1.5 डिग्री सेल्सियस की सीमा के अंदर रखने का लक्ष्य हासिल नहीं किया जा सकेगा।''

नंदन ने दृष्टि को कार्रवाई में तब्दील करने के लिए जलवायु वित्त और प्रौद्योगिकी हस्तांतरण के संदर्भ में विश्व के स्पष्ट रुख की जरूरत पर जोर दिया।

एनएसई के कामकाज पर चुप क्यों हैं प्रधानमंत्री और वित्त मंत्री - कांग्रेस

नई दिल्ली। कांग्रेस ने नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) की पूर्व मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) चित्रा रामकृष्ण के खिलाफ आयकर विभाग की छापेमारी के बाद बृहस्पतिवार को सवाल किया कि एनएसई के कामकाज को लेकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण चुप क्यों हैं ?

आयकर विभाग ने एनएसई की पूर्व प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) चित्रा रामकृष्ण और अन्य के खिलाफ कर चोरी के मामले में मुंबई में रामकृष्ण के परिसरों पर छापे मारे हैं।

बाजार नियामक सेबी ने हाल में एक आदेश जारी किया था, जिसके मुताबिक एनएसई की पूर्व एमडी एवं सीईओ चित्रा रामकृष्ण ने एक योगी के प्रभाव में आकर आनंद सुब्रमण्यम को एक्सचेंज में समूह परिचालन

कांग्रेस के मुख्य प्रवक्ता रणदीप सुरजेवाला ने ट्वीट किया, ''कांग्रेस ने एक 'बाबा' द्वारा एनएसई को चलाए जाने का मुद्दा 15 फरवरी को उठाया था। (नरेंद्र) मोदी सरकार-वित्त मंत्रालय-कारपोरेट कार्य मंत्रालय-सीबीआई-ईडी चुप्पी साधे हुए हैं।'' उन्होंने आरोप लगाया, ''आयकर विभाग देर से जागा है। वित्त और कारपोरेट कार्य मंत्री चीजों को नकार रही हैं।'' सुरजेवाला ने सवाल किया, ''क्या प्रधानमंत्री और वित्त मंत्री यह बताएंगे कि 'बाबा' कहां है? बाबा का आईपी एड्रेस का पता क्यों नहीं लगाया गया? आप 'भेदिया कारोबार' से कैसे इनकार कर सकते हैं? जानकारी होने के बावजूद प्रधानमंत्री, वित्त मंत्री और सेबी 2016 से क्या कर रहे थे?''

विहिप का आग्रह, यूक्रेन में फंसे भारतीय छात्रों की स्वदेश वापसी के लिए विशेष अभियान चलाए भारत सरकार

नई दिल्ली।

विश्व हिंदू परिषद (विहिप) ने यूक्रेन में फंसे भारतीय छात्रों की स्वदेश वापसी के लिए भारत सरकार से विशेष मिशन चलाने की मांग की है। इसके साथ ही भारत लौट रहे भारतीय छात्रों से एयरलाइंस कंपनियों द्वारा मनमाना किराया वसूले जाने पर भी चिंता जताई है। विहिप ने इस मामले में भी भारत सरकार से हस्तक्षेप का आग्रह किया है।

विहिप के राष्ट्रीय प्रवक्ता विनोद बंसल ने कहा कि यूक्रेन में देश के हजारों मेडिकल छात्र व भारतवासी फंसे हुए हैं। उनकी सुरक्षित स्वदेश वापसी को लेकर उनके स्वजन के साथ ही देशवासी चिंतित हैं। उन्होंने कहा कि इसके पहले भी कुछ देश में आपातकालीन स्थिति में भारत ने वहां से अपने नागरिकों के साथ ही दूसरे देश के नागरिक को सुविधाजनक व सुरक्षित तरीके से वापस लाने के सफल आपरेशन को अंजाम दे चुकी है।

> विहिप के राष्ट्रीय प्रवक्ता विनोद बंसल ने कहा कि यूक्रेन में देश के हजारों मेडिकल छात्र व भारतवासी फंसे हुए हैं। उनकी सुरक्षित स्वदेश वापसी को लेकर उनके स्वजन के साथ ही देशवासी चिंतित हैं। विहिप ने इस मामले में भी भारत सरकार से हस्तक्षेप का आग्रह किया है।

यूक्रेन की हालात भी कुछ ठीक नहीं है। वहां भी रूस से युद्ध की स्थिति है। ऐसे में सरकार को त्वरित और प्रभावी कदम उठाना चाहिए। उन्होंने कहा कि इसके लिए भारत सरकार को वहां फंसे भारतीयों के लिए एयर इंडिया जैसी सुविधाजनक और सुगम फ्लाइट उपलब्ध करानी चाहिए। अधिक जरूरी लगने पर विशेष विमान भेजे जाए। ताकि लोग आसानी से सुरक्षित स्वदेश लौट सकें।

कौशल पुनरुत्थान डिजिटल विश्वविद्यालय वर्तमान समय की माँग है : प्रो. के.जी सुरेश

नई दिल्ली। कौशल पुनरुत्थान डिजिटल विश्वविद्यालय द्वारा online education: need of hour विषय पर ऑनलाइन कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्री य पत्रकारिता एवं संचार विश्वशविद्यालय भोपाल के कुलपति प्रो.के.जी. सुरेश उपस्थित रहे। कार्यक्रम की शुरुआत में ष्ठस्क्र से जुड़ा एक वीडियो प्रदर्शित किया गया जिसमें विश्वविद्यालय के भावी उद्देश्यों को दिखाया गया। कौशल पुनरुत्थान डिजिटल विश्वविद्यालय की संकल्पना और अवधारणा प्रस्तुत करते हुए महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय के जनसंचार विभाग के वरिष्ठ आचार्य प्रो.अनिल कुमार राय ने कहा कि कोरोना काल में ऑनलाइन शिक्षा विद्यार्थियों के लिए वरदान साबित हुई है। कोरोना ने हमें नए ढंग से सोचने का अवसर दिया । साथ ही, नवाचार करने का अवसर प्रदान किया और इसी नवाचार का सुपरिणाम ष्ठस्क्र है । प्रो.राय ने कहा कि ष्ठस्क्र के माध्यम से भविष्य में शिक्षा सहज व सुगम होगी। साथ ही यह विश्वविद्यालय ऑनलाइन शिक्षा को गति प्रदान करेगा।

कार्यक्रम में बतौर वक्ता पधारे NSDC के प्रशिक्षक डॉ.राजीव राय ने ऑनलाइन शिक्षा की अध्यापन विधि व प्रविधि पर बात रखते हुए ष्ठस्क्र की भावी योजनाओं के बारे में बताया । उन्होने कहा कि इस विश्वविद्यालय की ऑनलाइन कक्षाओं में एक साथ दस हजार छात्र शिक्षा ग्रहण कर सकेंगे। MSME के प्रशिक्षक श्री रवि कुमार तिवारी ने भी ष्ठस्क्र से जुड़े विभिन्न अकादमिक विषयों पर अपने विचार रखे। इस ऑनलाइन कार्यशाला में जयपुर से वरिष्ठ शिक्षाविद और मीडिया के सशक्त हस्ताक्षर प्रो.अभिताभ श्रीवास्तव जुड़े । प्रो.श्रीवास्तव ने अपनी बात रखते हुए कहा कि ष्ठस्क्रनें समय की जरूरत को पढ़ लिया है। यह एक अद्भुद प्रयोग है। हमारी आध्यात्मिक परंपरा कहती है कि स्वाध्याय आवश्यक है। यह विश्वविद्यालय भारतीय ज्ञान परंपरा के साथ-साथ स्वाध्याय की महान परंपरा को विस्तार देगा और आने वाली पीढ़ियों को ज्ञान के प्रति प्रेरित करेगा।

ऑनलाइन कार्यशाला में मुख्य अतिथि के रूप में माखन लाल राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय भोपाल के कुलपति प्रो. सुरेश ने ष्ठस्क्र के संदर्भ में अपनी बात रखते हुए कहा कि कई बार सरकारें सोच ही रही होती हैं और लोग आगे कार्यक्रम में बतौर वक्ता पधारे NSDC के प्रशिक्षक डॉ.राजीव राय ने ऑनलाइन शिक्षा की अध्यापन विधि व प्रविधि पर बात रखते हुए ष्ठस्क्र की भावी योजनाओं के बारे में बताया । उन्होने कहा कि इस विश्वविद्यालय की ऑनलाइन कक्षाओं में एक साथ दस हजार छात्र शिक्षा ग्रहण कर सकेंगे। MSME के प्रशिक्षक श्री रवि कुमार तिवारी ने भी DUSR से जुड़े विभिन्न अकादमिक विषयों पर अपने विचार रखे। इस ऑनलाइन कार्यशाला में जयपुर से वरिष्ठ शिक्षाविद और मीडिया के सशक्त हस्ताक्षर प्रो.अभिताभ श्रीवास्तव जुड़े । प्रो.श्रीवास्तव ने अपनी बात रखते हुए कहा कि नें समय की जरूरत को पढ़ लिया है। यह एक अद्भुद प्रयोग है। हमारी आध्यात्मिक परंपरा कहती है कि स्वाध्याय आवश्यक है। यह विश्वविद्यालय भारतीय ज्ञान परंपरा के साथ-साथ स्वाध्याय की महान परंपरा को विस्तार देगा और आने वाली पीढ़ियों को ज्ञान के प्रति प्रेरित करेगा।

ऑनलाइन कार्यशाला में मुख्य अतिथि के रूप में माखन लाल राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय भोपाल के कुलपति प्रो. सुरेश ने DUSR के संदर्भ में अपनी बात रखते हुए कहा कि कई बार सरकारें सोच ही रही होती हैं और लोग आगे बढ़ जाते हैं । पिछले दिनों बजट में माननीय वित्तमंत्री ने डिजिटल विश्वविद्यालय की घोषणा की लेकिन इससे पहले ही प्रो.राय के मार्ग दर्शन में DUSR की टीम ने इसे लागू भी कर दिया । कौशल पुनरुत्थान डिजिटल विश्वविद्यालय वर्तमान समय की माँग और इस देश का भविष्य है। राष्ट्रीय पत्रकारिता विश्वविद्यालय के कुलपति ने अपनी बात को विस्तार देते हुए कहा कि शिक्षा को शिक्षाविदों पर छोड़ देना चाहिए । कोरोना ने जीवन के दृष्टिकोण को बदल के रख दिया है । आज हम वर्क फॉम होम, एजुकेशन फ्रॉम होम की बात कर रहे हैं । DUSR के रूप में अब विश्वविद्यालय सभी के घर में होगा। यह अपने आप में अनूठा प्रयोग है। कौशल पुनरुत्थान डिजिटल विश्वविद्यालय के माध्यम से हमारी यह कोशिश हो कि हम स्थानीयता को महत्व देते हुए वैश्विक दृष्टिकोण अपनाएं। इस डिजिटल विश्वविद्यालय का भविष्य स्वर्णिम है।

कार्यशाला के अध्यक्ष और DUSR के कुलपति प्रो.पी.सी पातंजलि ने कार्यक्रम में अपनी बात रखते हुए कहा कि यह विश्वविद्यालय वसुधैव कुटुम्बकम के विचार को साकार करता है। ष्ठस्क्र के माध्यम से उच्च शिक्षा व्यक्ति के घर तक पहुँच चुकी है । इसलिए मैं कहूँगा कि यह विश्वविद्यालय व्यक्ति व समाज की स्थायी संपत्ति है। ष्ठस्क्र ने नई शिक्षा नीति की रूप रेखा को जमीन पर उतारने का काम किया है। आशावान हुए बिना कोई काम नहीं हो सकता । यह विश्वविद्यालय भारत की महान ज्ञान की परंपरा को आधुनिक ज्ञान से जोड़ते हुए अवसरहीन लोगों को अवसर प्रदान कराएगा साथ ही युवाओं को समर्थ और स्वावलंबी बनाने में अपनी भूमिका का निर्वहन करेगा। कार्यक्रम के अंत में श्री अनुपम राय ने ऑनलाइन माध्यम से जुड़े सभी विद्वानों का आभार व्यक्त किया। बता दें कि कार्यक्रम का संचालन रायपुर से डॉ.नरेंद्र त्रिपाठी ने किया।

क्या है DUSR- कौशल पुनरुत्थान डिजिटल विश्वविद्यालय (एक आभासी मेटा विश्वविद्यालय) गैर सरकारी संगठन- सामाजिक विकास एवं शोध संस्था की एक इकाई है जो वर्ष 2002-03 में संस्था पंजीकरण अधिनियम 1860 के अंतर्गत पंजीकृत है। कौशल पुनरुत्थान डिजिटल विश्वविद्यालय ऑनलाइन माध्यम से संचालित एक आभासी मेटा विश्वविद्यालय है जो युवाओं में व्यावसायिक कौशल विकसित करने, व्यावसायिक उद्यमी नागरिकों में व्याप्त कौशल को अद्यतन करने तथा भारतीय ज्ञान पद्धति, जीवन मूल्य और कौशल विकास को केंद्रीभूत करके कार्य करने के लिए संकल्पित है। कौशल पुनरुत्थान डिजिटल विश्वविद्यालय शैक्षिक तकनीक को आत्मसात करके मानव जीवन व्यवहार के सभी प्रमुख आयामों पर केंद्रित व्यावहारिक- व्यावसायिक शिक्षण प्रशिक्षण को प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है ।

सम्पादकीय

'नया पंजाब' किसके साथ?

पंजाब में मतदान से सिर्फ 5 दिन पहले ही कांग्रेस को बड़ा धक्का लगा है। इसे मतों के परिप्रेक्ष्य में नहीं आंका जा सकता, लेकिन इसका राजनीतिक संदेश स्पष्ट और अहम है कि कांग्रेस में बिखराव लगातार जारी है। कांग्रेस टूट रही है। पार्टी का भविष्य अंधकारमय है। कांग्रेस में बड़े नेता भी घुटन और असहाय महसूस कर रहे हैं। ये कथन आरोपवादी ही नहीं हैं, बल्कि यह पीड़ा 46 साल कांग्रेस में रहे, पूर्व केंद्रीय कानून मंत्री एवं पूर्व राज्यसभा सांसद अश्विनी कुमार ने पार्टी से इस्तीफा देते हुए बयां की है। उन्हें कांग्रेस के गांधी परिवार का वफादार और करीबी नेता माना जाता था। उनके अलावा, दो बार कांग्रेसी मुख्यमंत्री एवं लोकसभा सांसद रहे कैप्टन अमरिंदर सिंह 42 लंबे सालों तक कांग्रेस में रहे, लेकिन अब वह और कुछ पार्टी विधायक कांग्रेस छोड़ चुके हैं। पंजाब में लगभग आधी कांग्रेस या तो भाजपा अथवा आम आदमी पार्टी (आप) के साथ जा चुकी है। कैप्टन का आकलन है कि यदि इस बार कांग्रेस को 20-25 सीटें भी मिल जाएं, तो बड़ी बात होगी। बहरहाल इसे तो 10 मार्च पर छोड़ते हैं, जिस दिन जनादेश सार्वजनिक होगा। लेकिन यह साफ है कि कांग्रेस आलाकमान को

ऐसी टूट-फूट की कोई चिंता नही है।

पार्टी के पूर्व अध्यक्ष एवं वरिष्ठ सांसद राहुल गांधी इसे 'विचारधारा की लड़ाई' मान रहे हैं। बेशक विचारधारा तो प्रत्येक राजनीतिक दल या किसी भी संगठन की होती है, लेकिन उसे दिमाग से और व्यापक जन-समर्थन के साथ लड़ा जा सकता है। कांग्रेस में 'राष्ट्रीय मूड' नहीं झलकता। पार्टी में विरोध कई स्तरों पर दीखता है। पार्टी सांसद एवं पर्व केंद्रीय मंत्री मनीष तिवारी तो यहां तक बयान दे चुके हैं कि पंजाब में ऐसे नेता प्रचार कर रहे हैं, जिनके आग्रह पर उनकी पत्नियां भी कांग्रेस को वोट नहीं देंगी। कांग्रेस के भीतर ही असंतुष्ट और कथित बगावती नेताओं का समूह जी-23 भी सक्रिय है। कांग्रेस नेतृत्व ने उसे शांत करने या समझाने का कोई प्रयास तक नहीं किया। पंजाब कांग्रेस में मुख्यमंत्री चन्नी को लेकर और उनकी प्रचारित 'गरीबी' के मद्देनजर कैप्टन और अश्विनी कुमार सरीखे वरिष्ठ नेता ही सवाल उठा रहे हैं। पंजाब में यह भी सवाल है कि जिसका खुद का 'फटा वोट' है, उसे 'साबुत वोट' क्यों दें? बहरहाल पंजाब एक सीमाई राज्य है। उसका काफी हिस्सा पाकिस्तान की सीमा से सटा है। सीमापार से आतंकी गतिविधियां, नशीले पदार्थों की तस्करी और ड्रोन के जरिए घुसपैठ और हथियारों की सप्लाई सरीखे मुद्दे बेहद संवेदनशील और चिंताजनक रहे हैं।

प्रधानमंत्री मोदी ने भी सुरक्षा को लेकर गंभीर सरोकार जताए हैं और लाक्षणिक भाषा में आगाह किया है कि कांग्रेस और 'आप' की संभावित सरकारें पंजाब की सुरक्षा सुनिश्चित नहीं कर सकतीं। कैप्टन भी सुरक्षा के मद्देनजर मुख्यमंत्री चन्नी और प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष नवजोत सिंह सिद्धू को 'अक्षम नेतृत्व' करार दे चुके हैं। बहरहाल हम इन आरोपों और आकलनों को 'चुनावी' मान सकते हैं, लेकिन राहुल गांधी ने सुरक्षा पर ठोस नीति का खुलासा करने के बजाय 'झाड़ू वाले नेता' और 'आतंकवाद' के अंतर्संबंधों के आरोप लगाए हैं। क्या पंजाब में आतंकवाद आज भी मौजूद है? इस सवाल का सटीक जवाब कोई नहीं देता, बल्कि सभी दल मुफ्त बिजली, पानी, सिंचाई, कर्ज़माफी, पढ़े-लिखे छात्रों को बेरोज़गारी भत्ता आदि मुहैया कराने की दौड़ में शामिल हैं, लेकिन अभी तक किसी ने यह रोडमैप नहीं दिया है कि पंजाब पर 3 लाख करोड़ रुपए से अधिक का कर्ज़ कैसे कम किया जाएगा? लोकलुभावन वायदों से राज्य की अर्थव्यवस्था पर उल्टा प्रभाव पड़ता है। हम 10 मार्च के बाद 'नए पंजाब' की कल्पना कर रहे हैं। उसी के संदर्भ में कुछ अहम सरोकार सामने रखे हैं। कांग्रेस का निरंतर ढहना राजनीतिक और लोकतांत्रिक समीकरणों के मद्देनजर चिंताजनक पहलू है, क्योंकि देश भर में करीब 12 करोड़ मतदाता आज भी कांग्रेस को वोट देते हैं। अब 'नया पंजाब' किसका होगा? सत्तारूढ़ कांग्रेस का विकल्प क्या होगा? करीब 32 फीसदी दलित, सिख, हिंदू आदि मुख्य समुदाय किसे जनादेश देंगे? यह सब कुछ देखने और आंकने की जिज्ञासा बनी रहेगी। सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि पंजाब की सीमा को पाकिस्तान की मंशा से कैसे सुरक्षित रखा जाए। सभी दलों को इस मसले पर एकजुट होना चाहिए।

मतदान ने दिए सत्ता परिवर्तन के संकेत!

डॉ श्रीगोपाल नारसन एडवोकेट-

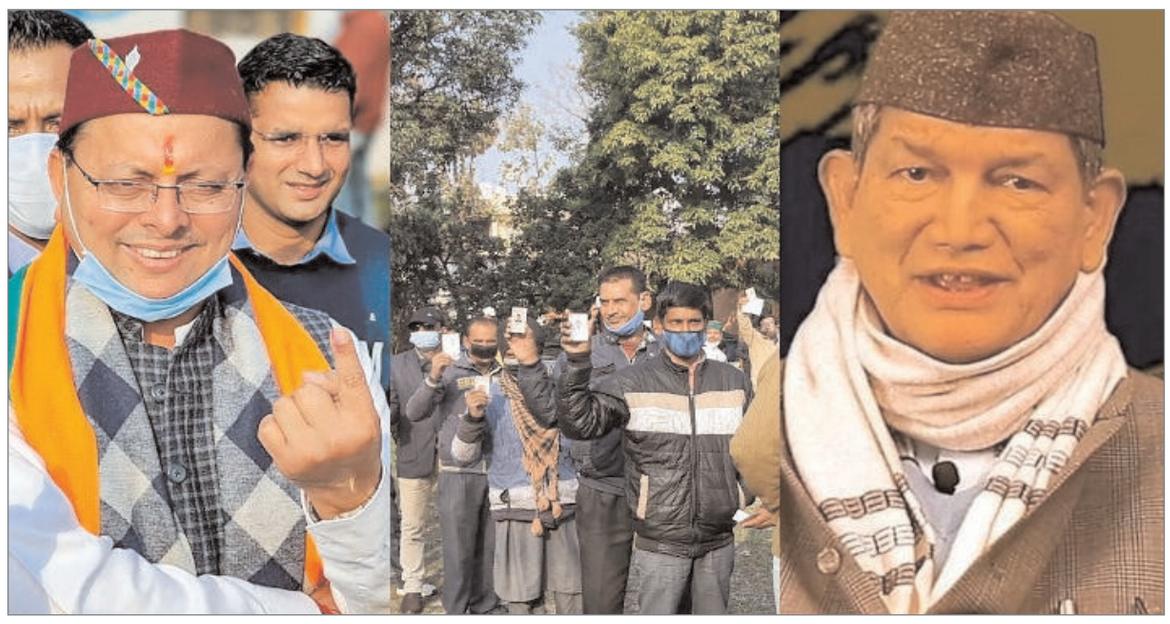

उत्तराखंड में 14 फरवरी को हुए मतदान पर गौर करे तो सबसे ज्यादा हरिद्वार जिले में 68.37 फीसदी और अल्मोड़ा जिले में सबसे कम 50.65 फीसदी हुआ। वहीं बागेश्वर में 57.83 फीसदी, चमोली में 59.28 फीसदी, चंपावत में 56.97 फीसदी, देहरादून में 52.93 फीसदी, नैनीताल में 63.12 फीसदी, पौड़ी गढ़वाल में 51.93 फीसदी, पिथौरागढ़ में 57.49 फीसदी, रुद्रप्रयाग में 60.36 फीसदी, टिहरी गढ़वाल में 52.66 फीसदी, उधम सिंह नगर में 65.13 फीसदी और उत्तरकाशी जिले में 65.55 फीसदी मतदान दर्ज किया है। उत्तराखंड की सभी 70 विधानसभा सीटों के लिए एक चरण में हुए मतदान में कुल 82,66,644 मतदाताओ ने 632 उम्मीदवारों के भाग्य का फैसला किया।जबकि गोवा में, 11,56,464 मतदाताओं ने राज्य की 40 सीटों के लिए 301 उम्मीदवारों के भाग्य का फैसला किया।उत्तर प्रदेश में विधानसभा चुनाव के दूसरे चरण में कुल 61.06 प्रतिशत मतदान दर्ज किया गया। चुनाव आयोग के आंकड़ों के मुताबिक, उत्तरी गोवा में 79.45 फीसदी जबकि दक्षिण गोवा में 76.92 फीसदी मतदान हुआ है। उत्तर प्रदेश में, जहां नौ जिलों की 55 सीटों पर मतदान हुआ, सबसे अधिक मतदान सहारनपुर में 67.52 प्रतिशत और सबसे कम शाहजहांपुर में 55.20 प्रतिशत मतदान दर्ज किया गया है। यूपी के अमरोहा जिले में 66.15 फीसदी, बरेली में 58.82 फीसदी, बिजनौर में 62.11 फीसदी, बदायूं में 56.83 फीसदी, मुरादाबाद में 64.56 फीसदी, रामपुर में 62.31 फीसदी और संभल में 56.88 फीसदी मतदान दर्ज किया गया है।उत्तर प्रदेश में, नौ जिलों के 55 विधानसभा क्षेत्रों में लगभग 2.02 करोड़ मतदाताओ ने 586 उम्मीदवारों के भाग्य का फैसला किया।इन जिलों में सहारनपुर, बिजनौर, मुरादाबाद, संभल, रामपुर, अमरोहा, बदायूं, बरेली और शाहजहांपुर शामिल हैं।वही उत्तर प्रदेश में 58 सीटो के लिए 10 फ़रवरी को ही मतदान हो चुका है। मतदान के दिन उत्तराखंड में चुनाव आचार संहिता के 203 मुकदमें दर्ज किए गए । मुख्य निर्वाचन अधिकारी सौजन्या ने बताया कि इसमें मतदाताओं को प्रलोभन देने, अवैध रूप से चुनाव सामग्री का इस्तेमाल करने, वाहनों का अवैध रूप से चुनावी कार्यों के इस्तेमाल, कोविड प्रोटोकॉल का उल्लंघन के मुकदमें शामिल हैं। सौजन्या ने बताया कि मतदान से ठीक पहले प्राप्त सभी शिकायतों को आरओ को भेजा गया, जिसमें प्रारंभिक जांच और तथ्यों के आधार पर मुकदमें दर्ज किए गए हैं।

सड़क निर्माण न होने से नाराज केदारनाथ विधानसभा क्षेत्र के दो गांवों-जग्गी बगवान और चिलौंड के मतदाताओं ने उत्तराखंड में हुए मतदान का पूरी तरह बहिष्कार किया। चिलौंड गांव में 225 जबकि जग्गी बगवान गांव में 376 मतदाता हैं।टिहरी जिले में कई पोलिंग बूथों पर ईवीएम मशीन कम रोशनी में रखे जाने से बुजुर्गों को चुनाव चिन्ह देखने व मतदान करने में परेशानी हुई।पूर्व मुख्यमंत्री हरीश रावत ने कहा कि भाजपा ने शराब और नोट बांटने की कोशिश की थी, जिसकी उन्होंने चुनाव आयोग से शिकायत की है। हरीश रावत के मुताबिक उन्हें पता चला कि दिल्ली से 100 करोड़ रुपए उत्तराखंड आए थे।नरेंद्रनगर में वोट डालने जा रहे एक व्यक्ति की हार्ट अटैक पड़ने से मौत हो गई। कुमाली गांव निवासी 67 वर्षीय वीर सिंह तोपवाल मतदान करने के लिए चौंपा मतदान केंद्र पर जा रहा थे। वीर सिंह चौंपा मतदान केंद्र की सीढ़ी पर ही पहुंचे थे, कि उनके सीने में दर्द उठने लगा। साथ चल रहे परिजनों ने उन्हें कुछ देर वहीं सीढ़ी पर बैठाकर रखा, लेकिन उनका दर्द बढ़ता गया। सूचना पर 108 सेवा मौके पर पहुंची और उन्हें उपचार के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र खाड़ी ले जाया गया। जहां से डॉक्टरों ने उन्हें हायर सेंटर श्रीदेव सुमन संयुक्त चिकित्सालय रेफर किया, लेकिन श्रीदेव सुमन चिकित्सालय पहुंचने पर डा. शिवानी रमोला ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। थौलधार ब्लाक के ग्राम भैंसकोटी की 102 वर्षीय बुजुर्ग महिला प्रेमावती सकलानी कंडी में बैठकर मतदान करने पहुंची। पैदल चलने में असमर्थ महिला को ग्रामीणों ने कंडी पर बिठाकर गांव से दो किमी दूर मतदान स्थल मैसारी तक पहुंचाया। बजुर्ग महिला के पुत्र परिपूर्णानंद सकलानी ने बताया कि उनके पास बैलेट मतपत्र की सुविधा भी थी, लेकिन उन्होंने मतदेय स्थल पर जाकर ही मतदान करने का निर्णय लिया। वही मंगलौर के नगरपालिका बूथ पर जहूर नामक वोटर वोट डालने पहुंचा तो पता चला मतदाता सूची में उसे मृत दर्शाया हुआ है।वह देर तक वोट डालने व स्वयं के जीवित रहने की जिद करता रहा,लेकिन उसकी मतदान कर्मियों ने एक नही सुनी।जिस कारण उसे बिना वोट दिए वापस लौटना पड़ा।लेकिन जिस उत्साह और साफ मौसम में मतदान हुआ है उसे देखकर लगता है उत्तराखंड में सत्ता परिवर्तन होगा।

आत्म विकास के चार चरण

-पीके खुराना-

एक व्यक्ति के रूप में हमारे विकास के चार चरण होते हैं। पहले चरण में हमारा जीवन ऐसा होता है कि जीवन की स्थितियां हमें नियंत्रित करती हैं और हम जीवन को भुगतते हैं। जीवन में जो भी अच्छा या बुरा आता है, उसे भोगते चलते हैं। जब जीवन पर हमारा कोई अपना नियंत्रण नहीं है तो हम कहते हैं कि लाइफ हैपन्स टु अस। घटनाएं घटती हैं हमारी ज़िंदगी में और हम एक कठपुतली की तरह वैसे ही नाचते हैं जैसे हमारा जीवन हमें नचाता है। आज संसार में 88 प्रतिशत लोग ऐसे ही हैं। इनमें अमीर लोग भी शामिल हैं, बहुत ज्यादा अमीर लोग भी शामिल हैं। अगर 27 साल की शादी के बाद भी दुनिया के चौथे सबसे अमीर आदमी का अपनी बीवी से तलाक हो गया तो कहीं न कहीं बिल गेट्स भी हालात के हाथ की कठपुतली ही है। लोग हमारी ज़िंदगी में आ-जा रहे हैं, घटनाएं घट रही हैं, और हम जीवन को भुगत रहे हैं। यह होता है लाइफ हैपन्स टु अस। यह हमारे विकास का पहला चरण है। जब हमने कुछ पैसा कमा लिया, सुख-सुविधाएं इकट्ठी कर लीं, नौकर-चाकर हो गए, हुक्म बजाने वाले हो गए, सिर झुकाने वाले हो गए, फूलमाला पहनाने वाले हो गए।

जब समाज में हमें पहचान मिल गई, तो शुरू होता है दूसरा चरण, और यह दूसरी स्टेज है : लाइफ हैपन्स फॉर अस। इस स्थिति में जीवन बहुत कुछ हमारे नियंत्रण में है। हम किसी दूसरे को हुक्म दे सकते हैं, मनचाहे काम करवा सकते हैं। यह हमारे विकास की दूसरी स्टेज है। तब हम कहते हैं कि लाइफ हैपन्स फार अस। जीवन हमारे सुख के लिए है। जीवन पर पूरा नियंत्रण तो नहीं है, पर बहुत सी बातों पर हमारा नियंत्रण है। जीवन हमारे लिए चल रहा है, हमारे अनुसार चल रहा है। ऐसे व्यक्ति में भी एक कमी है, और वह कमी है कि संतुष्टि नहीं है, कुछ न कुछ बाकी है, कहीं कोई खालीपन है, कहीं कुछ अधूरा है जिसके कारण असंतुष्टि है, चाहे वह कोई प्रमोशन है, पावर है, पैसा है, सेक्स है। अधूरापन है, खालीपन है, असंतुष्टि है, लेकिन फिर भी बहुत कुछ है। जीवन की तीसरी स्टेज में परिवर्तन हमारे अंदर होता है। तब हम कहते हैं कि लाइफ हैपन्स इनसाइड अस। जीवन हमारे अंदर घटित हो रहा है, हमारी सोच विकसित हो रही है, हम खुद को तराश रहे हैं, हम बदल रहे हैं, हम दुनिया को बदलने की कोशिश नहीं करते, किसी दूसरे पर नियंत्रण की कोशिश नहीं करते, किसी पर हक जमाने की जरूरत नहीं रह जाती। अगर कोई नुकसान हो जाए, अपमान हो जाए, गलती हो जाए, हमसे या किसी और से, तो उद्वेलित नहीं होते। गलती खुद से हो जाए तो हम खुद को माफ कर देते हैं। कोई आत्मग्लानि नहीं होती, कोई मलाल नहीं होता।

ऐसे ही अगर किसी दूसरे से गलती हो जाए, सामने वाले को भी उतनी ही आसानी से माफ कर देते हैं। कोई ज़िद नहीं, कोई गिला नहीं, कोई रंजिश नहीं। कोई नुकसान हो जाए, किसी करीबी रिश्तेदार से नाता टूट जाए, कोई हमारा अपना दुनिया से चला जाए, तो हम उदास होते हैं, कुछ देर के उदास होते हैं, पर जल्दी वापस आ जाते हैं, डिप्रेशन में नहीं जाते। हम निर्लिप्त हैं, अटैच्ड नहीं हैं। जीवन की घटनाएं हमारे सामने घट रही हैं, हम उनके गवाह हैं, विटनेस हैं, बस। यह जीवन की तीसरी स्टेज है, जब जीवन हमारे अंदर घटित होता है, जब हमारी आत्मा खुलती है। हम संतुष्ट रहते हैं, खुश रहते हैं, किसी का बुरा नहीं सोचते, किसी से जलते नहीं, किसी से डरते नहीं, किसी को तंग नहीं करते, किसी को धमकाते नहीं, किसी को डराते नहीं। इस स्टेज को हम कहते हैं कि लाइफ हैपन्स इनसाइड अस। जब हम विकास की दूसरी स्टेज पर पहुंच जाते हैं तो हमारी धूम की शुरुआत हो जाती है, हमारी पहचान बननी शुरू हो जाती है, लेकिन जब हम विकास की तीसरी स्टेज पर पहुंच जाएं तो हमारे संपर्क में आने वाला हर व्यक्ति हमारे औरा से, हमारे प्रभामंडल से प्रभावित होता है। जीवन के विकास की चौथी स्टेज में हम अपना जीवन लोगों के भले में लगा देते हैं। इस स्थिति को कहते हैं : लाइफ हैपन्स थ्रू अस फॉर अदर्स।

जीवन की घटनाएं घट रही हैं, हम एक पात्र हैं, एक माध्यम हैं और हमारे माध्यम से समाज का भला हो रहा है। अब कोई चाह नहीं बचती, कोई स्वार्थ नहीं बचता, प्रशंसा की इच्छा भी नहीं बचती। कोई कुछ भी कहे, हम अपना काम करते रहते हैं। सवाल यह है कि हम जीवन के विकास की इस स्थिति तक कैसे पहुंचें? मैंने इसका एक बनाया फार्मूला है : रैग्स। आर, ए, जी, एस : रैग्स। यह एक एक्रोनिम है, जिसमें आर से बनता है रिकगनिशन। हर व्यक्ति को महत्त्व दीजिए, उसका आदर कीजिए, उसके योगदान की प्रशंसा कीजिए। आप जिसकी प्रशंसा करेंगे वह आपका गुलाम हो जाएगा। कुछ खर्च करने की जरूरत नहीं है, कोई उपहार देने की जरूरत नहीं है। न महंगा, न सस्ता। रैग्स फार्मूले का दूसरा अक्षर है ए, ए यानी एप्रीशियेट। जब आप सामने वाले को समझने की कोशिश करते हैं, उसके संघर्षों को समझते हैं। उससे कुछ गलती हो जाए तो यह याद रखते हैं कि आपसे भी गलतियां होती हैं। ज़रा गहरे उतरेंगे तो हो सकता है कि आपको यह नज़र आए कि गलती तो असल में थी ही नहीं, बस आपको लग रहा था कि गलती हुई है, या आपको नज़र आ जाए कि गलती तो हुई, पर सामने वाले की उसमें कोई भूमिका नहीं थी। तब आपका नज़रिया बदल जाता है।

रैग्स फार्मूले का तीसरा अक्षर है जी, और जी से बनता है ग्रेटफुल। ग्रेटफुल, यानी कृतज्ञ यानी अहसानमंद। जीवन ने हमें जो कुछ दिया है, हम उसके लिए ईश्वर के अहसानमंद हों तो जीवन में फुलफिलमेंट आती है, संतोष आता है, उत्सव की भावना आती है। इससे हमारा आंतरिक विकास होता है, तब बदलाव हमारे अंदर आता है, लाइफ हैपन्स इनसाइड अस। परिवर्तन अंदर आता है, हमारा व्यवहार बदलता है तो हमारे आसपास के लोगों में भी बदलाव आता है और सबका भला होता है। रैग्स फार्मूले का अंतिम अक्षर है एस। एस यानी सेल्फ एस्टीम। अपना खुद का आदर, खुद से प्यार। यह है सेल्फ एस्टीम। कोई हमारी निंदा कर दे, कोई हमारा अपमान कर दे, कोई हमारा नुकसान कर दे, किसी से कोई गलती हो जाए, तो हम विचलित न हों, परेशान न हों, अपना नियंत्रण न खोएं और गुस्से में कुछ उल्टा-सीधा न बोल दें, यह सेल्फ एस्टीम है। हमसे कोई गलती हो जाए, गलती से किसी का अपमान हो जाए तो हम माफी मांग लें, आगे के लिए अपना व्यवहार सुधार लें, सामने वाले का कोई नुकसान हुआ हो तो उसकी भरपाई कर दें, पर अगर नुकसान हमारी औकात से बहुत ज्यादा बड़ा हो, उसकी भरपाई संभव न हो, तो हालात को स्वीकार करें और अपने मन में पश्चाताप की कोई भावना न रखें। छोटी-छोटी इन बातों का ध्यान रखेंगे तो जीवन खुशियों की बारात बन जाएगा और हम जीवन का भरपूर आनंद ले सकेंगे।

अनुशासन-मर्यादा से बाहर नहीं हो सकते स्कूल

आशीष बहल

आप और हम सब स्कूल, कॉलेज, यूनिवर्सिटी में पढ़े हैं। उस समय को थोड़ा याद करें तो ऐसा क्या था स्कूल में जिसे आप सबसे ज्यादा याद करते हैं। निःसंदेह आपका जवाब होगा अनुशासन। अनुशासन व्यक्ति निर्माण का भी अहम हिस्सा है। बिना अनुशासन के व्यक्ति पशु के समान है। किसी बच्चे को घर में पढ़ाई करवाई जा सकती है, परंतु फिर भी स्कूल उसके लिए बहुत जरूरी है। इसका एहसास हमें अभी हुआ, जब पूरे विश्व में लॉकडाउन लग गया और हालात इतने खराब हो गए कि घर को ही पाठशाला बनाना पड़ा। इसमें कोई शक नहीं कि बच्चों ने घर में पढ़ाई की, परंतु फिर भी अगर किसी से भी पूछें तो ये जरूर कहेंगे कि स्कूल से बेहतर कुछ नहीं हो सकता। आखिर ऐसा क्यों, स्कूल में ऐसा क्या है तो इसका जवाब है स्कूल हमें मर्यादित रहना सिखाता है। आज जब पूरे देश में यह शोर मचा है कि हमें स्कूल में पढ़ाई करते हुए किसी विशेष प्रकार की ड्रेस पहनने की आज़ादी है, तो यहां आज़ादी का गलत मतलब निकाला जा रहा है। आज़ादी यह नहीं है कि हम कुछ भी पहनें, बोलें, लिखें, करें। आज़ादी वह है जो सब कुछ मर्यादा में सिखाए। अमूमन मैं किसी धर्म या राजनीति के विषय पर नहीं लिखता क्योंकि यह व्यक्तिगत सोच का विषय है, परंतु इस विषय में एक और मसला शामिल है, जिस पर मैं अक्सर खुल कर बात करता हूं और वो है शिक्षा का मंदिर 'स्कूल'।

स्कूल-कॉलेज में कोई भी किसी धर्म, जाति से या बड़ा व छोटा नहीं होता। स्कूल में सब शिक्षार्थी होते हैं जिनका उद्देश्य होता है शिक्षा हासिल करना, सभ्यता, संस्कृति, वैज्ञानिक सोच, सत्य, असत्य, धर्म, अधर्म हर प्रकार की भावना को समझना और अपनी सही राह का चुनाव करना। इसी से तैयार होता है एक व्यक्ति और उस व्यक्ति से बनता है उन्नत राष्ट्र। इसके अलावा जो भी व्यक्ति आचरण करता है वो सिर्फ गंदी सोच और भटके हुए विचार हो सकते हैं। मैं उस बेटी की बात का समर्थन करता हूं कि उसे हिजाब पहनने की स्वतंत्रता है, पर वह स्वतंत्रता उसे उस समय है जब वह किसी अन्य जगह है जहां के अपने नियम नहीं हैं। स्कूल एक संस्था है जहां क्या पहनना है, कैसे पहनना है, कैसे रहना है, ये सब अनुशासन के अंतर्गत आता है। इसके कुछ नियम हैं, कायदे हैं जिनका पालन करना भी हमारा संवैधानिक कर्त्तव्य है। क्योंकि आज की पीढ़ी ऐसे कुंठित विचारों से ग्रसित है जो अपने अधिकारों के लिए गुमराह होती है, जोर से आवाज उठाती है, पर कभी भी कर्त्तव्यों के प्रति सजग नहीं होती। स्कूल-कॉलेज विद्या के मंदिर हैं। यहां किसी भी प्रकार के धार्मिक उन्माद को बर्दाश्त नहीं किया जा सकता, फिर चाहे वो हिज़ाब की मांग करने वाली लड़की हो या फिर भगवा फहरा कर नारे लगाने वाले व कुछ उत्पात मचाने वाले लोग हों। दोनों ही वो प्राणी हैं जिन्हें अनुशासन का डंडा नहीं पड़ा।

क्योंकि जब हम बचपन में होते हैं, तभी शिक्षक हमें सही-गलत और कर्त्तव्य पालन की शिक्षा देता है। हमेशा कर्त्तव्य अधिकार से पहले आते हैं। अगर हमें सही शिक्षा और संस्कार मिले हैं तो अधिकारों से पहले हमें यह सोचना होगा कि हमने कर्त्तव्य निर्वहन किया या नहीं। आजकल का जमाना सोशल मीडिया का जमाना है जहां कुछ भी ऐसा हो जाता है कि व्यक्ति को एहसास भी नहीं हो पाता कि ऐसा होना चाहिए था या नहीं। आजकल यह सोशल मीडिया हमारा पहचान पत्र बन गया है। हम क्या हैं, क्या नहीं, ये सब सोशल मीडिया से ही देखा और समझा जाता है। कई बार ये हमारे लिए हितकारी होता है, परंतु अधिकतर अहितकारी ही रहता है। इस प्रतियोगिता भरी दुनिया में जहां हमारा ज्ञान, टैलेंट सब जरूरी है, वहीं हमारे संस्कार, विचार, ये भी हमारी और समाज की ज़िंदगी को प्रभावित करते हैं। याद रखिए, आप कितने पढ़े हैं, आप किस बड़े शिक्षण संस्थान से हैं, आप किस बड़े कुल या जाति से हैं, इसका फर्क नहीं पड़ता। हमारे समाज के प्रति जो कार्य हैं, वही हमें महान बनाता है। हमें समाज में अगर सही आदर्श स्थापित करना है तो हमें मर्यादा और अनुशासन को ग्रहण करना होगा। इस प्रकार हो-हल्ले से आप एक दिन के लिए तो सुर्खियों में आ सकते हो, परंतु आपका जीवन कभी आदर्श नहीं हो सकता। किसी भी विद्यालय परिसर की अपनी मर्यादाएं हैं और उन्हें भंग करने वाला दंड का पात्र है।

शिक्षा का मतलब सिर्फ डिग्रियां हासिल करना हो गया है। इसलिए आज हमें ऐसे छात्र मिल रहे हैं जो साक्षर तो हैं, परंतु शिक्षित नहीं। उनको यह पता है कि हमें क्या कहना है, क्या करना है, क्या पहनना है, परंतु उन्हें यह पता नहीं कि कैसे कहना है, कैसे पहनना है, कैसे करना है? बस यही फर्क होता है साक्षर और शिक्षित में। यह पतन तब शुरू हुआ जब स्कूल और शिक्षकों को बांध दिया गया एक दायरे में। शिक्षक को एक वेतनभोगी कर्मचारी बता दिया गया, जो सिर्फ पढ़ाने के लिए रखा है तो शिक्षक ने भी सिर्फ पढ़ाना शुरू किया क्योंकि ज्ञान देने के लिए तो उसे रोक दिया गया। क्योंकि ज्ञान हमारी प्राचीन विरासत है जो अपने आप में सम्पूर्ण शिक्षा का सागर है जिसमें विचार से व्यवहार तक का समायोजन है। आज हमें ऐसी शिक्षा पद्धति की जरूरत है जहां ऐसे धार्मिक उन्माद मचाने वाले शिक्षार्थी न हों, बल्कि ऐसे शिक्षार्थी हों जो देश हित के लिए तत्पर हों, अनुशासन और मर्यादा की अहमियत को समझें। हमें न ही ऐसे लोगों की आवश्यकता है जो अनुशासनहीन होकर गलत मांगें करें और न ही ऐसे लोगों की आवश्यकता है जो धर्म की आड़ में अपना एजेंडा बढ़ाने के लिए विरोध करें। हमें एक ऐसा समाज निर्माण करना है जहां का विद्यार्थी सिर्फ विद्यार्थी दिखे। इसलिए यह सिर्फ स्कूल ही नहीं, सभी परिवारों का भी कर्त्तव्य बनता है कि अपने बच्चों को धर्म की शिक्षा जरूर दें, परंतु धर्म का मतलब भी समझाएं। धर्म किसी को हानि नहीं पहुंचाता, धर्म वही है जो दूसरों का दर्द समझे। अतः हमें ऐसे कृत्यों से बचना चाहिए और एक शिक्षार्थी के नाते अनुशासन और मर्यादा की एक मिसाल कायम करनी चाहिए।

स्वामी प्रकाशक एवं मुद्रक प्रवीण कुमार सिंह द्वारा आला प्रिंटिंग प्रेस 3636 कटारा दिना बेग लाल कुआं, दिल्ली.... से मुद्रित एवं, ब्लॉक नं. 23 मकान नं. 399 त्रिलोकपुरी दिल्ली....91 से प्रकाशित संपादक -प्रवीण कुमार सिंह टेलीफोन नं. 011.22786172 फैक्स नं. 011.22786172
RNI NO. DELHIN38334, E-mail:gauravashalibharat@gmail.com इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के पीआरबी एट के तहत

सार समाचार

सपा और भाजपा पर बरसीं मायावती, बोलीं- इन पार्टियों को सत्ता में आने से रोकना होगा

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में विधानसभा चुनाव के चलते राजनीतिक पार्टियों के बीच घमासान मचा हुआ है। इसी बीच बहुजन समाज पार्टी (बसपा) प्रमुख मायावती ने बुधवार को समाजवादी पार्टी (सपा) और भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) पर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि हमें उत्तर प्रदेश में सपा और भाजपा को सत्ता में आने से रोकना होगा। बसपा प्रमुख ने कहा कि सपा सरकार के दौरान गुंडे, अपराधी, माफिया, दंगा करने वाले और असामाजिक तत्व दंगा चला रहे थे। यहां तक कि विकास कार्य भी केवल एक विशेष क्षेत्र और विशेष समुदाय तक ही सीमित थे। उन्होंने कहा कि हमें यूपी में सपा और भाजपा को सत्ता में आने से रोकना होगा। भाजपा सरकार अपनी जातिवादी और पूंजीवादी नीतियों और आरएसएस के संकीर्ण सोच वाले एजेंडे को लागू करने में व्यस्त है। धर्म के नाम पर नफरत और तनाव का माहौल है। इससे पहले उन्होंने आरोप लगाया था कि सपा की तरह भाजपा सरकार की भी दलितों, एवं अन?य पिछड़े वर्गों संतों, गुरुओं और इनके महापुरुषों के प्रति जातिवादी मानसिकता साफ झलकती है, इसलिए चुनाव में सपा के साथ-साथ भाजपा को भी सत्ता में आने से जरूर रोकना होगा।

केजरीवाल खालिस्तानी समर्थक, सत्ता के लिए किसी भी हद तक जा सकते : कुमार विश्वास

नई दिल्ली । आम आदमी पार्टी के पूर्व नेता और कवि कुमार विश्वास ने मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल पर गंभीर आरोप लगाया हैं। उन्होंने कहा कि केजरीवाल खालिस्तानी समर्थक हैं।इतना ही नहीं सत्ता की लालच में किसी भी हद तक जा सकते हैं। दरअसल, पंजाब में 117 सीटों के लिए विधानसभा चुनाव होने वाले हैं। इस लेकर सियासी घमासान तेज हो चुका है। कवि कुमार विश्वास ने कहा कि उन्हें समझना चाहिए वहां पंजाब एक राज्य नहीं बल्कि एक भावना है। मैं हमेशा कहता हूं कि पूरी दुनिया में पंजाबियत एक भावना है। इसके बाद मैंने उससे कहा था कि अलगाववादियों का साथ मत ले, उस पर उन्होंने कहा था कि नहीं-नहीं हो जाएगा और उन्होंने इसका फॉर्मूला भी बताया था। कुमार विश्वास ने कहा कि केजरीवाल ने मुझसे कहा था कि वह या तो पंजाब का मुख्यमंत्री बनेगा या फिर आजाद राष्ट्र का पहला प्रधानमंत्री बनूंगा।उस किसी भी कीमत पर सत्ता चाहिए। पंजाब विधानसभा चुनाव को लेकर आप ने अपनी पूरी ताकत झोंक दी है। वहीं केजरीवाल ताबड़तोड़ रैलियां कर रहे हैं। आपको बता दें कि 117 सीटों के लिए 20 फरवरी को मतदान होगा। जबकि 10 मार्च को चुनाव परिणाम सामने आएंगे।

प्रयागराज में माघी पूर्णिमा पर 4.50 लाख लोगों ने किया गंगा स्नान

प्रयागराज । संगम नगरी प्रयागराज में माघ मेला के पांचवें स्नान पर्व माघी पूर्णिमा के मौके पर बुधवार को सुबह 11 बजे तक लगभग 4.50 लाख लोगों ने गंगा और संगम में स्नान किया। प्रयागराज मेला प्राधिकरण के अधिकारी ने बताया कि सुबह से ही श्रद्धालुओं का संगम क्षेत्र में आना जारी है। पूर्वाह्न 11 बजे तक करीब 4.50 लाख लोगों ने गंगा और संगम में डुबकी लगाई, जिसमें बच्चे, बुजुर्ग और महिलाएं शामिल हैं। माघी पूर्णिमा स्नान के साथ कल्पवासियों का एक माह का कल्पवास (संगम के तट पर रहकर वेदाध्ययन और ध्यान एवं पूजा करना) बुधवार को पूरा हो गया और उन्होंने मेला क्षेत्र से अपने घरों के लिए प्रस्थान शुरू कर दिया है।

माघी पूर्णिमा का मुहूर्त रात्रि 10:25 बजे तक है और लोगों के देर शाम तक गंगा स्नान करने की संभावना है। माघ मेला क्षेत्र में शिविर के आयोजक ने बताया कि माघ मास की पूर्णिमा को धर्म ग्रंथों में माघी पूर्णिमा कहा गया है और इस दिन गंगा स्नान कर विष्णु भगवान की पूजा करने और इसके पश्चात पितरों का श्राद्ध करने का विधान है।पुलिस के आला अधिकारी ने बताया कि माघ मेला के अंतिम स्नान पर्व माघी पूर्णिमा पर माघ मेला क्षेत्र में पुलिस की चाक चौबंद व्यवस्था की गई है। लगभग 5,000 पुलिसकर्मियों को तैनात कर 150 से अधिक सीसीटीवी कैमरे लगाए गए हैं। उन्होंने बताया कि आग के खतरों से निपटने के लिए दमकल की कई गाड़ियां और लोगों को पानी में डूबने से बचाने के लिए 108 गोताखोरों की टीम तैनात की गई हैं। इसके अलावा एकीकृत कमान नियंत्रण केंद्र से भीड़ पर नजर रखी जा रही है। पुलिस अधीक्षक (माघ मेला) राजीव नारायण मिश्र ने बताया कि माघ मास समाप्त होने के बाद कल्पवासियों की सुगम एवं सुरक्षित वापसी सुनिश्चित करने के लिए 15 फरवरी की रात्रि 12 बजे से 17 फरवरी को रात्रि 10 बजे तक संगम क्षेत्र में प्रशासनिक एवं एंबुलेंस को छोड़कर सभी प्रकार के वाहनों का आवागमन प्रतिबंधित किया गया है।

बच्चों की सुरक्षा को लेकर नियमों में बदलाव,बाइक की स्पीड 40 किलोमीटर से ज्यादा नहीं

नई दिल्ली । अगर आप बच्चों को आगे या पीछे बैठाकर बाइक चलाते हैं, तब ये खबर आपके लिए बहुत जरूरी है। सड़क परिवहन व राजमार्ग मंत्रालय ने बच्चों की सुरक्षा के लिए नियमों में बदलाव किया है। दरअसल, मोदी सरकार ने बच्चों को बाइक पर बैठाने के नियमों को पहले से अधिक सुरक्षित किया है।यह नियम नहीं मानने पर भारी जुमार्ना लगेगा। सड़क परिवहन व राजमार्ग मंत्रालय के मुताबिक, 15 फरवरी 2022 को इसके लिए अधिसूचना जारी कर दी गई है। यह नियम अगले साल यानी 15 फरवरी 2023 से लागू होगा। फिलहाल इस नियम में जुमार्ने की राशि तय नहीं है।अधिसूचना में बताया गया है कि इस नियम के लिए जुमार्ने की राशि राज्य सरकारें खुद तय करे।

नए प्रस्ताव के मुताबिक, 4 साल तक के बच्चे को बाइक पर पीछे बैठाकर ले जाते समय बाइक, स्कूटर, स्कूटी जैसे दोपहिया वाहन की स्पीड लिमिट 40 किमी प्रति घंटे से ज्यादा नहीं होनी चाहिए।दोपहिया वाहन चालक पीछे बैठने वाले 9 महीने से 4 साल तक के बच्चे को क्रैश हेलमेट पहनना जरूरी होगा।मोटरसाइकिल चालक यह सुनिश्चित करेगा कि 4 साल से कम उम्र के बच्चों को अपने साथ बाइक या स्कूटर पर बांधे रखने के लिए सेफ्टी हार्नेस का इस्तेमाल करेगा। सेफ्टी हार्नेस बच्चों को पहनाई जाने वाली जैकेट होती है, जिसके साइज को एडजस्ट होता है।ये बच्चे को राइडर से बांधे रखती है। सुरक्षा जैकेट से जुड़े फीते बच्चे को वाहन चालक के कंधों से जोड़े रखने का काम करते हैं। मंत्रालय ने प्रस्ताव पर आपत्ति और सुझाव भी मांगे थे।कार में बच्चों की सुरक्षा के लिए चाइल्ड लॉक सहित कई फीचर्स दिए जाते हैं।इन फीचर्स के द्वारा बच्चों की सुरक्षा सुनिश्चित की जाती है।

सीतापुर में बोले पीएम मोदी- भाजपा सरकार का मतलब गुंडाराज पर कंट्रोल, गरीबों और पिछड़ों के लिए कर रहे काम

सीतापुर (एजेंसी)

उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव को लेकर प्रचार अपने चरम पर है। आज प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सीतापुर पहुंचे थे। सीतापुर में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सबसे पहले संत रविदास को नमन किया और भाजपा सरकार की उपलब्धियां बताई प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि मेरे लिए ये खुशी की बात है कि मैं उस काशी का सांसद हूं जहां संत रविदास जी का जन्म हुआ। ये भी मेरा सौभाग्य है कि बनारस में उनके मंदिर परिसर के सौन्दर्यीकरण के पवित्र कार्य के लिए ईश्वर ने मुझे माध्यम बनाया। मुझे उस परिसर को सजाने का मौका मिला। उन्होंने कहा कि संत रविदास जी की प्रेरणा से हमारी सरकार सबका साथ-सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास के मंत्र पर चल रही है। हमारी योजनाओं के केंद्र में गरीब है, दलित-शोषित-पिछड़े-वंचितों का कल्याण है। सपा पर हमले करते हुए मोदी ने कहा कि 2017 से पहले यूपी में जिन्होंने सरकार चलाई उन्हें संत रविदास जी से कितनी चिढ़ रही है, ये यूपी के लोग अच्छे से जानते हैं। संत रविदास जी की प्रेरणा से हमारी सरकार सबका साथ-सबका विकास-सबका विश्वास और सबका प्रयास के मंत्र पर चल रही है।

पीएम मोदी ने कहा कि यूपी में भाजपा सरकार का मतलब है- गरीब के कल्याण के लिए निरंतर काम। यूपी में भाजपा सरकार का मतलब है- केंद्र की योजनाओं पर डबल स्पीड से काम। मोदी ने कहा कि यूपी में भाजपा सरकार होने का मतलब है, दंगाराज, माफियाराज, गुंडाराज पर बराबर कंट्रोल। यूपी में भाजपा सरकार होने का मतलब है, पूजा-पर्वों को मनाने की खुली स्वतंत्रता। यूपी में भाजपा सरकार होने का मतलब है, बहनों-बेटियों की मनचलों से सुरक्षा। उन्होंने कहा कि पूरे कोरोना काल में हमारा एक बात पर ध्यान केंद्रित रहा कि किसी गरीब के घर में ऐसा दिन नहीं आना चाहिए ताकि घर का चूल्हा ना जला हो। गरीब के घर में किसी को भूखा सोना न पड़ इसके लिए हम जागते रहे हैं। प्रधानमंत्री ने कहा कि गरीब का राशन जो पहले माफिया लूट लेता था, उसका एक-एक दाना आज गरीब के घर पहुंच रहा है। इस पूरे कालखंड में मेरा ये फोकस रहा कि किसी गरीब के घर में ऐसा दिन नहीं आना चाहिए, जिसमें उसके घर का चूल्हा न जले। गरीब को भूखा न सोना पड़े, इसके लिए हम जागते रहे हैं।

उन्होंने कहा कि सरकार ने इस पर 2 लाख 60 हजार करोड़ रुपये से ज्यादा खर्च कर रही है। गरीब भले ही किसी भी वर्ग का हो, दलित हो, पिछड़ा हो वो जानता है कि किसने संकट के समय साथ दिया और कौन संकट के समय लापता हो गया था, ये गरीब बराबर जानता है। विदेशों में कोरोना का टीका बहुत ज्यादा कीमतों पर लग रहा है। लेकिन भारत में भाजपा सरकार के लिए तिजोरी नहीं, देशवासियों की जिंदगी कीमती है। तिजोरी खाली कर देंगे, लेकिन टीका घर-घर पहुंचाकर

रहेंगे। ये काम हमने किया है। मोदी ने कहा कि इस कोरोना काल में गरीबों को आयुष्मान भारत योजना का भी बहुत लाभ मिला है। जो गरीब पहले अच्छे अस्पताल में इलाज की सोच भी नहीं सकता था, आज वो वहां मुफ्त इलाज करा रहा है।

देश के प्रधानमंत्री ने कहा कि मैं आपकी तरह ही एक गरीब परिवार से आया हूं। मैंने गरीबी के भाषण नहीं सुने, मैं गरीबी जी कर आया हूं। गरीब की जिंदगी क्या होती है, इससे गुजरकर मैं आपके बीच पहुंचा हूं। उन्होंने कहा कि डबल इंजन की सरकार डबल शक्ति से यूपी को उत्तम प्रदेश बनाने के लिए, गरीब को सशक्त बनाने के लिए काम कर रही है। गरीब, पिछड़े, दलित भाई-बहनों का सपना था कि उनके पास भी अपना घर हो। भाजपा सरकार ने 5 साल में यूपी में 34 लाख पक्के घर बनाकर गरीबों को दिए हैं।

केजरीवाल जी को आकलन बंद कर देना चाहिए: सीएम चरणजीत चन्नी

नई दिल्ली (एजेंसी)

पंजाब के मुख्यमंत्री चरणजीत सिंह चन्नी ने आम आदमी पार्टी के संयोजक और दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के पंजाब में अपनी पार्टी आप की जीत के दावों पर तीखा जवाब दिया है। केजरीवाल द्वारा गलत भविष्यवाणियों की एक श्रृंखला का हवाला देते हुए चन्नी ने ट्वीट किया, 'मेरा राजनीतिक आकलन- अरविंद केजरीवाल जी को राजनीतिक आकलन करना बंद कर देना चाहिए।' चन्नी का यह आकलन केजरीवाल के उस ट्वीट के बाद आया है, जिसमें केजरीवाल ने भविष्यवाणी की थी कि चरणजीत सिंह चन्नी दोनों सीटों (भदौर और चमकौर साहिब) से हारने जा रहे हैं। केजरीवाल ने अपने ट्वीट में कहा था, 'मैं अभी धुरी में था। चन्नी साहिब, भगवंत (मान) धुरी में कम से कम 51,000 वोटों से जीत रहे हैं और आप दोनों सीटें हार रहे हैं।₹ आप के मुख्यमंत्री पद के उम्मीदवार भगवंत मान दक्षिण पंजाब के धुरी सीट से चुनाव लड़ रहे हैं। पिछले महीने उन्होंने मुख्यमंत्री चन्नी को वहां से सीधे चुनाव लड़ने की चुनौती दी थी। इस पर चन्नी ने कोई जवाब नहीं दिया था लेकिन आज उन्होंने आप प्रमुख को ट्वीट कर फटकार लगाई है। चन्नी ने ट्वीट किया है, ₹केजरीवाल जी, कम से कम 51,000 झूठ तो आप बोल ही चुके हैं। 2017 की तरह 10 मार्च को आपकी बातें गलत साबित हो जाएंगी। फिर उन्होंने केजरीवाल की भविष्यवाणियों वाले ट्वीट का एक कोलाज भी पोस्ट किया, जिसमें 2014 में वाराणसी से गुजरात के तत्कालीन मुख्यमंत्री नरेंद्र मोदी की हार की उनकी भविष्यवाणी भी शामिल है। केजरीवाल, जिन्होंने उनके खिलाफ चुनाव लड़ा था और भारी हार गए थे, ने चुनाव से कुछ हफ्ते पहले 26 मार्च, 2014 को ट्वीट किया था वाराणसी में 2 दिनों के बाद मेरा राजनीतिक आकलन- मोदी जी वाराणसी हार रहे हैं, इसलिए उन्हें वडोदरा पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। चन्नी ने जो कोलाज ट्वीट किया है, उसमें केजरीवाल ने लिखा है कि 2014 में यानी उसी वर्ष लोकसभा चुनाव में दिल्ली की सात में से छह सीटें आप जीतेगी। इसके अलावा केजरीवाल ने 2017 में यह भी आकलन किया था कि अमरिंदर सिंह पंजाब चुनावों में दोनों सीट हार जाएंगे।चन्नी ने अपने कोलाज में केजरीवाल के 2019 का ट्वीट भी शामिल किया है, जिसमें आप नेता ने दिल्ली की सात संसदीय सीटों में से पांच आप को मिलने की भविष्यवाणी की थी। बहरहाल, केजरीवाल की आप इस सप्ताह होने वाले विधान सभा चुनावों में पंजाब की सत्तारूढ़ कांग्रेस सरकार के लिए बड़ी चुनौती बनकर उभरी है। रविवार को दिल्ली के मुख्यमंत्री ने दावा किया था कि चन्नी जिन सीटों पर चुनाव लड़ रहे हैं, उन पर उनकी पार्टी ने टेलीपोल किया है। उन्होंने कहा था, "हमने तीन बार सर्वे किया है, चन्नी साहब दोनों सीटों से हार रहे हैं। 2017 के चुनाव में आप ने 20 सीटें जीती थीं, जो कांग्रेस के बाद दूसरे स्थान पर रही। कांग्रेस ने राज्य की 117 सीटों में से 77 सीटें जीती थीं। चुनाव 20 फरवरी को होंगे और मतगणना 10 मार्च को होगी।

दिल्ली पुलिस के 75वें स्थापना दिवस पर जवानों ने हर मुश्किल का सामना डटकर किया : अमित शाह

नई दिल्ली (एजेंसी)

दिल्ली पुलिस अपना 75वां स्थापना वर्ष मना रही है। इस मौके पर गृहमंत्री अमित शाह ने दिल्ली पुलिस की परेड को देखा। 75 साल से दिल्ली को न सिर्फ सुरक्षित रखा बल्कि बदलते वक्त के साथ खुद को भी बदला, जिसकी झलकी परेड में साफ नजर आई। साथ ही दिल्ली पुलिस के 79 उन जवानों को श्रद्धांजलि दी गई, जिन्होंने कोरोना काल में अपनी जान गंवाई। इन पुलिसकर्मियों ने फ्रंट लाइन पर रहकर दिल्लीवासियों की रक्षा की, उनके परिवार को नमन करता हूं। दिल्ली पुलिस के इस कृत्य पर पूरे देश में वो रोल मॉडल बन गए हैं। प्रधानमंत्री मोदी ने आजादी के अमृत महोत्सव में कई लक्ष्य रखे हैं। शाह बोले- 75 सालों में जिन भी पुलिसकर्मियों ने अपनी जान गंवाई उनका परिचय देश के युवाओं से करवाया जाए ये हमारी सरकार का लक्ष्य है। ये 75वां दिवस हमारे लिए संकल्प के रूप में है और हम अपने देश को मजबूत, शिक्षित, स्वस्थ बनाने के लिए देश के 130 करोड़ लोगों ने संकल्प लिया है। दिल्ली पुलिस अपना 75 वां जन्मदिन बना रही है और देश भी आजादी का अमृत दिवस बना रहा है। 75वें स्थापना दिवस पर दिल्ली पुलिस का नया स्वरूप नजर आ रहा है। आठ दशकों में दिल्ली पुलिस ने सभी चुनौतियों को स्वीकार किया है और अपने को लगातार बदला है।

कचरे से बनी बायो-सीएनजी से दौड़ेंगी 400 बसें, जानिए एशिया का सबसे बड़ा प्लांट के बारे में

इंदौर (मध्यप्रदेश)। (एजेंसी)

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी देश के सबसे स्वच्छ शहर इंदौर में 19 फरवरी को जिस बायो-सीएनजी संयंत्र का उद्घाटन करने वाले हैं, उसमें बने पर्यावरण हितैषी ईंधन से हर रोज करीब 400 सिटी बसें (शहरी लोक परिवहन वाहन) दौड़ाने की योजना बनाई गई है। प्रधानमंत्री की ऑनलाइन मौजूदगी में होने वाले उद्घाटन समारोह की तैयारियों में जुटे इंदौर नगर निगम (आईएमसी) के अधिकारियों ने बुधवार को यह जानकारी दी। अधिकारियों ने बताया कि आईएमसी के देवगुराड़िया ट्रेंचिंग ग्राउंड पर 15 एकड़ में फैले बायो-सीएनजी संयंत्र सार्वजनिक-निजी भागीदारी (पीपीपी) के तहत एक निजी कंपनी के लगभग 150 करोड़ रुपये के निवेश से स्थापित किया गया है। गौरतलब है कि इस संयंत्र को आईएमसी द्वारा दक्षिण एशिया में अपनी तरह की सबसे बड़ी बायो-सीएनजी इकाई बताया जा रहा है। उन्होंने बताया कि यह संयंत्र हर दिन 550 टन गीले कचरे (फल-सब्जियों और कच्चे मांस का अपशिष्ट, बचा या बासी भोजन, पेड़-पौधों की हरी पत्तियों, ताजा फूलों का कचरा आदि) से करीब 19,000 किलोग्राम बायो-सीएनजी बना सकता है और इस ईंधन का एक हिस्सा शहर में 400 सिटी बसों में इस्तेमाल किया जाएगा। अधिकारियों ने बताया कि ये बसें फिलहाल डीजल से चल रही हैं और इन वाहनों को चरणबद्ध तरीके से बायो-सीएनजी चलित बसों में बदला जाएगा। उन्होंने बताया कि शहर में पहले चरण के दौरान 55 बायो-सीएनजी बसें इसी महीने चलाई जाएंगी। अधिकारियों के मुताबिक बायो-सीएनजी संयंत्र में आईएमसी के खजाने से कोई पूंजी नहीं लगाई गई है, बल्कि इसे गीला कचरा मुहैया कराने के बदले निजी कंपनी की ओर से शहरी निकाय को हर साल 2.5 करोड़ रुपये का प्रीमियम प्रदान किया जाएगा।

राजनाथ ने मोदी को बताया सच्चा समाजवादी, कहा- मोदी ने इस बात की चिंता की कि कोई भूखा ना सोए

नई दिल्ली (एजेंसी)

उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव को लेकर राजनीतिक सरगर्मियां तेज है। चुनाव प्रचार भी अपने चरम पर है। इन सब के बीच आज रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने भी उत्तर प्रदेश के कानपुर में चुनावी सभा को संबोधित किया। इस दौरान राजनाथ सिंह ने अखिलेश यादव और समाजवादी पार्टी पर जमकर निशाना साधा। राजनाथ सिंह ने कहा कि समाजवादी पार्टी केवल कहने को समाजवादी है, समाजवाद इन्हें छू तक नहीं गया। समाजवादी वो होता है जो आम जनता के भय और भूख का समाधान कर सके। उन्होंने कहा कि यह काम तो केवल भाजपा ने किया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस बात की चिंता की कि कोई गरीब भूखा न सोए, इसके लिए उन्होंने 80 करोड़ गरीबों को मुफ़्त राशन दिया।

राजनाथ सिंह ने कहा कि भाजपा जो कहती है वह करती है। हम आपके भरोसे को टूटने नहीं देंगे। उन्होंने काह कि पहले यूपी में कट्टा चलता था। अब उत्तर प्रदेश की धरती पर कट्टे नहीं आधुनिक एके 203 और ब्रह्मोस missile बनेंगे। इसके साथ ही देश के रक्षा

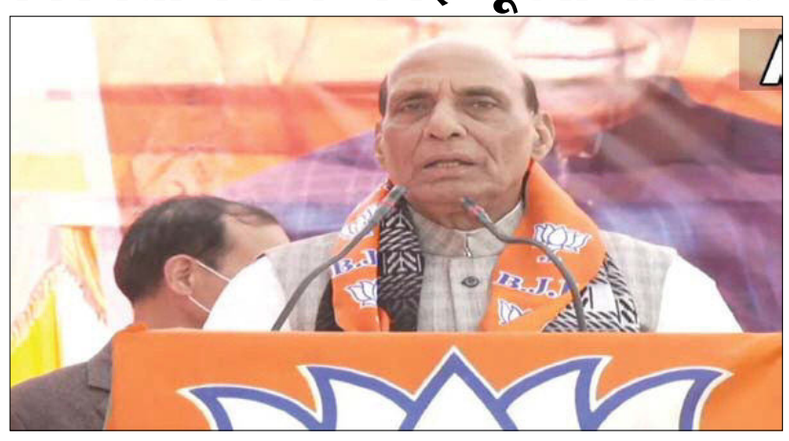

मंत्री ने कहा कि भाजपा सरकार ने सामान्य वर्ग के गरीबों को भी 10 प्रतिशत आरक्षण की सुविधा दी है। ओबीसी कमीशन को संवैधानिक दर्जा देने का भी काम भी हमारी ही सरकार ने किया। उन्होंने कहा कि दूसरी सरकारों ने कानपुर का कपड़ा उद्योग तबाह किया, चमड़ा उद्योग खतरे में डाला। आज हमारी सरकार कानपुर में मेगा लेदर पार्क बना रही है।

अपने बयान में राजनाथ ने कहा कि हमारी सरकार कैंट में रहने वाले लोगों की समस्याएँ को समझती है। हम जल्द ही कैंटोनमेंट ऐक्ट में संशोधन करेंगे। राजनाथ सिंह ने कहा, 'हम आपका भरोसा नहीं तोड़ेंगे। हमने वही किया जो हमने कहा था। सीएम योगी 'माफिया' के खिलाफ कड़ी कार्रवाई कर रहे हैं। आपको बता दें कि उत्तर प्रदेश चुनाव 7 चरणों में हो रहे हैं। दो चरण के चुनाव हो चुके हैं। तीसरे चरण में यादव बेल्ट और बुंदेलखंड के कुछ इलाकों में चुनाव होने है। भाजपा और समाजवादी पार्टी के बीच कांटे की टक्कर है। भाजपा की ओर से लगातार चुनाव प्रचार किया जा रहा है। उत्तर प्रदेश चुनाव के नतीजे 10 मार्च को आएंगे।

राहुल गांधी मुझे आतंकवादी कहते हैं 20 तारीख को पता चल जाएगा : अरविंद केजरीवाल

नई दिल्ली (एजेंसी)

आम आदमी पार्टी के संयोजक और दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने कहा है कि कांग्रेस नेता राहुल गाँधी उन्हें आतंकवादी कहते हैं, लेकिन 20 फरवरी को उन्हें पता चल जाएगा। पंजाब में पार्टी के मुख्यमंत्री पद के उम्मीदवार भगवंत मान के साथ एक साझा प्रेस कॉन्फ्रेन्स में मोहाली में उन्होंने राहुल गांधी पर हमला बोला और कहा कि कांग्रेस नेता अब की भाषा बोल रहे हैं उनके साथ भगवंत मान ने कहा कि राहुल गांधी ने बहुत ही खतरनाक बयान दिया कि अगर पंजाब में कांग्रेस की सरकार ना बनी तो पंजाब में आग लग जाएगी। केजरीवाल ने कहा, ₹कांग्रेस ने 5 साल में पंजाब का माहौल खराब कर दिया है, हम आपको आश्वासन देते हैं, आप की सरकार शांति और भाईचारा कायम करेगी प्रेस कॉन्फ्रेन्स से पहले दोनों नेताओं की मौजूदगी

में अमृतसर के सिटिंग मेयर ने आम आदमी पार्टी ज्वाइन की है। इसका जिक्र करते हुए केजरीवाल ने कहा कि अमृतसर को वर्ल्ड आइकॉन सिटी बनाने पर काम करेंगे। केजरीवाल ने कहा, ₹पंजाब का व्यापारी डरा हुआ है। बस बीस दिन और रह गए। उसके बाद आप बेखौफ व्यापार कर सकेंगे। पंजाब से पर्चा राज बंद करेंगे। पंजाब में पर्चा राज है। लोग बात करने से डर रहे हैं। पुराने झूठे पर्चे केंसिल किये जाएंगे। पंजाब में पर्चा राज बंद करेंगे। व्यापारियों के मन से डर दूर किया जाएगा उन्होंने कहा, ₹पंजाब के व्यापारी कांग्रेस के वोटर हैं। आप को मौका दें सारे मसले हल करेंगे। व्यापारियों को हिस्सा बनाएंगे। अगर हमारे मंत्री या विधायक ने व्यापारियों को परेशान किया तो उनके खिलाफ एक्शन लेंगे। आप नेताओं ने प्रियंका गांधी पर भी निशाना साधा। भगवंत मान ने कहा कि 'प्रियंका गाँधी यूपी से आती हैं' इस पर अरविंद केजरीवाल ने कहा, 'वो भी तो भैया हो गयीं हैं।

भाजपा पर आक्रामक हुए केसीआर तो उद्धव ठाकरे

मुंबई । इन दिनों तेलंगाना के मुख्यमंत्री के चंद्रशेखर राव भाजपा और केंद्र सरकार पर आक्रामक हैं। बीते दिनों उन्होंने राहुल गांधी का समर्थन करने के लिए सर्जिकल स्ट्राइक का सबूत भी मांग लिया। अब महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे ने भी फोन करके केसीआर से बात की और अपना समर्थन दिया है। उन्होंने नेशनल डेमोक्रेटिक अलायंस के खिलाफ एकजुट होने में पूरा सहयोग करने की बात कही है। इससे पहले केसीआर ने कहा था कि वह उद्धव ठाकरे से मिलने मुंबई जाएंगे। शिवसेना का कहना है कि फरवरी के आखिरी तक तेलंगाना के सीएम मुंबई आ सकते हैं और वह निश्चित तौर पर सीएम उद्धव ठाकरे से मुलाकात करेंगे। पार्टी के एक सीनियर नेता ने बताया कि ठाकरे ने फोन करके तेलंगाना के मुख्यमंत्री से बात की। उन्होंने कहा, केंद्र के खिलाफ क्षेत्रीय दलों को एकजुट करने के प्रयास को उद्धव ठाकरे ने समर्थन दिया। उन्होंने कहा कि देश के संघीय ढांचे को बचाने केलिए सभी राज्यों को एकजुट होना चाहिए और साथ मिलकर लड़ाई लड़नी चाहिए। शिवसेना के वरिष्ठ नेता संजय राउत ने कहा कि केसीआर का यह कदम सराहनीय और महत्वपूर्ण है। इससे भारतीय जनता के खिलाफ मजबूत विकल्प खड़ा हो सकता है। उन्होंने यह भी कहा कि भाजपा के लोग महाराष्ट्र की सरकार को अस्थिर करने का विचार कर रहे हैं। कई लोग कह रहे हैं कि 10 मार्च के बाद यह सरकार गिर जाएगी और इस काम के लिए एजेंसियों का इस्तेमाल किया जा रहा है। राउत ने कहा, '2024 से पहले राष्ट्रीय स्तर पर एकजुट होना है और यह एक अच्छा प्रयास है। जल्द ही दोनों नेता मिलेंगे। उद्धव जी, शरद पवार, ममता बनर्जी, राहुल गांधी, प्रियंका जी, अखिलेश जी सभी नेता एक दूसरे के संपर्क में हैं।

मस्तराम की एक्ट्रेस को मिल रही हैं दुष्कर्म की धमकियां

इस मशहूर सिंगर के फैंस पर लगाए ये गंभीर आरोप

अपनी बोल्डनेस की वजह से हमेशा सुर्खियों में रहने वाली वेब सीरीज मस्तराम की अभिनेत्री केनिशा अवस्थी को धमकियां मिल रही हैं। उन्हें सोशल मीडिया पर दुष्कर्म की धमकियां मिल रही हैं और अश्लील मैसेज भेजे जा रहे हैं। इस बात की जानकारी खुद केनिशा अवस्थी ने सोशल मीडिया के जरिए दी है। केनिशा अवस्थी सोशल मीडिया काफी सक्रिय रहती हैं।

वह अक्सर अपने फैंस से जुड़े रहने के लिए खास तस्वीरें और वीडियो शेयर करती रहती हैं। केनिशा अवस्थी ने अपने आधिकारिक इंस्टाग्राम अकाउंट पर एक लंबा-चौड़ा पोस्ट शेयर किया है। इस पोस्ट के जरिए उन्होंने बताया है कि सिंगर और रैपर रफ्तार के फैंस उन्हें सोशल मीडिया पर धमकी भरे मैसेज कर रहे हैं। साथ ही उन्हें दुष्कर्म जैसे धमकियां भी दे रहे हैं।

केनिशा अवस्थी ने अपने पहले पोस्ट में लिखा, रफ्तार के फैंस मुझे कल से परेशान कर रहे हैं जबसे मैंने उनसे ऊपर एमीवे को चुना है। मुझे इन लोगों की साइबर क्राइम में रिपोर्ट करनी है। दोस्तों बताएं मैं क्या करूं रफ्तार के इन जंगली फैंस का। इसके बाद केनिशा अवस्थी ने एक और पोस्ट शेयर किया है। इस पोस्ट में उन्होंने लिखा, मैं उन दुष्कर्म और अश्लील मैसेज से बहुत परेशान हूं जो मेरे कमेंट सेक्शन और इन बॉक्स में आ रहे हैं।

इसके अलावा उन्होंने और भी ढेर सारी अपनी पोस्ट में कही हैं। गौरतलब है कि केनिशा अवस्थी बेहद बोल्ड अभिनेत्रियों में से एक हैं। वह अक्सर फैंस के लिए हॉट तस्वीरें और वीडियो भी शेयर करती रहती हैं। आपको बता दें कि केनिशा अवस्थी पहली बार वेब सीरीज हंसमुख में नजर आई थीं। इस सीरीज में उनके साथ अभिनेता वीर दास, रणवीर शौरी और रवि किशन जैसे कलाकार मुख्य भूमिका में थे।

इस वेब सीरीज के बाद केनिशा अवस्थी को ओटीटी प्लेटफॉर्म एमएक्स प्लेयर की सबसे बोल्ड वेब सीरीज मस्तराम में देखा गया है। इस सीरीज में उन्होंने टीचर मिस रिटा का किरादर निभाया था। वेब सीरीज मस्तराम में केनिशा अवस्थी ने कई बोल्ड सीन दिए थे। इसके बाद केनिशा अवस्थी वेब सीरीज रक्तांचल में दिखाई दी थीं। इस सीरीज में भी उनके बोल्ड अंदाज ने काफी सुर्खियां बटोरी थीं।

फरहान अख्तर और शिबानी दांडेकर की होगी मराठी रीति-रिवाज से शादी?

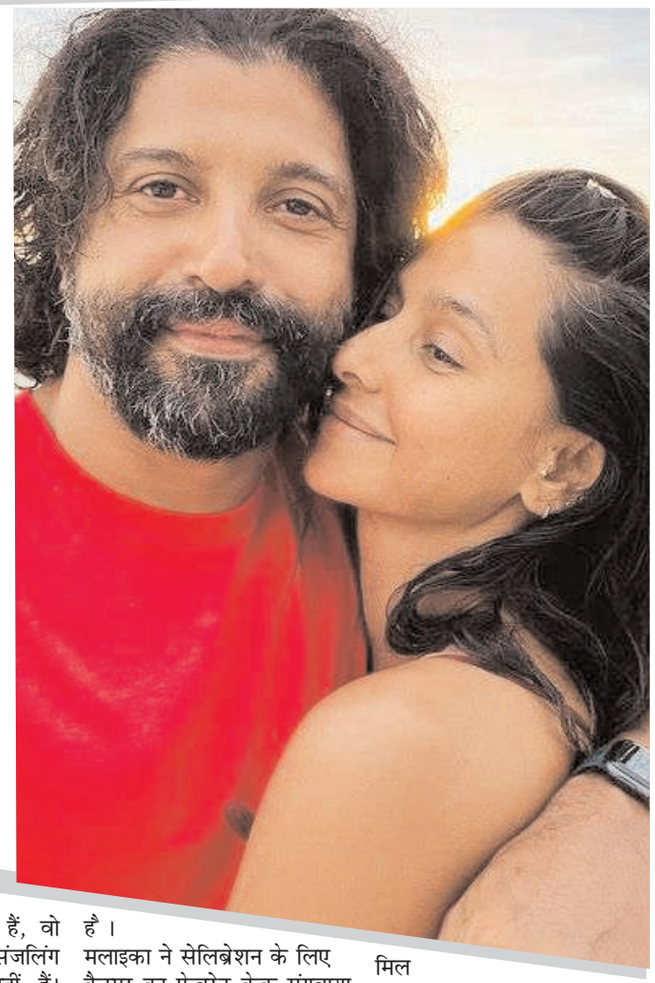

बॉलीवुड अभिनेता फरहान अख्तर और उनकी गर्लफ्रेंड शिबानी दांडेकर जल्द ही शादी के बंधन में बंधने वाले हैं। दोनों पिछले 3 साल से एक-दूसरे को डेट कर रहे हैं। इन दोनों की 21 फरवरी को सिविल सेरेमनी होने वाली है। लेकिन अब रिपोर्ट्स की माने तो सिविल सेरेमनी से पहले ये दोनों को महाराष्ट्रीयन रीति-रिवाजों के साथ शादी के बंधन में बंधने वाले है। इन दोनों की शादी फरहान अख्तर के खंडाला फार्म हाउस में शनिवार को होने वाली है। खबरों की माने तो इन दोनों की शादी काफी निजी होगी, जिसमें केवल उनके परिवार के सदस्य ही शामिल होंगे।

एक अखबार में छपी रिपोर्ट्स के मुताबिक 21 तारीख को सिविल शादी करने से पहले ये दोनों फरहान अख्तर के फार्म हाउस पर 19 फरवरी को मराठी रीति-रिवाज से शादी के बंधन में बंधेंगे। उनके करीबी सूत्रों की मानें तो फरहान अख्तर दांडेकर का परिवार इन दोनों की शादी को लेकर काफी सतर्क है। वह नहीं चाहते कि मीडिया किसी भी तरह से वेन्यू पर पहुंचें। इन दोनों की शादी में केवल उनके परिवार और करीबी लोगों को निमंत्रण भेजा गया है। हालांकि फरहान अख्तर और शिबानी दांडेकर की शादी के फंक्शन कैसे होंगे, यह अब तक क्लियर नहीं हो पाया है, लेकिन रिपोर्ट्स की मानें तो दोनों की मराठी रीति-रिवाज से शादी होगी।

रिपोर्ट्स की माने तो इन दोनों का परिवार 18 फरवरी की शाम को खंडाला के लिए रवाना होगा और इन दोनों की शादी का फंक्शन पूरे एक दिन तक चलने वाला है। खबर है कि शिबानी दांडेकर की बहन अनुषा दांडेकर और उनके करीबी दोस्तों ने बैचलर पार्टी और प्री-वेडिंग फंक्शन का जिम्मा अपने कंधों पर लिया है, जोकि 17 फरवरी और 18 फरवरी को होने वाले हैं। फरहान अख्तर और शिबानी दांडेकर पिछले तीन साल से एक-दूसरे को डेट कर रहे हैं। दोनों अपने प्यार का इजहार करने से बिलकुल भी नहीं कतराते हैं।

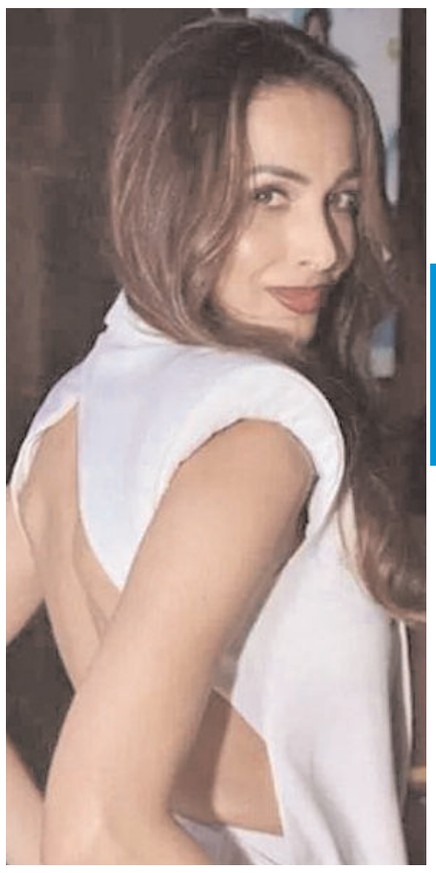

मलाइका अरोड़ा ने मनाया डॉगी 'कैस्पर' का बर्थडे हुईं ट्रोल, यूजर्स बोले- लोग भूखे मर रहे हैं और आप

मालइका अरोड़ा इंटरनेट सेंसेशन हैं, वो अक्सर अपनी हॉट और सिंजलिंग तस्वीरें शेयर करती रहतीं हैं। कभी कोई योगा पोज तो कभी न्यू लुक मलाइका अपने फैंस को किसी भी तरह इंगेज रखने का हुनर जानतीं हैं। सोशल मीडिया पर एक्ट्रेस को फॉलो करने वाले जानते हैं कि वो अपने पेट कैस्पर से कितना प्यार करतीं हैं। बुधवार को मलाइका ने अपने प्यारे कैस्पर का बर्थडे सेलिब्रेट किया और ट्रोल्स के निशाने पर आ गईं।

मलाइका अरोड़ा ने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर एक वीडियो शेयर किया। जिसमें उनके सामने एक केक है और बर्थडे बॉय हैं उनके प्यारे डॉगी कैस्पर। वीडियो में मलाइका को अपने डॉगी कैस्पर का 7वां बर्थडे सेलिब्रेट करते देखा जा सकता है ।

मलाइका ने सेलिब्रेशन के लिए कैस्पर का फेवरेट केक मंगवाया था और उन्हें गिफ्ट में भी उनका फेवरेट फ्लेवर दिया। इसके बाद मलाइका बड़े प्यार से कैस्पर को कहतीं हैं तुम सात साल के होग हो। इस दौरान मलाइका ने सफेद पोल्का डॉट टॉप पहना हुआ था। पोस्ट के कैप्शन में एक्ट्रेस ने लिखा, हैप्पी बर्थडे कैस्पर।

मलाइका के इस पोस्ट पर प्रतिक्रिया देते हुए, चंकी पांडे की पत्नी भावना पांडे ने लिखा, ÷हैप्पी बर्थडे कैस्पर !!! टू क्यूट,÷ एक दिल वाले इमोजी के साथ। कुछ ही घंटों में इस वीडियो पर लाखों लाइक्स आ गए। तो वहीं मलाइका को ट्रोल भी किया गया। एक यूजर ने लिखा, इस देश में कुछ बच्चों को खाने को नहीं मिल रहा, आप कुत्ते का बर्थडे मना रहीं हैं, शर्मनाक। तो वहीं एक और ने लिखा काफी लकी कुत्ता है।

कुछ दिनों पहले ही मलाइका अरोड़ा ने अपने बॉयफ्रेंड अर्जुन कपूर को वेलेंनटाइन डे पर काफी स्पेशल मैसेज दिया था। मलाइका ने अर्जुन के लिए अपने प्यार का इजहार रोमांटिक तरीके से किया। मलाइका ने अर्जुन कपूर के साथ एक स्पेशल पोस्ट शेयर किया, उन्होंने अर्जुन को हग करते हुए एक फोटो शेयर की। फोटो में अर्जुन मलाइका के माथे पर किस करते हुए नजर आ आईं। इस क्यूट फोटो को फैंस ने काफी पसंद किया।

संजय लीला भंसाली के साथ काम कर सपना पूरा हुआ : आलिया भट्ट

बॉलीवुड अभिनेत्री आलिया भट्ट का कहना है कि फिल्मकार संजय लीला भंसाली के साथ काम कर उनका सपना पूरा हो गया है। संजय लीला भंसाली के निर्देशन में बनीं फिल्म गंगूबाई काठियावाड़ी में आलिया भट्ट की मुख्य भूमिका है। इस फिल्म में आलिया, गंगूबाई काठियावाड़ी की भूमिका में नजर आयेगी। आलिया भट्ट ने कहा, संजय लीला भंसाली की हीरोइन बनना मेरा सपना था, गंगूबाई के कई इमोशनल सीन में मैं पर्सनली इमोशनल हुई हूं। मेरे लिए सबसे जरूरी बात यह थी कि मुझे संजय सर के साथ काम करना था। मैं हमेशा से चाहती थी कि मैं उनकी फिल्म की हीरोइन बनूं और वह मुझे निर्देशित करें। इसके साथ ही मुझे नई कहानी भी मिली। जिस तरह से गंगूबाई के किरदार को दिखाया गया है। मुझे ऐसा लगता है कि इस तरह के किरदार को इस तरह से पर्दे पर दिखाए हुए काफी समय बीत चुका है। मैं पूरी तरह से तैयार थी।

दीप सिद्धू के निधन से 'अंदर से टूटीं' गर्लफ्रेंड रीना राय, एक्टर के साथ रोमांटिक तस्वीरें शेयर कर कहा- 'तुम मेरे दिल की धड़कन हो'

पंजाबी फिल्मों में अपने अभिनय से लाखों दिलों को जीतने वाले दिग्गज और मशहूर अभिनेता दीप सिद्धू का हाल ही में निधन हो गया है। एक कार हादसे में उनकी जान चली गई। दीप सिद्धू की असमय हुई मौत से पंजाबी फिल्म इंडस्ट्री में शोक का माहौल है। कई सितारों ने सोशल मीडिया के जरिए उनके निधन पर शोक व्यक्त किया है। इतना ही नहीं दीप सिद्धू की गर्लफ्रेंड अभिनेत्री रीना राय उनके निधन से काफी हदमे में हैं।

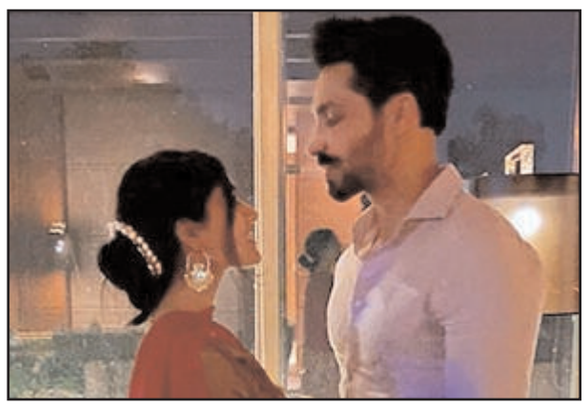

अब दीप सिद्धू के निधन के बाद पहली बार रीना राय ने सोशल मीडिया पर उनके लिए पोस्ट भावुक पोस्ट लिखा है। इस पोस्ट के जरिए उन्होंने अपना दर्द बयां किया है और लिखा है कि वह अंदर से मर चुकी हैं। रीना राय ने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर अपनी और दीप सिद्धू की कुछ रोमांटिक तस्वीरें शेयर की हैं। इन तस्वीरों को शेयर करते हुए उन्होंने दिवंगत अभिनेता के लिए खास पोस्ट लिखा है।

रीना राय ने अपनी पोस्ट में लिखा, %मैं टूट गई हूं और अंदर से मर गई हूं। प्लीज अपनी आत्मा के साथ वापस आ जाओ जो तुमने मुझे वादा किया था कि तुम मुझे पूरी जिंदगी कभी छोड़कर नहीं जाओगे। मैं तुमसे प्यार करती हूं मेरी जान। तुम मेरे दिल की धड़कन हो। जब मैं आज अस्पताल के बेड पर लेटी हुई थी तो मैं तुम्हें सुन रही थी जैसे तुम मेरे कान में आकर मुझे आई लव यू मेरी जान कह रहे हो।

रीना राय ने अपनी पोस्ट में आगे लिखा, तुम्हें पता है कि तुम मेरे साथ हमेशा रहोगे। हमने एक साथ अपने फ्यूचर की प्लानिंग की थी और अब तुम चले गए। सोलमेट्स एक-दूसरे को नहीं छोड़ते हैं और मैं आपको दूसरी तरफ देखूंगी जान।% सोशल मीडिया पर दीप सिद्धू के लिए लिखा रीया राय का यह दर्दभरा पोस्ट तेजी से वायरल हो रहा है। दोनों कलाकारो के फैंस उनकी पोस्ट पर कमेंट कर संवेदना व्यक्त कर रहे हैं।

आपको बता दें कि मंगलवार पंजाबी अभिनेता संदीप सिंह उर्फ दीप सिद्धू की सड़क हादसे में मौत हो गई है।

शुरू हुई अजय देवगन की फिल्म दृश्यम-2 की शूटिंग, सेट से सामने आई तस्वीर

अभिनेता अजय देवगन ने अपनी आगामी फिल्म दृश्यम 2 की शूटिंग गुरुवार से शुरू कर दी है। इसकी जानकारी खुद अजय देवगन ने सोशल मीडिया के जरिये फैंस को दी है और इसके साथ ही उन्होंने सेट से एक तस्वीर भी साझा की है। इस तस्वीर को साझा करते हुए अजय देवगन ने लिखा-क्या एक बार फिर विजय अपनी फैमिली को प्रोटेक्ट कर पाएगा? दृश्यम 2 की शूटिंग शुरू।

इस तस्वीर में अजय देवगन के साथ फिल्म की लीड ऐक्ट्रेस श्रिया सरन भी नजर आ रही हैं। ऐक्टर ने इस पोस्ट में बॉलिवुड एक्ट्रेस तब्बू को भी टैग किया है। यानी एक बार फिर तबू %दृश्यम% का हिस्सा बनने जा रही हैं। वहीं इस फिल्म में एक बार फिर से अभिनेत्री इशिता दत्त भी अजय देवगन के साथ स्क्रीन शेयर करती नजर आएंगी।

उल्लेखनीय है, साल 2013 में मलयालम में दृश्यम रिलीज हुई जिसमें सुपरस्टार मोहनलाल नजर आए। इस फिल्म को हिंदी में साल 2015 में सेम टाइटल के साथ रिलीज हुआ। यह एक क्राइम थ्रिलर फिल्म थी, जिसमें अजय देवगन लीड रोल में थे और उनके किरदार का नाम विजय सावरकर था। इस फिल्म की सफलता के बाद मेकर्स फिल्म के दूसरे भाग को बनाने पर काफी समय से विचार कर रहे थे।

दृश्यम 2 की शूटिंग फिलहाल मुंबई में चल रही है। इसके बाद इसके अगले शेड्यूल को गोवा में शूट किया जायेगा। इस फिल्म को भूषण कुमार, कुमार मंगत पाठक, अभिषेक पाठक और कृष्णा कुमार संयुक्त रूप से प्रोड्यूस करेंगे। वहीं फिल्म का निर्देशन अभिषेक पाठक कर रहे हैं।

एक बार फिर से आयशा शर्मा ने पार की बोल्डनेस की हदें, इतनी छोटी ड्रेस में शेयर की बेहद हॉट तस्वीर

आयशा शर्मा बॉलीवुड की बोल्ड अभिनेत्रियों में से एक हैं। आये दिन सोशल मीडिया पर उनकी हॉट और बोल्ड तस्वीरें छाई रहती हैं। आयशा शर्मा के फैंस उनकी तस्वीरें और वीडियो को खूब पसंद भी करते रहते हैं। अब एक बार फिर से वह अपनी हॉट और बोल्ड तस्वीर को लेकर सुर्खियों में आ गई हैं, जो सोशल मीडिया पर जमकर वायरल हो रही है।

आयशा शर्मा ने सोशल मीडिया पर अपनी बेहद बोल्ड तस्वीर शेयर की है। वह सोशल मीडिया पर काफी सक्रिय रहती हैं। आयशा शर्मा अपने फैंस से जुड़े रहने के लिए अक्सर खास तस्वीरें और वीडियो भी शेयर करती रहती हैं। उन्होंने अपने आधिकारिक इंस्टाग्राम अकाउंट पर अपनी एक तस्वीर शेयर की है। इस तस्वीर में आयशा शर्मा का हॉट और बोल्ड लुक देखने को मिल रहा है।

तस्वीर में आयशा शर्मा ने ग्रे कलर की ब्रालेट पहनी है। साथ ही अपने बालों को खोला हुआ है। तस्वीर में आयशा शर्मा हाथ ऊपर कर होल्ड अंदाज में तस्वीर क्लिक करवा रही हैं। तस्वीर में उनका हॉट और बोल्ड अंदाज देखती ही बन रहा है। कई सोशल मीडिया यूजर्स उनकी तस्वीरों को खूब पसंद कर रहे हैं। साथ ही कमेंट कर अपनी प्रतिक्रिया दे रहे हैं। वर्कफ्रंट की बात करें तो आयशा शर्मा ने अभी तक बॉलीवुड फिल्म सत्यमेव जयते में ही मुख्य भूमिका अदा की है।

चेहरे से लेकर पैर तक बुरी तरह घायल नजर आईं सनी लियोनी!

बॉलीवुड फिल्म इंडस्ट्री की हॉट एक्ट्रेस सनी लियोनी सोशल मीडिया पर सबसे ज्यादा एक्टिव रहने वाले सितारों में से एक हैं। काम के साथ सनी अपने फैंस के साथ जुड़े रहने का एक भी मौका हाथ से जानें नहीं देती हैं। वहीं सोशल मीडिया पर अपनी प्रोफेशनल लाइफ से जुड़े पोस्ट से लेकर पर्सनल लाइफ तक की फोटोज़ शेयर करने में सनी कभी पीछे नहीं हटती हैं। यही नहीं सनी अपने प्रोफेशनल लाइफ से जुड़े पोस्ट भी फैंस के साथ शेयर करते रहते हैं। इसी बीच सनी के इस वीडियो ने फैंस को हैरान कर दिया है। उनका ये वीडियो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है। इस वीडियो में उनके शरीर पर कई सारे चोट के निशान दिखाई दे रहे हैं।

सनी लियोनी ने अपने इंस्टाग्राम आकउंट पर एक वीडियो पोस्ट किया है। इस वीडियो में आप देख सकते हैं कि उनके फेस से लेकर पैरों तक काफी चोट दिखाई दे रही है। सनी की जींस फटी हुई है और घुटने में काफी गहरी चोट दिख रही है। वहीं उनकी जींस पर खून साफ दिखाई दे रहा है। इस दौरान उनके साथ एक महिला भी नजर आ रही है। इस वीडियो को देखने के बाद हर कोई हैरान नजर आ रहा है। अगर आप भी सनी के इस वीडियो को देखकर परेशान है तो हम आपको बता दें कि सनी पूरी तरह से ठीक हैं। ये सारी नकली हैं। इस वीडियो को शेयर करते हुए सनी ने कैप्शन में लिखा है, कुछ रोमांचक जल्द ही आ रहा है! इस कैप्शन से साफ पता चल रहा है कि ये उनके किसी आने वाले प्राजेक्ट का हिस्सा है।

बप्पी लहरी के निधन से शोक में डूबे अमिताभ बच्चन, दिग्गज गायक के साथ अपनी इस मुलाकात किया याद

अपने शानदार संगीत और गानों से लाखों फैंस को नचाने वाले दिग्गज गायक बप्पी लहरी अब इस दुनिया में नहीं रहे। मंगलवार रात को उन्होंने मुंबई के जुहू स्थित सिटी अस्पताल में आखिरी सांस ली थी। उनके निधन से पूरी फिल्म इंडस्ट्री में शोक का माहौल है। कई फिल्मी सितारों ने बप्पी लहरी के निधन पर शोक जताया है। वहीं बॉलीवुड के मेगास्टार अमिताभ बच्चन उनके निधन से हैरान हैं।

बप्पी लहरी के अंतिम संस्कार पर अमिताभ बच्चन ने न्यूज एजेंसी पीटीआई से बातचीत की। इस दौरान उन्होंने दिग्गज गायक के निधन पर शोक जताया है। बिग बी ने बप्पी लहरी के निधन पर कहा, यह काफी हैरान कर देने वाला है कि असाधारण म्यूजिक डायरेक्टर बप्पी लहरी का निधन हो गया है। समय की तेजी से गुजरने वाली इन घटनाओं से हैरान हूं। फिल्मों में उनके गाने मेरे लिए और सभी के लिए शाश्वत रहेंगे। उन्होंने नई पीढ़ी को समय के साथ कई शानदार गाने दिए थे।

अमिताभ बच्चन ने बप्पी लहरी के साथ लंदन में हुई अपनी एक मुलाकात को याद करते हुए कहा, एक बार उन्होंने मुझसे कहा था कि आपकी यह फिल्म काफी सफल होने वाली और मैंने जो गाना दिया है वह सालों तक याद किया जाएगा। वह सही थे... और उनके घर पर कुछ रिहर्सल से बहुत सीखा। धीरे-धीरे वह सब हमें छोड़ रहे हैं। इसके अलावा अमिताभ बच्चन ने बप्पी लहरी को लेकर और भी ढेर सारी बातें कीं। आपको बता दें कि बप्पी लहरी बीते 29 दिनों से मुंबई के जुहू में स्थित सिटीकेयर अस्पताल में भर्ती थे। वह ऑब्सट्रक्टिव स्लीप एपनिया और बार-बार होने वाले सीने के इनफेशन से पीड़ित थे। डॉक्टर के अनुसार बीच में उन्हें आराम मिल गया था। जिसके बाद बप्पी लहरी को 15 फरवरी को अस्पताल से डिसचार्ज कर घर भेज दिया गया था, लेकिन 16 फरवरी को उनका निधन हो गया।

बप्पी लहरी के परिवार में गम का माहौल है, निधन की खबर मिलते ही उनके घर पर अंतिम दर्शन करने वालों का तांता लगा रहा। उन्हें आखिरी बार देखने के जाने वालों में सिंगर अलका याग्निक, अनुराधा पौडवाल, काजोल और अभिजीत भट्टाचार्य शामित थे। इस मुश्किल घड़ी में फैंस ने सोशल मीडिया से परिवार को स्ट्रॉन्ग रहने का संदेश दिया। बप्पी लहरी का अंतिम संस्कार मुंबई के विले पार्ले में हुआ है।

हड़ताल के साथ धरने पर रहे बिबकॉल कर्मचारी

बुलंदशहर

मांगों को लेकर बिबकॉल कंपनी के कर्मचारियो की चल रही अनिश्चितकालीन हडताल बुधवार को दूसरे दिन भी जारी रही। कर्मचारियों नेप्रबंधक पर उत्पीडन करने का आरोप लगाते हुए मांगपूर्ति न होने तक हडताल जारी रखने की चेतावनी दी।
बिबकॉल कर्मचारी क्रांतिकारी यूनियन के अध्यक्ष हेमंत कौशिक ने बताया कि मांगों को लेकर प्रबंधक कोपत्र सौंपने के साथ 31 जनवरी 2022 को हड़ताल पर जाने का नोटिस दिया था। लेकिन प्रबंधक नेकर्मचारियों से न तो कोई वार्ता की और न ही समस्याओ का समाधान किया। बिबकॉल कर्मचारी क्रांतिकारी यूनियन के अध्यक्ष हेमंत कौशिक ने बताया कि बिबकॉल भारत सरकार का उपक्रम है जो विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय के अधीन है। कौशिक ने प्रबंधक मंडल पर भ्रष्टाचार, कर्मचारियों का उत्पीड़न, बच्चों के जीवन से खिलवाड़, फर्जी बिलों का भुगतान करने, कंपनी का एसेसमेंट गायब करने, बिना डीपीसी (डिपार्टमेंटल परमिशन समिति) के अपने चहेतों को प्रमोशन देने,बिना पोस्ट के प्रमोशन व भर्ती करने, बिना अप्रूवल के पेमेंट करने के साथ कंपनी को करोड़ों रुपए की क्षति पहुंचाने के आरोप लगाये है। कर्मचारियों ने बताया कि दो माह से अधिक समय बीत चुका है लेकिन प्रबंधक ने उनसे कोई वार्ता नही की है। कर्मचारियो ने बुधवार कोदूसरे दिन भी हडताल रख कंपती के गेट पर धरना देकर नारेबाजी की।
इन मांगो को लेकर धरना पर रहेकर्मचारी कर्मचारी यूनियन केअध्यक्ष हेमेन्त कौशिक ने बताया कि फर्जी टैक्सी बिलोके किये भुगतान की जांच करा आरोपियो के विरूद्ध कार्यवाही करने, कंपनी के दिल्ली कार्यालय सेगायब ऐसेट मेंटस की जांच करा आरोपियो के विरूद्ध कार्यवाही करने, सीनियरटी के आधार पर कर्मचारियो को प्रमोशन देने, नियम विरूद्ध ढाई साल मे दिये गये डबल प्रमोशन को वापस लेने,बिना आवश्यकता अशिक्षित कंपनी मेनौकरी पानेवाले लोगो की जांच करा कार्यवाही किये जाने, बिना अप्रूवल के भुगतान पाने वाले कर्मचारियो की जांच करा कार्यवाही किये जानेआदि मांगो को लेकर कर्मचारियो की हडताल व धरना जारी है। उन्होने कहा कि जब तक कर्मचारियों का उत्पीड़न बन्द नही किया जायेगा ।

अखंड रामायण पाठ के समापन पर भंडारे का आयोजन

सिकंद्राबाद

नगर के प्रसिद्ध श्री बालाजी मंदिर में 16 वे वार्षिक अखंड रामायण पाठ के समापन पर यज्ञ एवं भंडारे का आयोजन किया गया जिसमें भक्तों ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया।
कस्बा सिकंद्राबाद का पुराना होली मेला रोड स्थित श्री बालाजी शक्ति पीठ मंदिर पर बाबा का विशेष चोला चढ़ाया गया। तत्पश्चात विधि विधान के साथ अखंड रामायण पाठ का प्रारंभ हुआ जो बुधवार की प्रात तक संपन्न रहा। अखंड रामायण पाठ के दौरान श्री बालाजी मंदिर संकीर्तन मंडल एवं मंदिर पटवा कुआं संकीर्तन समिति द्वारा मधुर भजनों के माध्यम से रामायण पाठ को नवीनता प्रदान की गई। प्रात 10 बजे रामायण की आरती के साथ अखंड पाठ संपन्न हुआ और महायज्ञ का आयोजन किया गया।

धूमधाम से मनाई गई रविदास जयंती

बुलंदशहर

जनपद के विभिन्न कस्बा, शहरों तथा ग्रामों में संत शिरोमणि रविदास जयंती बडेहर्षोल्लास के साथ मनाई गई। इस दौरान उनके अनुयायियो ने रविदास के चित्र के समक्ष पुष्प अर्पित कर सामाजिक कुरुतियों को त्यागने का संकल्प लिया। जनपद केप्राथमिक, जूनियर व इंटर कालिज के साथ महाविद्यालयो में बुधवार को शिक्षक, शिक्षिकाओ नेसंत शिरोमणि रविदास की जयंती उनके चित्र पर पुष्प अर्पित कर धूमधाम से मनायी गयी। इसकेअलावा तहसील शिकारपुर क्षेत्र के गांव आजमपुर दरियापुर मेंरविदास आश्रम मेंरविदास की जयंती उनके चित्र पर पुष्प अर्पित कर धूमधाम से मनाई। इस अवसर पर समाज सेविका कुसुमलता गौतम ने वहा उपस्थित महिलाओं एवं उपासकों से कहा की रविदास ने सदा सामाजिक कुरीतियों ,अंधविश्वास,पाखंडवाद,को खत्म करने की दिशा में कार्य किया हम सबको उनके आदर्शो पर चलना चाहिए,इस अवसर पर सत्संग का आयोजन किया गया,तत्पश्चात वहा पर भंडारा का आयोजन किया गया। उपस्थित लोगो ने सामाजिक कुरुतियो को त्यागने का संकल्प लिया।

यूक्रेन में फंसा एमबीबीएस का छात्र, चिंता में परिजन

सिकंद्राबाद

यूक्रेन में युद्ध की संभावना को देखते हुए मोहल्ला भाटियाबाड़ा निवासी एमबीबीएस के छात्र के परिजन अपने लाडले को लेकर चिंतित है। वह अपने बेटे की सकुशल वापसी कोसरकार के साथ भगवान के दरबार मेमाथा टेक रहे है। कस्बा सिकंद्राबाद के मोहल्ला भाटिया बाड़ा निवासी देवी शरण सैनी का पुत्र अनुराग सैनी गत 2018 से यूक्रेन में रहकर बोगोमलेट्स नैशनल मेडिकल यूनिवर्सिटी में एमबीबीएस की पढ़ाई कर रहा है। यूक्रेन से रुस की लड़ाई की संभावना को देखते हुए परिजनों की चिंताएं बढ़ती जा रही है। माता पिंकी सैनी ने बताया की मंगलवार की रात्रि 11 बजे उन्होंने ने अनुराग से फोन पर बात की थी। कहा कि अभी कॉलेज प्रशासन द्वारा पढ़ाई कराई जा रही है। पिता देवी शरण ने बताया कि यूक्रेन में युद्ध की संभावना के चलते परिवार में चिंता का माहौल है। उन्होंने भारत के संबंधित विभागों से संपर्क किया जिसपर उन्हें सकारात्मक उत्तर मिले हैं जिससे लगता है परिजनों के साथ सरकार भी इसको लेकर चिंतित और सजग है। उन्होंने सरकार द्वारा उठाए गए कदमों की जानकारी देते हुए बताया कि भारतीय दूतावास ने यूक्रेन में रह रहे छात्र छात्रो को एडवाजरी जारी कर दी है जो भी छात्र भारत जाना चाहता दूतावास उसकी पूरी मदद करेगा। सरकार की कार्यवाही पर परिजनों को भरोसा है। लेकिन वहीं दूसरी ओर अपने पुत्र की सुरक्षा को लेकर परिजनों में भय का वातावरण बना हुआ है। बताया जाता हैकि अनुराग सैनी गत जनवरी माह मैं यूक्रेन गया था। परिजन बेटे की सकुशल वापसी कोसरकार के साथ भगवान के दरवार मे माथा टेक रहे है।

यूक्रेन संकट से अलीगढ़ के अभिभावक चिंतित, की मांग

पीएम यूक्रेन में मेडिकल विद्यार्थियों की सुरक्षा का लें जिम्मा

अलीगढ़

यूरोपीय देश मे शामिल यूक्रेन व रूस युद्ध संकट में भारतीय मेडिकल छात्रों की सुरक्षा व एयर लिफ्ट कराने के मामले से चिंतित अलीगढ़ के अभिभावकों ने बुधवार को अपने प्रतिवेदन के माध्ययम से देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को अवगत कराया है।
उन्होंने, यूक्रेन में मेडिकल शिक्षा में अध्ययनरत अपने बच्चों की सुरक्षा की जिम्मेदारी पीएम नरेंद्र मोदी से लेने की मांग कर, युद्ध की स्थिति से पूर्व उन्हें एयर लिफ्ट के द्वारा भारत बापिस बुलवाने की मांग की है।
बुधवार को देश के प्रधानमंत्री के नाम संबोधित प्रतिवेदन पत्र मण्डलायुक्त गौरव दयाल व जिलाधिकारी सेल्वा कुमारी जे.को सौंपते हुए चिंतित अभिभावकों ने कहा कि यूक्रेन देश पर प्रस्तावित नाटो सदस्यता के विरूद्ध रूस देश द्वारा उसे चारों ओर से अपनी सेना द्वारा घेर कर ,यूक्रेन पर सैन्य हमला कर युद्ध छेड़ने की घोषणा से, सभी अभिभावक अपने मेडिकल अध्ययनरत बच्चों की सुरक्षा को लेकर अत्यंत चिंतित हैं।
अलीगढ़ से करीब 50 बच्चे व देश से करीब 20 हजार से अधिक बच्चे वहां उच्च शिक्षा ले रहे हैं। कोविड 19 की वजह से भी उनकी शिक्षा पर भी खासा प्रभाव पड़ा था। वहीं, अब यूक्रेन में युद्ध के हालात पर वहां इंडियन एम्बेसी द्वारा भारतीय छात्रों को अचानक 15 फरवरी 22 में यूक्रेन छोड़ने की एडवाइजरी जारी करने से सभी स्थानीय अभिभावकों को गहरे पशोपेश में डाल दिया है।
यूक्रेन में युद्ध के संकट की वजह से वहां से दिल्ली (भारत) वापसी की फ्लाइट का किराया भी डेढ़ लाख रुपयों तक प्रति यात्री बताया जा रहा है, (जबकि सामान्य समय में ये किराया 22-23 हजार होता था),अनेकों फ्लाइटों का कैंसिल होना भी बताया जा रहा है ।वर्तमान में फ्लाइट भी उपलब्ध नहीं हो पा रही हैं।मिल भी रही हैं तो हफ्तों बाद। ऐसे में यूक्रेन में फंसे देश के बच्चों की पूर्ण सुरक्षा व्यवस्था करने की जिम्मेदारी लेने के साथ, आपातकालीन स्थिति में उनको भारत लाने के लिए एयर लिफ्ट श् की व्यवस्था भारत सरकार के द्वारा कराया जाना अति आवश्यक है।
अभिभावको में पंकज धीरज , डॉ विश्वामित्र आर्य, सैयद राशिद अहमद,आमोद कुमार उपाध्याय, काजल धीरज ,पुनीत अरोरा, मोरमुकुट यादव, आदि सहित अन्यका कहना था कि यूक्रेन में भारत की एम्बेसी से वहां अध्ययनरत बच्चे निरंतर संपर्क में हैं ,लेकिन एम्बेसी को भी बच्चों को निरंतर संरक्षण दिया जाना सादर अपेक्षित है।ताकि युद्ध पर भ्रम की स्थिति न रहे।
भारत सरकार वर्तमान में वहां मौजूद भारतीय विद्यार्थियों की सुरक्षा की पूरी जिम्मेदारी लेते हुए, युद्ध के हालात में भारत में एयर लिफ्ट से वापिसी की व्यवस्था करवाने को आश्वस्त करे।

बुद्ध के संदेश से ही विश्व में स्थापित होगी शांति

मेरठ

संघमाता डा. मुक्ति ग्लोबल बुद्धिस्ट फाउंडेशन एवं तथागत बुद्धा चेयर के संयुक्त तत्वावधान में सुभारती विश्वविद्यालय परिसर स्थित बोधि उपवन में माघ पूर्णिमा का कार्यक्रम हर्षोल्लास से मनाया गया। शुभारंभ प्राचीन बोधि वृक्ष के नीचे स्थापित तथागत बुद्ध की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्जवलित करते हुए म्यांमार, वियतनाम, थाईलैंड, यूके, यूरोप, आदि देशों के बौद्ध भिक्षुओं ने थेरावादा एवं महायाना का सूत्र पाठ किया।
कार्यक्रम संयोजक सुभारती स्कूल ऑफ बुद्धिस्ट स्टडीज के सलाहकार डा. हिरो हितो ने कहा कि ज्ञान प्राप्ति के बाद तथागत बुद्ध ने विभिन्न स्थानों पर उपदेश दिये। उन्होंने कहा कि मान्यता के अनुसार माघ पूर्णिमा के दिन 1250 बौद्ध भिक्षु संघ को तथागत बुद्ध ने अपने उपदेश से लाभान्वित किया था। सुभारती ग्रुप के जाति विहीन समाज की झलक देखने को मिली जिसमें सभी धर्म के लोगो ने एकता दिखाते हुए बौद्ध भिक्षुओं को दान दिया। इस दौरान भिक्षुओं द्वारा चारिका की गई। बौद्ध विद्वान डा. चन्द्रकीर्ति भंते भिक्षु संघ का नेतृत्व किया। इस मौके पर प्रतिकुलपति डा. अभय शंकरगौड़ा, डा. वैभव गोयल भारतीय, डा. संदीप कुमार, डा. नीरज कर्ण सिंह, आकाश भटनागर, राजकुमार सागर, इन्द्रपाल बौद्ध, यश्पाल, पल्लवी त्यागी, डा. पल्लवी मुखर्जी, डा. मनीषा लुथरा आदि उपस्थित रहे।

साख बचाने को विधायक की अग्नि परीक्षा

जहांगीपुर

जेवर विधान सभा क्षेत्र से विधायक ठाकुर धीरेंद्र सिंह 2017 के चुनाव में भारी बहुमत से जीते थे लेकिन अब उनके लिए दूसरी पारी शुरू करना कठिन लगता है। ठाकुर बाहुल्य क्षेत्र होने के बाबजूद विधायक को अन्य जातियों के साथ ठाकुर समाज की भी नाराजगी झेलनी पड़ सकती है।
चर्चा है कि वह उनकी अपेक्षाओं पर खरे नहीं उतर पाए। जेवर क्षेत्र के ठाकुर समाज के साथ अन्य जातियों ने अपने क्षेत्र के रबूपुरा निवासी ठाकुर धीरेंद्र सिंह को 2017 मेंभारी मतो से जीताकर विधानसभा भेजा था। क्षेत्र के लोगों का कहना है कि विधायक ने 24 अक्टूबर 2017 को रेल मंत्री भारत सरकार को दादरी के रेलवे स्टेशन का नाम बदल कर सम्राट मिहिरभोज परिहार के नाम के आगे गुर्जर लिखने का पत्र भेजा था। इसकी भनक क्षेत्र के ठाकुरों को लगी तो उनमें रोष व्याप्त हो गया। खुलकर तो किसी ने इस मुद्दे को नहीं उठाया, लेकिन भीतरी तौर पर ठाकुर समाज में विधायक ठाकुर धीरेंद्र सिंह के प्रति विरोध पनपने लगा। क्षेत्र के राजनीतिक परिदृश्य को देखकर यह कहा जा सकता है कि विधायक ने ठाकुरों को नाराज करके अपना राजनीतिक नुकसान किया है । इस चुनाव में ठाकुरों का समर्थन लेने को भले ही धीरेंद्र सिंह आश्वस्त होलेकिन यह 10 मार्च को आने वाले नतीजों से पता चल पाएगा कि वह अपने समाज के लोगों का कितना विश्वास जीत पाए हैं।
ग्राउंड जीरो की रिपोर्ट से पता चलता है कि अब से पहले तो ठाकुर भीतरी तौर पर नाराज रहे हैं, लेकिन उन्होंने अपनी नाराजगी को मतदान में जाहिर कर दिया है 10 मार्च को नतीजे आने पर साफ हो जाएगा कि जीत का सेहरा किसके सिर बंधता है।

इंद्रापुरम थाने के पास आधा किलो सोने के जेवरात लूटे, पुलिस अनजान

गाजियाबाद। इंद्रा पुरम थाने के पास से बाइक सवार बदमाशों ने दिल्ली के सर्राफ सुधीर वर्मा को तमंचे के बल पर जान से मारने की धमकी देकर करीब आधा किलो सोने के जेवरात लूट लिए। कोतवाली पुलिस घटना से अनजान बनी रही। लूट की शिकायत करने पहुंचे पीड सर्राफ को पुलिस ने चलता कर दिया। पीड़ित सर्राफ सुधीर वर्मा ने बताया कि वे शाहदरा, दिल्ली में परिवार के साथ रहते हैं। बलवीर नगर चौक, शाहदरा में उनकी शिव ज्वैलर्स के नाम से सर्राफे की दुकान है। वह कारीगरों से सोने-चांदी के गहने तैयार कराकर गाजियाबाद के दुकानदारों को बेचते हैं।

हादसे में घायल व्यक्ति की उपचार के दौरान मौत

बागपत। दिल्ली-यमुनोत्री हाईवे स्थित कलक्ट्रेट के पास हुई कार की टक्कर से घायल हुए व्यक्ति की बुधवार को उपचार के दौरान मौत हो गई। पीड़ित परिवार ने अज्ञात कार चालक के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कराई है। नवाब गत चार जनवरी को किसी काम से कचहरी आए थे। वहां से वापस अपने घर लौटते समय हाईवे पर कलक्ट्रेट के निकट कार ने उनको टक्कर मार दी थी। वह गंभीर रूप से घायल हो गए थे। उनकी अस्पताल में उपचार के दौरान मौत हो गई। बेटे सचिन ने कार के अज्ञात चालक के खिलाफ मुकदमा दर्ज कराया। कोतवाली प्रभारी तपेश्वर सागर का कहना है कि कार के आरोपित चालक को गिरफ्तार किया जाएगा।

संत रविदास जी की जयंती पर हुआ विशाल भंडारे का आयोजन

मेरठ

स्वामी विवेकानन्द सुभारती विवि के संस्कृति विभाग में संत रविदास की जयंती का शुभारंभ संत रविदास के चित्र के समक्ष दीप प्रज्ज्वलित कर डा.विवेक कुमार ने किया। कुलदीप नारायण ने मंत्रोचारण कर संत रविदास को नमन किया।
डा. विवेक कुमार ने बताया कि संत रविदास भारत के उन विशेष महापुरुषों में से एक हैं, जिन्होंने अपने आध्यात्मिक वचनों से सारे संसार को आत्मज्ञान, एकता एवं भाईचारे का संदेश दिया। जगतगुरु रविदास की अनूप महिमा को देख कई राजा और रानियाँ इनकी शरण में आकर भक्ति मार्ग से जुड़े। उन्होंने हमेशा समाज में फैली कुरीति जैसे जात पात के अन्त के लिए काम किया।
उन्होंने बताया कि संस्कृति विभाग द्वारा प्रत्येक महापुरूषों की जयंती एवं पुण्यतिथि सुभारती दिवस के रूप में मनाकर सभी विद्यार्थियों को देशहित में कार्य करने की प्रेरणा दिलाई जा रही है।
इस मौके पर जसविन्दर सिंह, सतेन्द्र कुमार, अभिषेक मलिक, जावेद, गौरव आदि उपस्थित रहे।

संतान न होने पर विवाहिता को ससुराल वालों ने दिया विषैला पदार्थ

अलीगढ़

थाना अकराबाद क्षेत्र के अंतर्गत एक विवाहिता ने आरोप लगाया है कि संतान ना होने पर ससुराली जनों ने विषैला पदार्थ देकर जान से मारने का प्रयास किया एसएसपी को प्रार्थना पत्र देकर कार्रवाई की मांग की।
पीड़िता अंजलि पुत्री यशपाल निवासी ग्राम दूभैया का विवाह ढाई साल पूर्व भगवती पुत्र त्रिलोकी सिंह नगला परौली थाना विजयगढ़ के साथ हुआ था। संतान ना होने की वजह से ससुराली जनों ने विषैला पदार्थ खिलाकर जान से मारने का प्रयास किया।
पीड़िता के माता-पिता ने जब विवाहिता का इलाज कराने लिए बोला तो ससुराली जनों ने कहा जितने रुपए का इलाज कराएंगे उतने में दूसरी शादी कर लेंगे।
पीड़िता के माता-पिता सुनकर दंग रह गए। लाख समझाने के प्रयास के बाद भी ससुराली जनों की समझ में नहीं आया।
पीड़िता अंजलि को पांच दिन उपचार के लिए जिला अस्पताल मलखान सिंह में रखा गया था, उपचार के बाद पीड़िता माता-पिता के साथ थाने पहुंची और कार्रवाई की मांग की, तो पुलिस ने पारिवारिक मामला बता कर टरका दिया। परिवार के साथ प्रार्थना पत्र लेकर पीड़िता एसएसपी कार्यालय पहुंची और ससुराली जनों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक ने पीड़ित परिवार को आश्वासन दिया है और कार्रवाई के लिए थाना पुलिस को आदेशित किया है।

परिक्रमा मार्ग पर बाहरी वाहनों का प्रवेश रोकने में पुलिस नाकाम

मथुरा। पूर्णिमा मेले पर पूर्णमासी पर एनजीटी के आदेशों की धज्जियां उड़ाते हुए बहार से आये वाहन गोवर्धन में तब प्रवेश कर गए जब एकता तिराहे व डीग अड्डा तिराहे पर व अन्य उन सभी जगहों पर जहां से परिक्रमा मार्ग आदि में वाहन आ सकते हो को ट्रैफिक पुलिस के साथ साथ सिविल पुलिस बहारी वाहनों को अंदर जाने से रोकने के लिए तैनात किए गए हैं लेकिन फिर भी बहारी वाहनों ने प्रवेश कर दानघाटी मन्दिर व थाने के सामने ही भयंकर जाम लगा दिया जो घण्टों में जाकर खुला तो जब जो अधिकारी एनजीटी के आदेशों का अनुपालन न करा पा रहा हो और जाम जैसी छोटी समस्या का समाधान नहीं करा सकता हो वो अपराध और अपराधियों को क्या रोकने में रुचिकर होगा।
विगत दिन प्रति महीने गोवर्धन में लगने वाले पूर्णमासी के मेले में भारी संख्या में श्रद्धालुओं का आना हुआ तो बाहर से आये लोग अपने निजी वाहनों को लेकर अंदर कस्बे में प्रवेश कर गए नतीजा एक तरफ श्रद्धालुओं का सैलाब दिखाई दिया तो दूसरी ओर वाहनों की लंबी लंबी कतारे लगी हुई दिखाई दी।

धारदार हथियार से गला रेत महिला की हत्या की

मेरठ। मवाना के मोहल्ला काबलीगेट में बुधवार को एक महिला का कमरे में गला रेता हुआ शव मिलने के बाद सनसनी फैल गई। मौके पर पहुँची लिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा।
नगर के मोहल्ला निवासी राजरानी (60) पत्नी स्व. सुखवीर अपने पुत्र व पुत्र-वधू के साथ रहती थीं। महिला वह मकान के भूतल पर बने कमरे में सोई हुईं थीं।
बेटे की बहू लक्ष्मी बुधवार सुबह नीचे आई तो कमरे से बाहर खून बह रहा था खून बहता देख उसकी चीख निकल गई।
इस बीच परिजन और आस पड़ोस के लोग भी आ गए। लोगों ने देखा तो कमरे के फर्श पर राजरानी का खून से लथपथ शव पड़ा हुआ था। सूचना पर एसआई भीम प्रकाश ने मौके पर पहुंच देखा तो शव के पास गए और पास दराती पड़ी थी। पुलिस ने उसे कब्जे में ले लिया और और शव को पोस्टमार्टम ये लिए भेजा। एसआई ने बताया कमरे का दरवाजा अंदर से बंद था जिसे तोड़कर शव बाहर निकाला गया।
महिला के आत्महत्या करने की बात भी सामने आ रही है। मृतका की 6 संतान में एक पुत्र व पांच पुत्रियां हैं। उनके पति परिवहन निगम में नौकरी करते थे।
पति की मौत के बाद महिला के पुत्र कृष्ण की भी रोडवेज में ही नौकरी लग गई। जबकि मृतका की पुत्र वधु लक्ष्मी ऊर्जा निगम कार्यालय में नौकरी करती है।
इंस्पेक्टर विष्णु शर्मा ने कहा कि मामला आत्महत्या का प्रतीत हो रहा है। फिर भी हर पहलू पर जांच की जाएगी।

सड़क निर्माण से मिट्टी से अटे नाले, खेतों में भरा पानी

बागपत। क्षेत्र के गांव किशनपुर से पुसार तक सड़क का निर्माण होने के चलते दोनों ओर नाले में मिट्टी भरने से पानी अवरुद्ध हो गया। इससे नाले में जमा हुआ गांव का गंदा पानी समीप खेतों में घुस गया। इससे गन्ने की फसल नष्ट हो गई। पीड़ित किसानों ने मुआवजे की मांग की है।
किशनपुर निवासी किसान ब्रिजेश तोमर, राजेंद्र सिंह, सुभाष, रविद्र कुमार, वीरेंद्र सिंह, विक्रम, सुक्रमपाल आदि ने बताया कि उनके खेत किशनपुर पुसार मार्ग के समीप है।
कुछ दिन पूर्व इसी मार्ग का निर्माण किया गया है। किसानों का आरोप है कि सड़क निर्माण के समय ठेकेदार ने नाले में मिट्टी भर दी, इसके चलते ही नाले का गंदा पानी उनके खेतों मे घुस गया। गंदे पानी से खेत मे खड़ी गन्ने की फसल सूख गयी। समस्या के समाधान के लिए किसानों ने मुख्यमंत्री पोर्टल व संबंधित अधिकारियों से शिकायत की, लेकिन अभी तक नाले से मिट्टी नहीं निकाली गयी। पीड़ित किसानों ने नाले से मिट्टी निकलवाकर फसल के मुआवजे की मांग की है।

17 लोगों के खिलाफ अधिशासी अधिकारी ने दी है तहरीर

मथुरा

मथुरा गोवर्धन विगत दिनों से व्यापार मंडल के सोंख कस्बे के दो पदाधिकारियों ने एक सरकारी भूमि के भूखण्ड का रजिस्टर्ड एकरार नामा कराया गया था जो सुर्खियों में आ गया। जिस पर गोवर्धन नगर पंचायत अध्यक्ष के अथक प्रयास से प्रशासन की कुम्भकर्णीय नींद टूटी और विगत रात्रि राजस्व विभाग व नगर पंचायत गोवर्धन की टीम उक्त सरकारी जमीन को तलाशते हुए मौके पर पहुंचे और जमीन की नापतोल कर जगह चिन्हित कर अवैध कब्जे धारकों के विरुद्ध रिपोर्ट दर्ज कराई है।
बताया जा रहा है कि मामला आगे बढा तो इसमें कई अधिकारी और जनप्रतिनिधियों तक भी आंच पहुंच सकती है।
गोवर्धन में पशुचर भूमि और बंजर भूमि पर कब्जे का आरोप लगाते हुए नगर पंचायत के अधिशासी अधिकारी ने मंगलवार को 17 लोगों के खिलाफ थाना गोवर्धन में नामजद तहरीर दी। अधिशासी अधिकारी अलोक वर्मा ने बताया, सौंख मार्ग स्थित पशुचर भूमि और बंजर भूमि के बड़े हिस्से पर अवैध कब्जा कर लिया है। इस मामले में राधेश्याम, कजरी, गिरधारी, धर्मवीर, नेम सिंह, जगदीश, अशोक, गिर्राज, शलीम, राजू, नेहना, पप्पू, संजय, गोपाल, कैलाश, बबलू, मदन मोहन निवासीगण इंद्रा कालोनी के खिलाफ तहरीर दी है। एसआइ चंद्रवीर सिंह ने बताया, तहरीर के आधार पर मुकदमा दर्ज कर कार्रवाई की जाएगी। लेकिन इस सरकारी जमीन को ढूढने में खोदा कुआं निकला समुंदर वाली बात सबित हुई। आजू बाजू में भी बेशकीमती सरकारी जमीन और निकल आई। गोवर्धन तहसील प्रशासन द्वारा ऐसा हथौड़ा चलाया गया कि जिसकी जद में आकर अन्य तमाम बेकसूरों पर गाज गिर गई है।

गन्ना सुपरवाइजर पर पर्चियां बढ़ाने के एवज में घूस मांगने का आरोप

जहांगीरपुर। गन्ना की पर्चिया बढाने के एवज मे गन्ना सुपरवाइजर पर घूस मांगने का आरोप लगाते हुए पीडित किसान ने जिला गन्ना अधिकारी कोज्ञापन भेजकर प्रकरण की जांच करा आरोपी के विरूद्ध कार्यवाही की मांग की है। कभी गन्ना के भुगतान को लेकर तो कभी मूल्य बढाने की मांग तो कभी पर्चिया बढाने के एवज मेघूस मांगने को लेकर किसान बेहद परेशान है और आय दिन तहसील से लेकर मुख्यालय पर धरना प्रदर्शन करने कोमजबूर है। हालिया मामला थाना जहांगीरपुर क्षेत्र के गांव इब्राहिमपुर निवासी विनय कुमार ने गन्ना सुपरवाइजर पर पर्चिया बढाने के एवज मे घूस मांगने का आरोप लगाया है। पीडित किसान ने बताया कि वह गन्ना किसान है और साबितगढ़ शुगर मिल के गन्ना केंद्र छपना पर गन्ना डालते हैं।

घर के बाहर से नाबालिग को ले जाता आरोपी अरेस्ट

सिकंद्राबाद। घर के बाहर खेल रही नाबालिग बच्ची को बहला-फुसलाकर ले जाते एक युवक को लोगों ने दबोच मिजाजपुर्सी के बाद पुलिस को सौंपा है। बच्ची के मिलने पर परिजनो ने राहत की सांस ली है। कोतवाली सिकंद्राबाद क्षेत्र के सलेमपुर रोड स्थित मौहल्ला चैधरीबाड़ा निवासी असलम की 12 वर्षीय पुत्री अरीबा बुधवार की प्रात घर के बाहर खेल रही थी। बताया जाता है कि इस दौरान वह एक युवक पहुंचा और नाबालिग बच्ची को बहला-फुसलाकर अपने साथ जीटी रोड की ओर ले जाने लगा। अंजान युवक के साथ बच्ची को जाते हुए देख मौहल्ले के लोगोको शक हुआ और युवक को रोक पूछताछ की जिसपर युवक हडबडा गया । लोगो ने युवक का दबोच जमकर मिजाजपुर्सी कर सूचना पुलिस को दी।

तीसरे टी20 में 20 हजार दर्शक ले सकेंगे मैच का मजा

कोलकाता। भारत ने वेस्टी इंडीज के खि?लाफ टी20 सीरीज में जीत के साथ आगाज कर दिया है। सीरीज के तीनों मैचे कोलकाता के ईडन गार्डस में होंगे। खुशखबरी यह है कि जॉय ऑफ सिटी के इस मैदान में तीसरे टी20 में 20 हजार दर्शकों को लाइव मैच देखने की अनुमति दी गई है। जिनमें अध?कांश लोग अधिकांश बंगाल क्रिकेट संघ के सदस्य होंगे। यह मैच 20 फरवरी को खेला जाएगा।

बीसीसीआई अध्यक्ष सौरभ गांगुली ने बंगाल क्रिकेट संघ के प्रमुख अविषेक डालमिया को ईमेल लिखा है, जिसमें कहा है कि संघ के अनुरोध के बाद बीसीसीआई के दूसरे पदाधिकारियों से इस बारे में बात की गई हैफ। जिसमें फैसला हुआ है कि वेस्टइंडीज के खिलाफ आखिरी टी20 में ऑडियंस को अनुमति दी जा सकती है। बंगाल क्रिकेट संघ अपने मेंबर्स और और मान्य यूनिट्स को फ्री में टिकट प्रोवाइड करा सकता है।

डालमिया ने बीसीसीआई का शुक्रिया अदा करते हुए कहा कि इससे कैब लाइफटाइम मेंबर्स, सालाना और मानद मेंबर्स के प्रति अपनी जिम्मेदारी पूरी कर सकेगा। इससे पहले गांगुली ने था कि खिलाड़ियों के स्वास्थ्य को लेकर किसी भी तरह की जोखिम से बचने के लिए दर्शकों को एंट्री नहीं दी जाएगी। जिसके बाद डालमिया ने 70 फीसदी दर्शकों के एंट्री की परमीशन मांगी थी। पहले दो टी20 मैचों में 2000 के करीब दर्शकों को कारपोरेट बॉक्स और डॉक्टर बीसी रॉय क्लब हाउस के ऊपरी दर्जे में प्रवेश की अनुमति दी गई है। पहले दो

मैचों के मैच पास सिर्फ प्रायोजकों के लिए हैं।

बिना दर्शकों के खेली जा रही है सीमित ओवर्स की सीरीज

भारत और वेस्टइंडीज के बीच सीमित ओवरों की सीरीज बिना दर्शकों के खेली जा रही है। इससे पहले वनडे सीरीज के तीनों मुकाबले नरेद्र मोदी स्टेडियम, अहमदाबाद में हुए थे। जिसे भारतीय टीम जीते थे और क्लीजन स्वीबप किया था। टी20 सीरीज के तीनों मैच कोलकाता के ईडन गार्डस पर खेले जा रहे हैं। जिसमें पहला मुकाबला 16 फरवरी को खेला गया था और उसे भारत ने 6 विकेट से जीता था।

भारतीय पुरुष टीम ने हांगकांग को 3-2 से हराया

बैडमिंटन एशिया चैंपियनशिप में उम्मीद बरकरार

शाह आलम (मलेशिया)। विश्व चैंपियनशिप के कांस्य पदक विजेता लक्ष्य सेन की अगुआई में भारतीय पुरुष टीम ने गुरुवार को यहां ग्रुप ए में हांगकांग को 3-2 से हराकर बैडमिंटन एशिया टीम चैंपियनशिप के नॉकआउट में जगह बनाने की उम्मीदों को बरकरार रखा।

कोरिया के खिलाफ पहले मैच में 0-5 की करारी हार से हालांकि टीम की नॉकआउट में जगह बनाने की राह मुश्किल हो गई है। भारत अभी एक जीत और एक हार के साथ ग्रुप ए में हांगकांग से ऊपर तीसरे स्थान पर है।

ग्रुप ए से अभी गत चैंपियन इंडोनेशिया और कोरिया नॉकआउट में जगह बनाने की दौड़ में आगे चल रहे हैं।

गुरुवार को भारत के लिए इंडिया ओपन विजेता लक्ष्य, मिथुन मंजूनाथ तथा हरिहरन ए और रूबेन आर की युगल जोड़ी ने जीत दर्ज की।

दुनिया के 13वें नंबर के खिलाड़ी लक्ष्य सबसे पहले कोर्ट पर

उतरे और उन्होंने दुनिया के 17वें नंबर के खिलाड़ी ली च्युक यीयू को 35 मिनट में 21-19 21-10 से हराकर भारत को अच्छी शुरुआत दिलाई।

लाउ च्युक हिम और ली चुन हेई रेगिनाल्ड ने युगल मुकाबले में मनजीत सिंह ख्वेराकपम और डिंकू सिंह कोंथोजम की जोड़ी को रोमांचक मुकाबले में 20-22 21-15 21-18 से हराकर हांगकांग को 1-1 से बराबरी दिला दी।

ओडिशा में पहली बार सुपर 100 टूर्नामेंट में जीतने वाले किरण जॉर्ज को कड़ी चुनौती पेश करने के बावजूद चेन यिन चेक के खिलाफ 13-21 21-17 9-21 से शिकस्त झेलनी पड़ी जिससे हांगकांग ने 2-1 की बढ़त बना ली।

हरिहरन और रूबेन ने हालांकि चाउ हिन लोंग और ल्यू चुन वेई को 21-17 21-16 से हराकर भारत को बराबरी दिला दी।

सैयद मोदी सुपर 300 टूर्नामेंट के सेमीफाइनल में पहुंचे मंजूनाथ ने इसके बाद जेसन गुनावन को कड़े मुकाबले में 21-14 17-21 21-11 से हराकर भारत की 3-2 से जीत सुनिश्चित की।

नॉकआउट में जगह बनाने के लिए भारत को अब शुक्रवार को गत चैंपियन इंडोनेशिया को हराना होगा और हांगकांग के खिलाफ कोरिया की हार की दुआ करनी होगी।

भारत और कोरिया दोनों ने अभी एक मुकाबला जीता और एक गंवाया हैं। दोनों टीम अगर शुक्रवार को जीत दर्ज करती हैं तो फिर देखा जाएगा कि किस टीम ने अधिक मैच और गेम जीते तथा हारे हैं और इस मामले में कोरिया आगे है।

भारतीय महिला टीम को भी अपने पहले मैच में मलेशिया के खिलाफ 2-3 से हार झेलनी पड़ी थी। टीम अपने दूसरे मैच में शुक्रवार को गत चैंपियन जापान से भिड़ेगी।

रवि बिश्नोई एक अच्छी प्रतिभा है : रोहित शर्मा

कोलकाता । भारतीय कप्तान रोहित शर्मा ने वेस्ट इंडीज से पहला टी 20 छह विकेट से जीतने के बाद कहा कि हां, मैच बीच में फंस गया था, लेकिन अंत में हम जीत गए। यह अच्छी बात है। हमने अच्छी गेंदबाज़ी की और उन्हें कम स्कोर पर रोका।

रोहित ने बुधवार को मैच के बाद कहा, बल्लेबाज़ी में बीच में ज़रूर थोड़ी सी चूक हुई, जैसा मैंने पहले भी कहा। रवि बिश्नोई एक अच्छे टैलेंट हैं और उनमें विविधता है। वह पॉवरप्ले से लेकर अंत तक अच्छी गेंदबाज़ी कर सकते हैं। उन्होंने पहले मैच में अच्छी गेंदबाज़ी की। हमने श्रेयस से बात की है कि हमें एक ऐसे बल्लेबाज़ की आवश्यकता है, जो थोड़ी गेंदबाज़ी भी कर ले और वह इसे समझते भी हैं। टीम में अच्छे खिलाड़ी हैं और यह अच्छी प्रतिस्पर्धा है कि हमें अच्छे खिलाड़ियों को भी बाहर रखना पड़ रहा है।

वेस्ट इंडीज के कप्तान कीरोन पोलार्ड ने कहा, बीच के ओवरो में हमने धीमी बल्लेबाज़ी की, इससे मैच में फ़र्क पड़ा। हमें इसमें सुधार करना होगा। हमारे पास अच्छे गेंदबाज़ हैं, उन्हें भी अच्छा करना होगा। हम इस पर काम करेंगे और उम्मीद है कि अगले मैच में हम वापसी करेंगे।

बीपीएल 2022 : सुनील नरेन ने लगाया तूफानी अर्धशतक, युवराज-गेल का विश्व रिकॉर्ड टूटने से बाल-बाल बचा

ढाका। वेस्टइंडीज के ऑलराउंडर सुनील नरेन ने टी-20 क्रिकेट का दूसरा और बांग्लादेश प्रीमियर लीग का सबसे तेज अर्धशतक अपने नाम कर लिया है। 33 वर्षीय ऑफ स्पिनर ने अपना पांच साल पुराना रिकॉर्ड तोड़ते हुए महज 13 गेंदों में अर्धशतक जड़ दिया। बांग्लादेश प्रीमियर लीग में कॉमिला विक्टोरियंस की तरफ से खेलते हुए उन्होंने ताबड़तोड़ रन बरसाए और टी-20 क्रिकेट में संयुक्त रूप से दूसरी सबसे तेज फिफ्टी लगाने वाले क्रिकेटर बन गए। नरेन के लिए ये कोई पहली बार नहीं है, इससे पहले उन्होंने आईपीएल में 2017 में रॉयल चैलेंजर्स बैंगलोर के खिलाफ 15 गेंदों और फिर 2018 में इसी टीम के खिलाफ 17 गेंदों में अर्धशतक लगाए थे।

टी-20 लीग के दूसरे क्वालीफ़ायर में कॉमिला विक्टोरियंस की तरफ से उन्होंने पारी की शुरुआत की और पहली गेंद पर छक्का जड़ दिया। उन्होंने शोरीफुल इस्लाम के पहले ही ओवर में एक छक्का और दो चौका लगाकर चार गेंदों में 14 रन बटोर लिए। इसके बाद नरेन ने अगले ही ओवर में मेहिदी हसन मिराज को आड़े हाथों लिया और लगातार दो छक्के, एक चौका और फिर छक्का लगाया। देखते-देखते उन्होंने 13 गेंदों में छक्के के साथ अपने टी-20 करियर का 10वां अर्धशतक जड़ दिया। नरेन अर्धशतकीय पारी के बाद ज्यादा देर तक नहीं टिके और 16 गेंदों में 57 रन बनाकर आउट हुए।

मैच की बात करें तो मीरपुर के शेरे बांग्ला स्टेडियम में खेले गए मुकाबले में चटगांव चैलेंजर्स ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 19.1 ओवर में 148 रन बनाए। जवाब में नरेन की तूफानी पारी के दम पर कॉमिला विक्टोरियंस ने 43 गेंद शेष रहते हुए मैच को सात विकेट से जीत लिया। नरेन के अलावा मोईन अली ने भी ऑलराउंड प्रदर्शन किया। उन्होंने गेंदबाजी में तीन विकेट लेने के साथ ही बल्लेबाजी में भी 13 गेंदों में 30 रन की नाबाद पारी खेली।

टी-20 क्रिकेट में सबसे तेज अर्धशतक लगाने का रिकॉर्ड संयुक्त रूप से पूर्व भारतीय ऑलराउंडर युवराज सिंह, विस्फोटक कैरेबियाई बल्लेबाज क्रिस गेल और अफगानिस्तान के हज़रातुल्लाह जजाई के नाम है। इन सभी ने 12 गेंदों में अपने अर्धशतक लगाए हैं। वहीं दूसरी सबसे तेज फिफ्टी के मामले में इंग्लैंड के पूर्व बल्लेबाज मार्कस ट्रेस्कोथिक और अब सुनील नरेन ने 13 गेंदों में ये कमाल किया है।

पेरिस 2024 में ओलंपिक का नया मॉडल आयोजित करेगा : मुख्य आयोजक

बीजिंग। पेरिस 2024 ओलंपिक खेलों को कुछ अलग तरीकों से आयोजित करने के लिए तैयारी कर रहा है, जो पहले कभी नहीं किए गए थे। इस बारे में पेरिस 2024 आयोजन समिति के प्रमुख टोनी एस्टांगुएट ने जानकारी दी है। सिडनी 2000, एथेंस 2004 और लंदन 2012 में सी1 स्लैलम में ओलंपिक स्वर्ण जीतने वाले एस्टांगुएट ने कहा कि 2024 ओलंपिक लोगों के लिए खोला जाएगा।

उन्होंने एक साक्षात्कार में सिन्हुआ को बताया, खुले खेलों के माध्यम से, हम खेलों को पेरिस के प्रशंसकों के दिल के करीब लाने की महत्वाकांक्षा रखते हैं। उसी दिन पहली बार सामूहिक भागीदारी मैराथन और ओलंपिक मैराथन का एक ही कोर्स और उद्घाटन समारोह सीन, कुछ ऐसे तरीके हैं, जिनसे हम खेलों को पहले से कहीं अधिक व्यापक दर्शकों के लिए खोलने की योजना बना रहे हैं।

पूर्व ओलंपिक चैंपियन ने कहा, आज तक, मैं कह सकता हूं कि हमने उस महत्वाकांक्षा को नहीं छोड़ा है और हमारी तैयारी और बेहतर करने की है। पेरिस ओलंपिक की कुछ प्रतियोगिताएं पेरिस की शानदार विरासत, संस्कृति और ऐतिहासिक स्थलों में होंगी। उदाहरण के लिए, द ग्रैंड पैलेस तलवारबाजी और ताइक्वांडो आयोजित करेगा।

एस्टंगुएट ने कहा, हम जानते हैं कि हम दुनिया के सबसे खूबसूरत शहरों में से एक के साथ ओलंपिक की तैयारी कर रहे हैं और इसलिए शुरू से ही हमारी महत्वाकांक्षा पेरिस शहर में जितना संभव हो सके खेलों को एकीकृत करने की थी। उन्होंने कहा, पेरिस हमारे खेल का मैदान है और हम इसका अधिकतम लाभ उठाने की योजना बना रहे हैं। यह घर से देखने वाले सभी प्रशंसकों के लाभ के लिए टेलीविजन के लिए कुछ प्रतिष्ठित पृष्ठभूमि भी तैयार करेगा।

'करो या मरो' का मैच ड्रा खेल गई ओड़िसा और चेन्नइयन

वास्को। चेन्नइयन एफसी और ओडिशा एफसी के बीच बुधवार को वास्को डे गामा स्थित तिलक मैदान स्टेडियम में खेला गया करो या मरो÷ का मुकाबला 2-2 की बराबरी पर समाप्त हुआ। इस अनचाहे ड्रा से दोनों टीमों की हीरो इंडियन सुपर लीग (आईएसएल) 2021-22 के प्लेऑफ में पहुंचने की उम्मीदें हल्की पड़ गई हैं। वैसे, इस ड्रा से ना तो कोच किनो गार्सिया और ना उनकी ओडिशा खुश होगी और ना ही सहायक कोच सबिर पाशा और ना उनकी टीम चेन्नइयन संतुष्ट होगी। क्योंकि चेन्नइयन की जीत से दूरी पांच मैचों की हो गई है। आज के परिणाम से अंक तालिका

में दोनों ही टीमों की स्थिति में कोई फर्क नहीं पड़ा है। ओडिशा 17 मैचों में छह जीत और चार ड्रा से 22 अंक लेकर तालिका में सातवें स्थान पर है। चेन्नइयन 17 मैचों में 20 अंकों के साथ आठवें पायदान पर है।

मैच का पहला गोल दूसरे ही मिनट में आया, जब विंगर रहीम अली ने चेन्नइयन को 1-0 की शुरुआती बढ़त पर ला दिया। 18वें मिनट में स्पैनिश अटैकिंग मिडफील्डर हावी हर्नांडिज ने गोल करके ओडिशा एफसी को 1-1 की बराबरी पर ला दिया। 51वें मिनट में ब्राजीली स्ट्राइकर जोनाथस ने चेन्नइयन की खराब डिफेंडिंग के कारण मिले एक अवसर को भुनाकर गोलकर दिया और ओडिशा एफसी 2-1 से आगे हो गई। हावी के शॉट को गोलकीपर देबजीत ने ब्लॉक जरूर किया लेकिन रोडस ने जोनाथस के लिए इस मौके बनाया और ब्राजीली स्ट्राइकर ने गेंद पोस्ट के अंदर डाल दिया।

रणजी ट्रॉफी 2022 : आईपीएल 2022 शुरू होने से यश धुल ने दिखाया जलवा, रणजी डेब्यु में ठोका ताबड़तोड़ शतक

पहले आईसीसी अंडर-19 क्रिकेट विश्व कप 2022 जीतने वाली भारतीय टीम कप्तान यश ढुल ने रणजी ट्रॉफी 2022 टूर्नामेंट में दिल्ली के लिए अपना डेब्यु टैस्ट मैच खेलते हुए ताबड़तोड़ शतक ठोक डाला। यश आईपीएल में भी दिल्ली0 कैपिटल के लिए खेलेंगे। अपने इस शतक से आईपीएल फ्रेंचाइज को उन्होंने दिखा दिया कि टीम ने उन्हें 50 लाख रुपए में लेकर कोई घाटे का सौदा नहीं किया है। अपने डेब्यु मैच में शतक लगाकर ढुल सचिन तेंदुलकर और रोहित शर्मा की लीग में खड़े हो गए हैं। आपको बता दें कि? देश का सबसे बड़ा घरेलू टूर्नामेंट दो साल के बाद शुरू हुआ है।

ढुल ने बरसापारा क्रिकेट स्टेडियम, गुवाहाटी में चल रहे एलीट ग्रुप एच प्रतियोगिता में तमिलनाडु के खिलाफ शतक बनाया। ओपनिंग के लिए भेजे गए ढुल ने सिर्फ 133 गेंदों में 16 चौकों की मदद से अपना शतक पूरा किया। मैच में तमिलनाडु ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया। जब ढुल 97 पर थे तो एम मोहम्मद ने उन्हें आउट कर दिया, लेकिन गेंद नो-बॉल होने के कारण ढुल को जीवनदान मिल गया और दिल्लीर के इस युवा बल्लेबाज ने अपने डेब्यु मैच में शतक जमाया।

भारत अंडर-19 को विश्व कप जीत दिलाने के एक महीने से भी कम समय के बाद, ढुल भी रणजी ट्रॉफी डेब्यू में शतक लगाने वाले भारतीय क्रिकेटरों की एक विशिष्ट सूची में शामिल हो गए। इस सूची में महान भारतीय क्रिकेटर सचिन तेंदुलकर, अमोल मजूमदार के साथ, और वर्तमान भारत के कप्तान रोहित शर्मा अन्य दिग्गजों के साथ शामिल हैं।

मुझे रवि बिश्नोई से इसी तरह के प्रदर्शन की उम्मीद थी : वसीम जाफर

नई दिल्ली। युवा लेग स्पिनर रवि बिश्नोई ने वेस्टइंडीज के खिलाफ पहले टी20 मुकाबले में अपना डेब्यू किया और पहले ही मैच में उन्होंने जबरदस्त गेंदबाजी की। उनके इस बेहतरीन परफॉर्मेंस को लेकर आईपीएल में उनके पूर्व कोच वसीम जाफर ने बड़ा बयान दिया है। उन्होंने रवि बिश्नोई की काफी तारीफ की है। रवि बिश्नोई ने वेस्टइंडीज के खिलाफ अपना टी20

डेब्यू किया। हालांकि शुरूआत में वो थोड़ा नर्वस दिखे और इसी वजह से पहले ओवर में तीन वाइड गेंदें फेंकी। लेकिन बाद में उन्होंने अपने आपको संभाल लिया और अगले तीन ओवर में बेहद कम रन खर्च करते हुए दो विकेट चटका दिए। उन्होंने चार ओवरों में 17 रन देकर दो विकेट चटकाए और उन्हें प्लेयर ऑफ द मैच चुना गया।

रवि बिश्नोई की इस जबरदस्त गेंदबाजी से वसीम जाफर काफी प्रभावित हैं। ईएसपीएन क्रिकइन्फो पर बातचीत के दौरान उन्होंने कहा, जिस तरह से रवि बिश्नोई ने अपने इस पहले मुकाबले में खुद को हैंडल किया उसे देखकर काफी खुशी हुई। जिस कैच को पकड़ते हुए उनका पैर बाउंड्री लाइन को टच कर गया, मेरे हिसाब से वो उनकी घबराहट की वजह से था। हालांकि पहले मैच को देखते हुए उनका परफॉर्मेंस ओवरऑल काफी बढ़िया था। मेरे हिसाब से उनकी शुरूआत काफी शानदार रही। मुझे इसी तरह के प्रदर्शन की उम्मीद थी। वेस्टइंडीज के खिलाफ लेग स्पिनर्स हमेशा बढ़िया करते हैं और रवि बिश्नोई ने भी बेहतरीन गेंदबाजी की। आपको बता दें कि रवि बिश्नोई ने भी अपने डेब्यू को लेकर बड़ी प्रतिक्रिया दी है। उन्होंने कहा कि भारत के लिए खेलना एक सपना रहा है। मैं शुरू में नर्वस था लेकिन टीम के लिए योगदान देना चाहता था क्योंकि हम जानते हैं कि वेस्टइंडीज टी20 क्रिकेट की सबसे मजबूत टीमों में से एक है। ओस होने पर गेंद को पकड़ना थोड़ा मुश्किल होता है। मैंने इस बारे (मैन ऑफ द मैच) में कभी नहीं सोचा, लेकिन यह मेरे लिए सपने के सच होने जैसा है।

हेनरी को सात विकेट, न्यूजीलैंड ने दक्षिण अफ्रीका को पहले टेस्ट में 95 रन पर समेटा

क्राइस्टचर्च। तेज गेंदबाज मैट हेनरी ने अपने घरेलू मैदान हेगले ओवल में करियर का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए 23 रन पर सात विकेट चटकाए जिससे न्यूजीलैंड ने पहले क्रिकेट टेस्ट के पहले दिन गुरुवार को यहां दक्षिण अफ्रीका को पहली पारी में 95 रन पर समेट दिया।

न्यूजीलैंड के कप्तान टॉम लैथम ने कप्तानी करते हुए पहली बार टॉस जीता और गेंदबाजी करने का फैसला किया जिसे उनके गेंदबाजों ने बिलकुल सही साबित किया। पितृत्व अवकाश पर गए ट्रेंट बोल्ट की जगह टीम में शामिल किए गए हेनरी ने न्यूजीलैंड के खिलाफ नई गेंद संभाली। लंच तक ही दक्षिण अफ्रीका ने 44 रन पर चार विकेट गंवा दिए थे जिसमें हेनरी ने 16 रन देकर तीन विकेट चटकाए।

दक्षिण अफ्रीका की टीम चाय के विश्राम से लगभग 25 मिनट चले 49.2 ओवर में ढेर हो गई। टीम की ओर से जुबेर हमजा ने सर्वाधिक 25 रन बनाए। उनके अलावा दक्षिण अफ्रीका का कोई बल्लेबाज 20 रन के आंकड़े को भी नहीं छू पाया। हेनरी का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन इससे पहले 93 रन पर चार विकेट था।

न्यूजीलैंड ने इसके जवाब में दिन का खेल खत्म होने तक तीन विकेट पर 116 रन बना लिए थे। मेजबान ने 21 रन की बढ़त हासिल कर ली है। दिन का खेल खत्म होने पर हेनरी निकोल्स 37 जबकि नील वैगनर दो रन बनाकर खेल रहे थे। निकोल्स ने डेवोन कॉनवे (36) के साथ तीसरे विकेट के लिए 75 रन जोड़कर न्यूजीलैंड को दक्षिण अफ्रीका के स्कोर के पार पहुंचाया। डुआने ओलीवर (36 रन पर दो विकेट) ने कॉनवे को बोल्ड करके इस साझेदारी को तोड़ा।

न्यूजीलैंड की शुरुआत भी अच्छी नहीं रही थी। टीम ने 36 रन के स्कोर तक ही दोनों सलामी बल्लेबाजों लैथम (15) और विल यंग (08) के विकेट गंवा दिए। लैथम को ओलिवर ने बोल्ड किया जबकि यंग ने मार्को जेनसन (11 रन पर एक विकेट) की गेंद पर विकेटकीपर को कैच थमाया।

वेंकटेश अय्यर की बैटिंग देखकर मेरे ऊपर काफी असर पड़ा : सूर्यकुमार यादव

नई दिल्ली। सूर्यकुमार यादव ने वेस्टइंडीज के खिलाफ पहले टी20 मुकाबले में खुद के अच्छे प्रदर्शन का श्रेय वेंकटेश अय्यर को दिया है। सूर्यकुमार यादव ने कहा कि जब वेंकटेश अय्यर ने क्रीज पर आते ही चौका लगाया तो उसका काफी पॉजिटिव असर मेरे ऊपर पड़ा। मैंने सोचा कि आज मुझे गेम फिनिश करके जाना है। सूर्यकुमार यादव के मुताबिक उनके और वेंकटेश अय्यर के लिए मैच को फिनिश करने का ये एक बेहतरीन मौका था। उन्होंने मैच के बाद कहा, मेरे हिसाब से जब वेंकटेश अय्यर बल्लेबाजी के लिए आए तो उनकी सकारात्मकता काफी अलग थी। उसका मेरे ऊपर भी काफी असर पड़ा। उन्होंने अपने पारी की शुरूआत बाउंड्री के साथ की। मेरे हिसाब से गेम को फिनिश करने के लिए ये हमारे पास एक बेहतरीन मौका था। मैं पहले जब जल्दी आउट हो जाता था और गेम फिनिश नहीं कर पाता था तो काफी बुरा लगता था, इसलिए इस बार वो कमी पूरा करना चाहता था। टीम को मैच जिताकर काफी अच्छा लग रहा है। आपको बता दें कि भारत ने कोलकाता के इडेन गार्डेन मैदान में खेले गए पहले टी20 मुकाबले में वेस्टइंडीज को छह विकेटों से हरा दिया। पहले खेलते हुए वेस्टइंडीज ने निर्धारित 20 ओवरों में 7 विकेट के नुकसान पर 157 रन बनाया। जवाब में भारतीय टीम ने इस लक्ष्य को 18.5 ओवर में ही 4 विकेट खोकर आसानी के साथ हासिल कर लिया। कप्तान रोहित शर्मा ने 19 गेंद पर 40 रनों की पारी खेली, वहीं सूर्यकुमार यादव ने 18 गेंद पर नाबाद 34 रन बनाए। इसके अलावा वेंकटेश अय्यर भी 13 गेंद पर 24 रन बनाकर नाबाद रहे। इस जबरदस्त जीत के बाद भारतीय टीम ने सीरीज में 1-0 की बढ़त बना ली है।

मंधाना की मौजूदगी से मजबूत होगी बल्लेबाजी पर करो या करो के मुकाबले में दबाव हरमनप्रीत पर

क्रीन्सटाउन। एक और श्रृंखला हारने की कगार पर पहुंची भारतीय महिला क्रिकेट टीम का बल्लेबाजी क्रम शुक्रवार को न्यूजीलैंड के खिलाफ तीसरे एकदिवसीय अंतरराष्ट्रीय में स्टार सलामी बल्लेबाज स्मृति मंधाना की वापसी से मजबूत होगा।

अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद की साल की सर्वश्रेष्ठ महिला खिलाड़ी मंधाना अनिवार्य पृथकवास से गुजरने के बाद दूसरे एकदिवसीय से पहले टीम के साथ जुड़ गई थी लेकिन मैच के लिए तैयार होने के लिए उन्हें कुछ दिन के समय की जरूरत थी।

पृथकवास पूरा करने के बाद रेनुका सिंह और मेघना सिंह की तेज गेंदबाजी जोड़ी भी चयन के लिए उपलब्ध होगी। गर्दन में जकड़न के कारण दूसरे मैच से बाहर रही अनुभवी तेज गेंदबाज झूलन गोस्वामी के शुक्रवार को खेलने की उम्मीद है।

मंधाना की वापसी से बल्लेबाजी क्रम मजबूत होगा लेकिन भारत ने दूसरा वनडे बल्लेबाजी नहीं बल्कि गेंदबाजी के कारण गंवाया था। गेंदबाजों ने काफी निराश किया था क्योंकि वे 271 रन के मजबूत लक्ष्य का बचाव करने में नाकाम रहीं थी।

झूलन की कमी काफी खली थी क्योंकि भारत ने तेज गेंदबाजों से सिर्फ 10 ओवर करवाए थे।